

Thought's Power

विचार शक्ति

लेखक

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया मुरैना

| | | |
|----------------|---|---|
| कृति | : | Thought's Power |
| आशीर्वाद | : | संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज |
| कृतिकार | : | अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज |
| प्रसंग | : | मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023 |
| संयोजक | : | बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना |
| संस्करण | : | प्रथम, 1100 प्रतियाँ |
| सहयोग राशि | : | 100/- (पुनः प्रकाशन हेतु) |
| प्रकाशक | : | विद्या सुव्रत संघ |
| प्राप्ति स्थान | : | 1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट, भोपाल |

पुण्यार्जक

गुरु मंत्र-1

विचार ही संसार है।
विचार ही
मुक्ति का द्वार है।

दुनियाँ क्या कहेगी ?
दुनियाँ हमारे बारे में क्या सोच रही होगी ?
दुनियाँ का इस पर क्या असर पड़ेगा ?
दुनियाँ को इससे क्या मिलेगा ?
दुनियाँ से हमें क्या मिलेगा ?
दुनियाँ से हमें क्या लेना-देना ?

इन बातों का, इन विचारों का विचार करने वाले कभी अपने जीवन में सफलता का अनुभव नहीं कर पाते अतः अगर सफलता का आनंद लेना चाहते हैं तो आइए कुछ विचार करें। इस विचार को हम थॉट्स पॉवर (Thought's Power-T. P.) कहेंगे। यही T. P. मस्तिष्क का ताला खोलता है, जो ऊर्जा प्रदान करता है। इसी ऊर्जा से सारी सफलताएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

विचार वाले,
दुनियाँ का विचार,
कब करते हैं।

इंसान का T. P. उस महासागर की तरह है जिसमें अनन्त सम्भावनाएँ होती हैं बशर्ते कि इन्हें खोजा जाए। यही T. P. लक्ष्य यात्रा को साधन या पाथेय का कार्य करता है अथवा यूँ कहें कि सफलता के वाहन को ईंधन का काम T. P. करता है।

आपके विचार ही आपकी पहचान हैं —

विचारों को देखकर हम विचारक (विचार करने वाला) का पता लगा लेते हैं जैसे आँखों से दृश्य देखना, कानों से वाणी सुनना, नाक से गंध सूँघना ऐसे ही विचारों से विचारक की जानकारी लेना।

निर्विचार अवस्था होना तो असंभव है परन्तु निर्विकार अवस्था प्राप्त की जा सकती है। विचारों का परिमार्जन करके हम अपने आप को अद्वितीय बना सकते हैं।

अशुभ, शुभ और शुद्ध विचारों के इन प्रकारों में हम अशुभ को छोड़कर शुभ परिणमन करते हुए शुद्ध का लक्ष्य बनाते हैं तो वह अवस्था सर्वोत्कृष्ट अवस्था होती है जिसे निर्विचार अवस्था कहना T. P. का दोहन माना जाएगा क्योंकि यह निर्विकार अवस्था है।

हर इंसान हमेशा कई विचार करता है।

क्यों करता है ?

विचार क्यों होते हैं ?

उनका फल क्या होगा ?

इनसे अपरिचित होता हुआ वह इंसान निरंतर विचार करता ही जाता है। इन्हीं विचारों से मन वाणी और शरीर का निर्माण होता है अर्थात् हर पदार्थ की रचना में कच्चा माल अगर कुछ है तो वह है हमारा विचार, हमारा थॉट्स पॉवर।

अगर उठने वाला प्रत्येक विचार विश्लेषित किया जाए तो विचारों की परम्परा जानी समझी जा सकती है क्योंकि अधिकतर विचार कुछ किए बिना ही चले जाते हैं अथवा एक दूसरे को काट रहे होते हैं लेकिन यही शक्ति जब अपने लक्ष्य से सकारात्मक रूप से मिलती है तो अपना स्वयं का T. P. सशक्त होता हो जाता है जो सफलता में सहायक होता है।

विचारों का समापन आत्मतत्त्व का समापन माना जाएगा लेकिन जैन सिद्धांत और अवतारवाद की परम्पराओं में आत्मतत्त्व का समापन कहीं भी स्वीकार नहीं किया गया है अतः विचारों का समापन सोचना गलत ही नहीं वरन् बहुत बड़ा अन्याय होगा अथवा यूँ कहें कि भावनात्मक अत्याचार होगा लेकिन यही थॉट्स पॉवर T. P. जब ध्यान का रूप ले लेता है तो तपस्या बन जाता है फिर हर समस्या का हल भी बन जाता है।

**“जितनी बड़ी समस्या
उतनी बड़ी तपस्या”**

हमारा जीवन या तो एक तपस्या है या तो एक समस्या और इन सब का एक ही समाधान है और वह है T. P.।

तो आइए T. P. से कार्य योजना बनाएँ क्योंकि—

“योजना बनाने की असफलता, असफल होने की योजना बनाना है।”

**“जो तैयारी में
फैल वो फैल होने
की तैयारी में”
“जो योजना में
फैल वे फैल होने
की योजना में”**

अतः विचारों की परम्परा में यह कहा जा सकता है कि निर्विचार होना अत्यन्त दुर्लभ ही नहीं असंभव है पर अपने विचारों को निर्विकार अवश्य ही बनाया जा सकता है।

हमारा यह प्रयास असंभव से इस कार्य को पंख देगा क्योंकि सरोवर बिना लहरों के तो रह सकता है परन्तु जल के बिना नहीं, हाँ इतना अवश्य है कि जल शान्त हो जाना संभव है। यही अवस्था हो, इस भावना से T. P. का अवतार हुआ।

**मार्ग की सफलता की बाधा,
मन में बना ली जो सीमित मर्यादा।
अतः तोड़ दो मन के सारे बेरियर,
तो उज्ज्वल होगा अपना कैरियर॥**

हमने जो अपने मन में अपनी संकुचित विचार धारा के चक्र / वृत्त बना रखे हैं उन्हीं के कारण हमारा आज तक कल्याण नहीं हो पाया लेकिन जब तक हम उन संकुचित मर्यादाओं का खण्डन नहीं करेंगे तब तक आगे बढ़ना नहीं होगा, आप अपने उन संकुचित विचारों से बाहर निकल सकें अतः T. P. का सृजन हुआ है।

आप अपने सीमित वृत्तों को / घेरों को लाँघ कर अनन्त / असीम बन सकें अतः T. P. का अवतार हुआ है।

आप संकुचित चिन्तन को अनन्त चिन्तन से जोड़ सकें अतः T. P. का लेखन प्रारम्भ हुआ है।

जैसे कूप मण्डूक, कुआँ में रहने वाला मेंढक बहुत ही संकुचित विचारधारा वाला होता है लेकिन जब उसका परिचय समुद्र की मछली से होता है तो वह भी महानता की दौड़ में शामिल हो जाता है अगर वह चाहे तो।

हुआ यूँ कि एक बार एक समुद्र कि मछली किसी रास्ते से कुआँ में आ गई, उसका परिचय वहाँ एक मेंढक से हुआ।

मेंढक ने पूछा—समुद्र कितना बड़ा होता है ?

मछली ने कहा—बहुत बड़ा होता है।

मेंढक ने अपने दोनों हाथ फैलाकर कहा—इतना बड़ा..!

मछली बोली—अरे! पगले, इससे बहुत बड़ा।

तब मेंढक ने दीवारों तरफ इशारा करते हुए कहा— इतना बड़ा..!

मछली बोली—इससे तो बहुत बड़ा होता है।

मेंढक बोला—इससे बड़ा तो हो ही नहीं सकता।

मछली ने काफी समझाया पर मेंढक नहीं समझा।

काश! मेंढक समझ जाता कि जिस कुआँ में वह रहता है उससे बाहर भी एक अलग दुनियाँ है लेकिन वह कुआँ से बाहर आने पर ही मिल सकती है। बस कूप मण्डूक जैसी मानसिकता से ऊपर उठने वालों को या बाहर आने वालों को यह T. P. मछली जैसा मदद करेगा।

जो व्यक्ति अपने जीवन की अटल गहराइयों को छूना चाहते हैं या अनन्त ऊँचाईयों को पाना चाहते हैं उनको सबसे पहले अपनी विचारधारा विस्तृत करनी होगी। जो जैसा चाहते हैं उनको यह T. P. मदद करेगा।



गुरु मंत्र-2

सब सारों का सार विचार

आओ! रखें कुछ नए कदम
चलो! लिखें कुछ नए कथन
कथन जो हों साकार
परिवर्तित यों करें विचार

इस विदित विश्व में ब्रह्माण्ड में या
लोकालोक में तत्त्वों में, द्रव्यों में, वस्तुओं
में अगर कोई महत्वपूर्ण वस्तु है तो वह है
आत्मा और चेतना।

अक्षय अनन्त अविनाशी गुणी सुखी
आत्मा।

इसी आत्मा की खोज / प्राप्ति को
कई दार्शनिकों ने सत्य की खोज (शून्य की
खोज, ब्रह्म की खोज, स्वरूप की प्राप्ति)
की। जिसकी प्राप्ति को अनन्त संत, महंत,
मुनि, साधु और त्यागी तपस्या कर चुके हैं
कर रहे हैं और करते रहेंगे।

विज्ञान को जिसका रहस्य आज तक
रहस्य ही है।

उस आत्मा का स्वरूप क्या है ?
 किसको होती है ?
 कैसी होती है ?
 कहाँ पाई जाती है ? आदि आदि ।

आत्मा क्या है ?

आत्मा और कुछ नहीं, अच्छे बुरे विचारों का पिण्ड ही है
 अर्थात् थॉट्स पॉवर (T. P.) ही

आत्मा है-परमात्मा है,
 संसार है-मोक्ष है,
 सुख है-दुःख है,
 ज्ञान है-विज्ञान है,
 धर्म है- कर्म है,
 पुण्य है-पाप है ,

वरदान है-अभिशाप है और यहाँ तक कि जो आज आप चाहें तो थॉट्स
 पॉवर (T. P.) से प्रकृति का नियंत्रण भी कर सकते हैं ।

प्रकृति का नियंत्रण ही आत्म नियंत्रण है जो सर्वोपरि धर्म है। कुल
 मिलाकर थॉट्स पॉवर (T. P.) ही सब सारों का सार है।

तो क्यों न विचार को ही समझा जाए, बदला जाए और बुरी विचारधारा
 से अच्छी विचारधारा बनाकर, एक नया संसार वसाया जाए।

एक नया इतिहास रचा जाए या

एक नयी क्रांति की जाए, लाई जाए जो विश्वशान्ति की स्थापना करे
 और प्रेम वात्सल्य बढ़ाए।

थॉट्स पॉवर (T. P.) से विश्व-शान्ति की जा सकती है और जब विश्व-
 शान्ति होगी तो हम भी सुखी-सम्पन्न होंगे।

जब विचारों से सब कुछ किया जा सकता है तो थॉट्स पॉवर (T. P.)
 ही कुंजी है बाँकी सब ताले हैं।

ताले पर हथौड़ा चलाने से अच्छा है कि हम थॉट्स पॉवर (T. P.) की
 कुंजी से सफलता के ताले खोलें।

इतना विचार विमर्श करने के उपरांत अंत में यह निर्णय किया जा सकता है कि थॉट्स पॉवर (T. P.) ही सर्वश्रेष्ठ सफलता का साधन है।

तो आइए, थॉट्स पॉवर (T. P.) को समझने के लिए एक जुनून, जोश, जज्वा पैदा करें, ताकि हम और आप थॉट्स पॉवर (T. P.) से भिन्न न रहें शरीर शक्ति से भिन्न-भिन्न भले ही बने रहें।

सार को सार समझिए और पाने का प्रयास कीजिए।

सार को समझने का विचार नहीं करोगे तो जिंदगी भर वेचारे बने रहोगे और समझ लिया तो सबके प्यारे बन जाओगे।

सर्व संचालक थॉट्स पॉवर (T. P.) —

भावना या तर्क मस्तिष्क में जन्म लेते हैं पर सारे शरीर के अवयवों का संचालन करते हैं।

प्यार और नफरत ये दोनों T. P. ही हैं पर इनसे रक्त संचार (B. P.) प्रभावित होता है।

प्रेम से बड़ा कोई डाक्टर नहीं होता,
प्रेम से बड़ी कोई ताकत नहीं होती।
और अगर स्तर गिरा दिया जाए तो,
प्रेम से बड़ी कोई लत नहीं होती॥

हमने दिल को सब कुछ माना जरूर है पर दिल तो मात्र पंप है, पंपिंग का कार्य मस्तिष्क करता है और मस्तिष्क का संचालन T. P. करता है। अतः शरीर विज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा T. P. है जो सर्वस्व संचालन करता है। लेकिन T. P. जब भी कार्य करेगा तो शरीर के माध्यम से ही करेगा।

चाहे प्रेम-भाव का अमृत हो या नफरत का जहर हो, उसका माध्यम शरीर ही होता है और शरीर का संचालन T. P. से होता है।

शरीर का पालन पोषण जितना अन्न-पानी से होता है उससे कहीं ज्यादा T. P. से होता है।

देश का, समाज का, परिवार का और माता-पिता का T. P. हमारे शरीर के निर्माण में सहयोगी होता है अर्थात् जितना दुष्प्रभाव विषैला या विकृत

भोजन नहीं डालता उतना दुष्प्रभाव T. P. का पड़ता है अतः अपना T. P. अच्छा बनाएँ। मतलब कुछ भी बदलने कि जरूरत नहीं है मात्र अपना T. P. बदलने का प्रयास कीजिएगा।

अगर आत्मा में
अच्छे T. P. का वास है
श्रद्धा का विश्वास है
प्रभु के प्रति आस है
तो जीवन का विकास है
अन्यथा

सत्यानाश है और
मानव चलती फिरती लाश है

क्योंकि इंसान को अपने T. P. के अनुरूप ही मिलता है अर्थात् हमारे पास जो कुछ भी है वह अपने T. P. का परिणाम है तो फिर अपने T. P. को यूँ बनाना चाहिए कि—

हमारा T. P. ओस की बून्द नहीं
जो सूर्य से सूख जाए
बल्कि चट्टान होना चाहिए
जो कर्म-पर्वत को चूर कर जाए।

अगर हमारा T. P. ही हमारी कमजोरी है तो हमारा T. P. ही हमारी ताकत भी है क्योंकि हमारा T. P. ही वास्तविकता है। अगर यही वास्तविकता व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट करती है तो यही वास्तविकता बाह्य व्यवस्थाएँ व्यवस्थित भी करती हैं क्योंकि किसी शोध के अनुसार—

इंसान बिना भोजन के चालीस दिन तक जिन्दा रह सकता है, बिना पानी पिए बीस दिन तक जिन्दा रह सकता है और बिना श्वास लिए तीन मिनट तक जिन्दा रह सकता है। किन्तु बिना T. P. के एक पल भी जिन्दा तो क्या रह ही नहीं सकते। यही सिद्धान्त सारे आंतरिक प्रतिशोध मिटाकर केवलबोध (केवलज्ञान) तक प्रकटा देता है अर्थात् T. P. ही महानता की नींव है जो सदैव हमारा मार्गदर्शक बनकर सदा साथ रहता है।

T. P. हमारा**सदा का साथी प्यारा****T. P. मात्र आत्मा की सम्पत्ति है।**

जितना बड़ा प्लॉट होता है उतना बड़ा बंगला नहीं होता,
 जितना बड़ा बंगला होता है उतना बड़ा दरवाजा नहीं होता,
 जितना बड़ा दरवाजा होता है उतना बड़ा ताला नहीं होता,
 जितना बड़ा ताला होता है उतनी बड़ी चाबी नहीं होती...

परन्तु चाबी पर पूरे बंगले का अधिकार होता है, इसी तरह से मानव के जीवन में बन्धन और मुक्ति का आधार मन की विचार रूपी चाबी पर ही निर्भर करता है अर्थात् T. P. ताले लगा भी सकता है तो खोल भी सकता है।

**बड़ा धनवान है,
 अच्छे विचार वाला।
 हर ताले की चाबी,
 हर चाबी का ताला॥**

मानव तू सब कुछ कर पर किसी को परेशान मत कर,
 जो बात समझ न आए उस बात में मत पड़।

पैसे के अभाव में जगत एक प्रतिशत दुःखी है किन्तु समझ के अभाव में ९९ प्रतिशत दुःखी है। इस हेतु T. P. की रचना की है कि आप दुःख से मुक्त हो सकें।

T. P. विचारों का कारखाना

हमारा T. P. विचारों का कारखाना है और वो भी निरन्तर चलने वाला। इस इंडस्ट्री में दो इंचार्ज हैं – अच्छा और बुरा। ये दोनों इंचार्ज आपके अनुसार कार्य करते हैं। इनके अन्य नाम जय-पराजय (जीत / हार) भी मान सकते हैं। एक शोध के अनुसार मनुष्य प्रतिदिन अच्छे और बुरे सब मिलाकर लगभग ६० हजार विचार करता है जिनमें से कुछ ही हमें याद रहते हैं।

ये पुस्तक आपको एक नई उमंग/तरंग देगी जो हार से निकालेगी जरूर और हार (माला) से सजाएगी।

T. P. विचारों की प्रयोगशाला (Laboratory)

हमारा T. P. विचारों की एक ऐसी प्रयोगशाला है जो नई-नई खोज करती है इसके वैज्ञानिक आप हैं। इसमें आप जहर बनाकर समाप्त हो सकते हैं या अमृत बनाकर अमर भी हो सकते हैं अथवा विस्फोटक सामग्री भी बनाकर विश्व में अशान्ति फैला सकते हैं या शान्तिदूत बनकर प्रेम-वात्सल्य से विश्व में अमन-चैन बिखेर सकते हैं।

T. P. विचारों का बैंक

हमारा T. P. विचारों का एक बैंक है जहाँ ऋण भी लिया जाता है एवं जमा भी किया जाता है अतः सफल व्यक्ति मात्र जमा करने का काम करते हैं। अच्छाई को जमा कर बुराई को खाते/Account से अलग कर दें या Laps हो जाने दें।

जैसे कि ज्यादा लोन (Loan) लेने पर लोग आत्महत्या कर लेते हैं वैसे ही बुरे विचारों का Loan जब ज्यादा होता है तो धर्म/अध्यात्म-हत्या हो जाती है जो हमें दुखी परेशान करने में निमित्त बनती है।

T. P. विचारों की कार्यशाला (Workshop)

कार्य करना भी विचारों का T. P. है इसके अभाव में कार्य नहीं किया जा सकता। विचारों के अभाव में कोई भी कार्य करना असंभव है। विचारों को मूर्त रूप देना इसी को कार्यक्षमता कहते हैं।

कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए दूसरों के विचार, हमारे विचार से मिलाकर उनका हम भी फायदा उठा सकते हैं। अतः T. P. के लेखन का विचार आया है।

दूसरों, दूसरे के विचारों से हम लाभ कैसे उठाएँ? हमारे मन या आत्मा में प्रतिदिन / प्रतिपल जो भी विचार आते हैं वे शीघ्र ही विस्मृत हो जाते हैं, अगर हम उन्हें लिख लेते हैं तो सुरक्षित रह सकते हैं जिनका लाभ हमें मिल सकता है।

विचारों का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति कभी भी परेशान या दरिद्र नहीं हो सकता लेकिन इस विश्व में अपने विचारों का पूर्णतः उपयोग करने वाले व्यक्ति बड़ी दुर्लभता से देखने में आते हैं।

आप क्या करें ?

हम यदि अपने T. P. को महत्वपूर्ण बनाना चाहते हैं तो अपने आप को महत्वपूर्ण समझें। तभी आपका T. P. प्रभावशाली होगा।

आप सोचें कि आप सुपीरियर हैं। बड़े लोग बड़े विचारों पर आश्चर्य नहीं करते। वे अपने विचारों को महत्व देते हैं एवं जितना विचार करते हैं उससे कहीं ज्यादा और अच्छे विचारों से भी अच्छा पाते हैं क्योंकि बड़े से बड़ा विचार महत्व के अभाव में कोई मूल्य नहीं रखता और छोटा सा विचार भी महत्व पाकर महत्वपूर्ण हो जाता है।

आपका माहौल (वातावरण) आपके विचारों का भोजन है।

आपके शब्द (वाणी) आपके विचारों के लिए कच्चा माल हैं।

आपकी पोशाक (पहनावा) आपके विचारों के लिए हवा पानी है।

आपका उत्साह (प्रसन्नता) आपके विचारों की शक्ति है।

आपके कार्य (क्रिया) विचारों की नींव है।

आज के युग में एक तरफ जहाँ संकीर्ण विचारधारा का साम्राज्य विस्तारित है वहीं अन्य तरफ T. P. विचारधारा को उज्ज्वल बनाने में सहायक होगा।

सोच और विचार से घट रहा है आदमी।
 फैलने के नाम पर सिमट रहा है आदमी॥
 आपसी प्रेम को भूल सा गया है आज,
 मन्दिरों में मस्जिदों में बट रहा है आदमी।
 शोथी शान-नाम में व्यर्थ खींच-तान में,
 सूखी धरती जैसा देखो फट रहा है आदमी।
 मौत के ही ख्याल से जिन्दगी को भूल के,
 मन्दिरों में मरघटों को रट रहा है आदमी।
 इस कदर गुरुर है आदमी का देख लो,
 खुदा को तुच्छ मान दूर हट रहा है आदमी।
 झूठ या फरेब ही आज के उसूल हैं,
 'सुव्रत' का ले वचन पलट रहा है आदमी।

शारीरिक जहर से कहीं ज्यादा खतरनाक होता है विचारों का जहर। इस जहर के लिए T. P. अमृत का कार्य करेगा। यहाँ पर कुछ प्रसंगों के माध्यम से अपने T. P. को परिवर्तित कर जहर से अमृत की ओर की यात्रा कराई जा सकती है।

१. एक व्यक्ति पर एक प्रयोग किया गया जिसमें उस व्यक्ति को बिस्तर पर लिटाकर सूई के माध्यम से यह अहसास कराया गया कि आपके शरीर से बूँद-बूँद करके खून बहाया जा रहा है। यह बहाने की प्रक्रिया की ध्वनि भी उसे सुनाई दे रही है। देखते ही देखते वह कमजोर दिखने लगा और अंत में वह मृत्यु को प्राप्त भी हो गया लेकिन टपकने वाले स्थान पर जाकर देखा तो वहाँ किसी बर्तन से पानी टपकाया जा रहा है।

आखिर उसकी मृत्यु क्यों हुई क्योंकि उसने अपने T. P. में यह स्थापित कर रखा था कि मेरा रक्तस्राव चल रहा है जिससे थोड़ी ही देर में मेरी मृत्यु हो जाएगी और हुआ भी ऐसा ही।

२. अमेरिका में किसी अपराध में एक व्यक्ति को फाँसी की सजा दी गई किन्तु फाँसी के पूर्व उस पर एक प्रयोग करने के लिए उससे कहा गया कि आपको मरना तो है ही अतः फाँसी के स्थान पर आपको एक जहरीले साँप से डसवाकर मारा जाएगा। इस बात पर उसकी स्वीकृति मिली तो उसके सामने एक सर्प रखा गया और आँखों पर पट्टी बाँध दी गई। फिर उसे एक पिन चुभोई गई जिससे उसको लगा कि यह सर्प ने काटा है और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

आखिर उसकी मृत्यु क्यों हुई क्योंकि उसने अपने T. P. में यह स्थापित कर रखा था कि मुझे सर्प के द्वारा मृत्यु दी जाएगी और पिन चुभते ही वह अपने ही T. P. के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो गया।

३. एक माँ अपने नवजात शिशु को स्तनपान कराने वाली ही थी कि किसी दुराचारी व्यक्ति ने उसके साथ व्यभिचार की दृष्टि से प्रताड़ित किया इस बीच में दोनों में काफी हाथा-पाई भी हुई। इतनी देर तक बच्चा भूख से बिलखता रहा। अंत में माँ ने उस व्यक्ति को भगाकर अपने शिशु को जैसे ही स्तनपान कराया वैसे ही शिशु हरा-नीला पड़ गया। वह तुरन्त डॉक्टर के पास ले भागी। डॉक्टर ने उसे बचा तो लिया किन्तु माँ से पूछा इसे अचानक यह

क्या हो गया था जिससे वह मरणासन्न हो गया था। तब डॉक्टर ने कहा कि शायद इसे कोई जहरीली वस्तु दी गई होगी जिससे इसकी ऐसा हालत हो गई। माँ ने इसका प्रतिकार करते हुए कहा कि मैंने स्तनपान के अतिरिक्त इसे कुछ भी नहीं दिया। डॉक्टर ने आश्चर्यचकित होकर पूछा कि तो स्तनपान कराने के पूर्व क्या कोई घटना घटी थी? तब माँ ने विस्तारपूर्वक सारी घटना सुना दी। जिससे डॉक्टर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि स्तनपान के पूर्व इस घटना ने आपके T. P. को जहरीला बना दिया था जिससे अपना अमृततुल्य दूध भी जहर समान हो गया।

आखिर ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि पूर्व में हुई घटना के कारण T. P. जहरीला हुआ जिससे शरीर के भीतर जहर के स्रोत उत्पन्न हुए जिन्होंने दूध को भी जहरीला बना दिया।

वैसे भी अगर देखा जाए तो किसी ऊँचाई से एक वयस्क व्यक्ति नीचे गिरे और गिरने के पहले उसे जमीन से कुछ ऊँचाई पर पकड़ लिया जाए तो भी वह प्रायः मृत ही मिलेगा किन्तु उसी ऊँचाई से अगर एक अबोध बालक गिरे और उसे भी गिरने के पूर्व पकड़ लिया जाए तो वह प्रायः जीवित ही मिलेगा।

आखिर इन दोनों में इतना अन्तर क्यों? स्पष्ट है कि दोनों के T. P. में अन्तर है। वयस्क व्यक्ति का T. P. कहता है कि इतनी ऊँचाई से हम गिरेंगे तो हम मर ही जाएंगे यही T. P. उसे गिरने के पूर्व ही मृत कर देता है और अबोध बालक का T. P. कहता है कि मैं तो माँ के द्वारा उछाला गया हूँ और वापिस माँ की गोद में ही पहुँचूँगा। यही T. P. उसे जीवित रखता है।

घटना है सागर की। एक दादाजी अपने नाती को जो कि अभी चलना भी न सीखा था एक टेबिल पर बिठा देते हैं और किसी काम से थोड़ी दूर क्या होते हैं कि नाती खिसक के खिड़की से नीचे सड़क पर औंधे मुँह गिर जाता है। दादाजी जैसे ही टेबिल पर देखते हैं और नाती नजर नहीं आता तो खिड़की से झाँककर देखते हैं तो लगभग २०-२५ फीट नीचे नाती सकड़ पर बैठा है। दादाजी दौड़कर जब तक नीचे पहुँचते हैं तब तक बच्चे को गिरा हुआ देख आस-पास के लोग एकत्रित हो जाते हैं। इतने में दादाजी भी पहुँच जाते हैं और नाती को सकुशल देखकर विस्मित हैं।

आखिर इतनी ऊँचाई से गिरने पर भी बच्चे को कुछ क्यों नहीं हुआ ?
क्योंकि बच्चे का अपना खुद का T. P. उसको सकुशल रखने में सहायक बना ।

जो विचारों से ज्यादा वस्तुओं-व्यक्तियों पर ध्यान देते हैं वे अपना T.P. Less कर लेते हैं अतः T. P. को प्रभावशाली बनाने के लिए-

- १) माहौल बदलें ।
- २) नए विचारों वाले दोस्त चुनें ।
- ३) नए कार्य करें ।
- ४) सकारात्मक विचार रखें ।
- ५) हमेशा प्रसन्न रहें वरना आपके शत्रु प्रसन्न रहेंगे ।
- ६) सफल व्यक्तियों को आदर्श बनाएँ ।

इन बिन्दुओं पर विचार करने से आपका T. P. प्रभावशाली होकर आपकी मदद करेगा ।

आपका T. P. बहुत महत्वपूर्ण है ऐसा अहसास कराने को यह कलम चलाई है । आप अपना T. P. प्रभावी बनाएँ इसके लिए निम्न बिन्दुओं पर भी विचार कर सकते हैं-

- १) आप लोगों की तारीफ करें (प्रशंसा) क्योंकि प्रशंसा ही T. P. है ।
- २) लोगों का यथायोग्य नाम लेकर सम्बोधन करें एवं नाम याद रखें ।
- ३) दूसरे आपकी प्रशंसा करें यह आश ना रखें ।
- ४) बदले की भावना से कार्य न करें ।
- ५) सभी से मुस्कुराकर बात करें ।
- ६) सभी का यथायोग्य सम्मान करें ।

यह मत देखिए कि संसार में आप क्या हैं ?

यह देखिए कि आप संसार में क्या बन सकते हैं ?

जितने भी संसार में Top of Most हैं अर्थात् जो

बिन्दु से सिन्धु बने हैं,

अणु से विराट बने हैं,

शून्य से अनन्त बने हैं,

बेलदार से बिल्डर बने हैं,

डिस बॉशर से डोसा किंग बने हैं,
 फर्श से अर्श पर पहुँचे हैं,
 और
 भक्त से भगवान बने हैं।

उन सब लोगों ने हम क्या हैं इस पर विचार कभी भी नहीं किया बल्कि इस बात पर विचार अवश्य किया कि हमें जो मिला है उससे हम क्या-क्या कर सकते हैं। इसी T. P. से उन्होंने

बिन्दु से सिन्धु की यात्रा की,
 अणु से विराट की यात्रा की,
 शून्य से अनन्त की यात्रा की,
 बेलदार से बिल्डर की यात्रा की,
 डिशवॉशर से डोसाकिंग तक की यात्रा की,
 फर्श से अर्श तक की यात्रा की
 और

भक्त से भगवंत की यात्रा की।

जैसे एक कृषक (किसान) खेत में बीज बोने के पहले ही लहलहाती हुई फसल का दर्शन कर लेता है।

जैसे एक शिल्पकार/मूर्तिकार अनगढ़ पत्थर में भी परमात्मा की मूर्ति का दर्शन कर लेता है।

जैसे एक माँ गर्भस्थ शिशु को जन्म से पूर्व ही अपनी गोद में खेलता हुआ देख लेती है।

जैसे एक प्रतिभाशाली छात्र परिणाम के पूर्व ही अपना परिणाम अपने हाथों में देख लेता है।

जैसे एक वास्तुकार जमीन खरीदते ही वास्तु को मूर्त रूप में बनने के पहले ही देख लेता है।

जब अपने T. P. में सम्भावना का सत्यता में दर्शन होता है तो असंभव सी चीज भी संभव हो जाती है क्योंकि कार्य उसी समय तक असंभव प्रतीत होता है जब तक कि उसे प्रारम्भ न किया जाए। T. P. से कार्य को प्रारम्भ किया जाता है। इसी को कहा जाता है कि—

**आशा से टिका
आसमान सो एक
प्रयास करो। (हाइकु)**

अतः प्रयास करें कि वस्तु में और विचारों में श्रेष्ठ सम्भावना का T. P. तैयार हो। बस इसलिए T. P. का अवतरण हुआ है।

साधन सम्पन्न सफल नहीं होते बल्कि इसके साथ विचारसम्पन्न व्यक्ति सफल होते हैं।

बड़ी सफलता उनके दरवाजे खटखटाती है जो स्वयं अपना T. P. बहुत ऊँचा रखते हैं। अपनी कार्यक्षमता भी T. P. से फिर सुधारी जाती है जो जितना अच्छा T. P. रखेगा, वह उतनी अच्छी ही सफलता पाएगा क्योंकि—

- T. P. के घर्षण से सफलता का चंदन महकता है।
- T. P. के मंथन से सफलता का नवनीत झलकता है।
- T. P. के संगीत से सफलता का गीत निकलता है।
- T. P. की अग्नि से सफलता का सोना चमकता है।
- T. P. की खदान से सफलता का कोहिनूर दमकता है।

क्योंकि काम करने की क्षमता और कुछ नहीं है बल्कि आपका T. P. मानसिक स्थिति ही है तथा हम परिस्थिति को तो बदल नहीं सकते किन्तु मानसिक स्थिति को बदल सकते हैं।

**परिस्थिति तो
बदले नहीं**

मनः स्थिति बदलो। (हाइकु)

जितना आप अपने T. P. में ठान लेते हैं उतना काम आप आसानी से कर लेते हैं और विशेषता तो उस समय है कि जितना आप सोच सकते हैं उससे भी ज्यादा किया जाए।

अन्य लोगों के T. P. से हम अपना T. P. भी प्रभावित कर सकते हैं अतः दूसरों का T. P. हमारे T. P. के लिए उत्तम आहार सिद्ध हो सकता है। यह आहार हमारे T. P. के लिए बड़ा लाभदायक होता है।

जब कोई भी व्यक्ति श्रेष्ठ कार्य करने की सोचता है तो सर्वप्रथम उसके अंदर उसका विचार ही तो आता है अगर इस विचार को फैलाया ना जाए,

उनका अवलोकन न किया जाए और उन्हें विकसित न किया जाए तो वही T. P. कोई भी काम का न रहेगा लेकिन अगर यही T. P. रचनात्मक हो जाए तो सबसे बड़ी सफलता होती है।

**सिर्फ विचार ही नहीं करें
बल्कि कुछ आचार भी करें !**

इस लेख को पढ़कर हो सकता है कि संभवतः मानस बना लिया हो कि कुछ करने की जरूरत ही नहीं बल्कि मात्र विचार करने से सारा कार्य हो जाता है, तो ऐसा कतई नहीं सोचना क्योंकि मात्र विचार करने से सफलता नहीं मिलती बल्कि कुछ करना भी होता है अतः पुस्तक/लेख पढ़कर निठल्ले न बनें बल्कि कर्मठ बनने का साहस जुटाएँ वो भी अच्छी T. P. के साथ। क्यों कि दुनियाँ में कर्मठ तो ढेर सारे हैं पर उनके पास अच्छा T. P. नहीं है अतः वे सफलता की दौड़ से बाहर हैं।

अगर मात्र कर्मठ होने से सफलता प्राप्त होती तो एक गधा, ऊँट, श्रमिक या कुत्ता एक अधिकारी से ज्यादा सफल होते बल्कि ऐसा देखने में बिल्कुल भी नहीं आता, तो फिर जो मात्र सपने देखने वाले होंगे वे सफल होंगे पर ऐसा भी नहीं है तो आखिर ऐसा क्या है जो सफलता का सूत्र है।

संतुलित उत्कृष्ट थॉट्स पॉवर।

संतुलित उत्कृष्ट कार्य शक्ति।

सिर्फ विचार करने वाले निठल्ले हैं।

परन्तु अच्छे T. P. के साथ

आचरण करने वालों की वल्ले-वल्ले है।

**“सिर्फ तन को ही न निखारें,
बल्कि मन को भी निखारें”**

क्योंकि आचरण के अभाव में उत्कृष्ट T. P. ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि एक सामान्य सा T. P. भी अगर आचरण के द्वारा विकसित किया जाए तो वह अच्छे से महान (Good to Great) की यात्रा कर सकता है अर्थात् उसके अच्छे परिणाम निकलते हैं लेकिन बड़े से बड़ा T. P. भी आचरण के अभाव में वहीं के वहीं मर जाता है।

कोई भी विषय सोच लेने भर से मूर्तरूप में नहीं ढलता। अणु से विराट तक, बिन्दु से सिन्धु तक, शून्य से अनन्त तक, भक्तों से भगवंत तक आदि एक ही T. P. था जिस पर आचरण ही तो किया गया और भी मूर्तरूप में ढल गया।

अगर सफल और असफल व्यक्तियों का अध्ययन किया जाए तो आप पाएंगे कि सफल वही है जिन्होंने उत्कृष्ट T. P. के साथ उत्कृष्ट आचरण भी किया है।

T. P. ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सफलता उन्हीं के द्वार पर दस्तक देती जिनके पास उत्कृष्ट T. P. होता है लेकिन जब T. P. का संतुलन आचरण से बनता है तभी T. P. मूल्यवान होता है।

T. P. मानसिक मशीन से चलता है।

जिससे सफलता का उत्पाद निकलता है॥

हर दिमाग में T. P. की डेड-लाइन (Dead Line) होती है परन्तु अगर वही Dead Line Mood Line से जुड़ जाए तो यही Dead Line Head Line बन जाएगी, Head Line बन जाएगी अर्थात् अपने T. P. को सही दिशा देना यह आपका अपना कार्य है। अगर आपका T. P. सही Gear में डल जाए तो ऐसी कौन सी मंजिल है जिसे हासिल न किया जा सके।

T. P. की दिशा कैसे बदलें ?

- १) अपना काम स्वयं करें।
- २) कर्मठ बनें कमठ (कार्य विरोधी) न बनें।
- ३) आज का कल पर न टालें।
- ४) कार्य के भार से न घबराएँ।
- ५) कार्य का नेतृत्व स्वयं करें।
- ६) कार्य पूर्ण करके ही विश्राम लें।

जरूरत है T. P. को Gear में डालने की।

तो आइए डालते हैं अपने T. P. को सही Gear में और चलाते हैं अपने T. P. की गाड़ी को सफलता की राह पर।

□ □ □

गुरु मंत्र-3

क्या है ?
थाट्स पावर !
सर्वोच्च वस्तु है
थाट्स पावर ।

जब हम यह जान चुके हैं कि आत्मा ही सारभूत वस्तु है जो अनन्त शक्तियों का, अनन्तगुणों का और अनन्तसुखों का आदि आदि अनन्त धर्मों का पिंड है। तो आत्मा में विचार करने की शक्ति स्वतः सिद्ध हुई! यही शक्ति जब बुरा रूप लेती है तो असफलताएँ देती हैं और अच्छे रूप में सफलताएँ अर्थात् आत्मा अच्छे-बुरे दोनों तरह के विचार कर सकती है क्योंकि आत्मा के पास अनन्त शक्तियों में एक परिणाम शक्ति है जो अच्छे-बुरे, विरुद्ध-अविरुद्ध परिणामों को परिणमित करती रहती है।

“द्रव्यस्वभावभूत ध्रौव्य-व्योत्पादा लिंगित
सदृश-विसदृशरूपैकास्तित्व- मात्रमयी
परिणामशक्तिः ।”

इन्हीं विचारों को चिंतकों ने तरह-तरह

से परिभाषित किया है। अपनी-अपनी मान्यता से विचार फलते-फूलते हैं। इन्हीं विचारों को यहाँ पर हमें समझना है कि आखिर क्या है विचार शक्ति ?

“बुद्धि व्वसाओ वि य, अज्झवसाण मई य विण्णाणं।

एकट्टमेव सव्वं, चित्तं भावो य परिणामो। स.सा.-२७१॥”

अर्थ—बुद्धि, व्यवसाय, अध्यवसान, मति, विज्ञान, चित्त, भाव और परिणाम ये सब एकार्थ ही हैं.....इनमें अर्थ भेद नहीं है।

यह जिनशासन के प्रमुख ग्रंथराज का गाथा सूत्र है। जिसमें विचारशक्ति के पर्यायवाची नामों का आचार्य भगवन ने उल्लेख किया है। इसी थॉट्स पॉवर को हम T. P. से जानेंगे। जिसे लोक व्यवहार में तरह-तरह के नामों से पुकारा जाता है। यह T. P. ब्रह्माण्ड के हर जीव के पास होता है, चाहे वह भक्त हो या भगवान, रंक हो या राजा, सुन्दर हो या कुरूप, स्त्री हो या पुरुष इत्यादि-इत्यादि कोई भी हो, कैसा भी हो, मुक्त या संसारी उसके पास कुछ हो या ना हो पर T. P. तो जरूर ही होगा। जिसे हम अपने जीवन में कुछ इस तरह से प्रयोग करते हैं, जैसे—

1) विचार करना—

कई बार हमारे जीवन में जब प्रतिकूलताओं का समय आता है तो हमें हमारी अंतर-आत्मा या हमारे निर्देशक यही सलाह देते हैं कि उस विषय पर विचार करो हल जरूर मिलेगा।

आज नहीं तो कल होगा

हर मुश्किल का हल होगा।

विश्वास है अपने श्रम पर तो

मरुस्थल में भी जल होगा॥

इसे ही हम T. P. (Thought's Power) कहते हैं।

2) विचार विमर्श करना—

विचारों का विनिमय, परीक्षण, चर्चा, तर्कणा। यह सब विचार-विमर्श कहलाते हैं। इन शब्दों की पृथक-पृथक व्याख्या से हमें प्रायः ‘पिष्ट-पीषण’ न्याय के अनुसार पुनरावृत्ति मिलेगी इसलिए हम मात्र उन शब्दों को जो Thought's Power के पर्यायवाची हैं और लोक व्यवहार में प्रचलित हैं उन्हें बिना व्याख्या के नाम मात्र से ही समझेंगे।

जैसे-

| | |
|-------------------------|-------------------------|
| सोच-विचार | भाव-भंगिमा |
| विचारधारा | भावना-प्रभावना-सद्भावना |
| विचार-मुद्रा | भाव-भासना |
| विचार-निमग्न | हाव-भाव |
| विचारों में खोना | चिन्तन-मंथन |
| पुनर्विचार | चिन्तन मुद्रा |
| महाविचार | मान्यता |
| आचार-विचार | धारणा |
| विचार समूह | दृष्टिकोण |
| विचार-शक्ति | मनोविज्ञान |
| सोच बदलो संसार बदलेगा | नजर-नजरिया |
| सोचनीय-विचारनीय चिंतनीय | मनोवृत्ति |
| बड़ी सोच का बड़ा जादू | श्रद्धा-आस्था |
| बुरी सोच का बुरा जादू | विश्वास |
| विचार उज्ज्वल-कार्य सफल | मनोबल |
| सादा जीवन उच्च विचार | विचार-क्रांति |
| विचारों की पहल | चिन्तनधारा |
| विचारों के महल | विचारों की प्रस्तुति |
| संक्रमित-विचार | विचारों का संक्रमण |
| शुद्धविचार | यादृशी भावना भस्य |
| भावना भवनाशिनी | भावना भववर्धिनी |
| अध्यात्मिक विचार | भाव सहित वंदे जो कोई |
| नवीन विचार | बौद्धिक आयाम |
| प्राचीन विचार | अन्तःकरण |
| विचार सिद्धांत | अंतस्-वर्गणा |
| चित्तप्रासाद | कल्पनाशक्ति |
| भेद-भाव | इच्छा-शक्ति |

| | |
|---------------|--|
| तर्कणा | भाव-विज्ञान |
| तर्कशक्ति | भौतिक विचार |
| अंतर-बोध | मनोदशा |
| अंदर की आवाज | विचार बैंक |
| इरादा | अवधारणा |
| मनोभावना | विचारों की बारात |
| कार्य योजना | अंतर्दृष्टि |
| दुख की बदरिया | सुख की नजरिया |
| सकारात्मक सोच | Positive Thinking |
| नकारात्मक सोच | Negative Thinking |
| निर्मल विचार | Simple living high Thinking |
| मत-मतान्तर | शून्य आधारित सोच (Zero Based Thinking) |
| मतदान | नील गगन सोच (Blue Sky Thinking) |

नजर तेरी बदली तो नजारे बदल गए।
कस्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल गए॥

भाव सहित बंदे जो कोई।
ताहि नरक-पशु गति नहि होई॥

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

आदि-आदि अनेक शब्दों से, वाक्यांशों से हम यही निर्णय कर सकते हैं कि विश्व में अगर सर्वोच्च कोई है तो वह है Thought's Power थॉट्स पॉवर।

□ विचारशक्ति वह शक्ति है जो एक समय में सारे ब्रह्माण्ड को प्रभावित कर सकती है।

□ विचार का दीपक बुझने से आचार अंधा हो जाता है।

□ जनता की भीड़ से हर कोई बचना चाहता है और विचारों की भीड़ से कितने पागल हो चुके हैं गिनती नहीं।

□ Thought's Power थर्मामीटर है आत्मा परमात्मा का।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आज हम जो कुछ भी हैं वह पिछली थॉट्स पॉवर का फल हैं और आज का थॉट्स पॉवर ही आगामी जीवन का पूर्व दर्शन होगा।

विश्व के हर एक दर्शन में दार्शनिकों ने अपनी लेखनियाँ चलाई हैं पर विचार-दर्शन अछूता कैसे रह गया ? क्योंकि विचार-दर्शन तो आधार स्तंभ है सभी दर्शनों का।

जब हमारे मन में यह विचार आया तो Thought's Power ने जन्म लिया। यह सिर्फ हमारा ही विचार नहीं है बल्कि समस्त दर्शनों का सार है जो तरह-तरह से दिया गया है।

Thought's Power न केवल दार्शनिकों का Power है बल्कि वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, लेखकों, व्यवसायों और अध्यात्मिकों आदि-आदि सभी का T. P. है। आखिर हो भी क्यों न! क्योंकि T. P. प्रकृति के नियम का Power है। अगर प्रकृति में पाँच तत्त्व हैं तो T. P. कहता है कि विचार पाँच तत्त्व रूप वस्तु बन जाते हैं।

वस्तुतः सारे सिद्धांत विचार सिद्धांत के इर्द-गिर्द ही घूमते हैं। ये विचार हमारी आत्मा के हैं या अन्य के हैं। इस बात पर विचारक एकमत नहीं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि हमारे भीतर कई मन हैं।

□ एक चेतन मन

□ दूसरा अचेतन मन

□ तीसरा अवचेतन मन

और

□ चौथा अतिचेतन मन।

इन सारे मनो को सिर्फ दो में विभाजित करना हो तो ये होंगे-

□ चेतन मन

और

□ अंतर्मन

लेकिन इन सिद्धांतों में जैन सिद्धांत का विचार मन का विषय न होकर, चेतन का या आत्मा का विषय है। अगर हम मन का विषय मानते हैं तो जिन प्राणियों के पास मन नहीं होगा, क्या उनके पास विचार नहीं होंगे ? परन्तु ऐसे तो प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता अर्थात् मन का विषय विचार मानना बहुत संकुचित विचारधारा है।

T. P. उन्हीं आत्मा के विचारों पर केंद्रित विचारधारा है, अतः विचारों की शक्ति ही आत्मा की शक्ति है और आत्मा की शक्ति ही थॉट्स पॉवर है।

अंततोगत्वा यह कहा जा सकता है कि T. P. ही ध्रुव रूप सत्ता है, शक्ति है, जो सुपर पॉवर जैसा सर्वस्व संचालन करता है। अपने मन की दुर्बलता के त्याग का लाभ है T. P.। अतः—

अपने मन की दुर्बलता का त्याग करें

क्लैब्यं मा स्मः गमः पार्थ नेतत्त्व य्युपपधते ।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परं तपः॥ गीता॥

अर्जुन ने जब युद्ध करने से मना कर दिया तो कृष्ण ने बहुत ही कड़े शब्दों में उसकी निंदा की।

उसे उलाहना देते हुए कहा कि इस नपुंसकता को छोड़ो और मन की दुर्बलता का त्याग करो।

कृष्ण कहते हैं कि इस तरह मैदान छोड़कर भागना उचित नहीं है।

हम सभी भी रोज ही अर्जुन की इसी मानसिकता के अनुचर बने रहते हैं और प्रतिदिन मैदान छोड़कर भागते ही रहते हैं किन्तु उस पर हम ध्यान नहीं देते किन्तु विशेषकर जब दूसरे मैदान छोड़कर भाग रहे होते हैं तो हमें तुरंत समझ में आ जाता है लेकिन जब दूसरे हमें हमारे कर्तव्य की याद दिलाते हैं तो बहुत ही बुरा लगता है लेकिन इससे भी बुरी परिस्थिति होती है जब बहुत परिश्रम से पूरी तैयारी के बाद कोई काम करने से इंकार कर दें जैसे साल भर पढ़ाई करने के बाद बच्चा ठीक परीक्षा के समय पर बीमारी का बहाना करने लगता है।

जिस दिन हमारी मेहनत से बनाया हुआ प्रोजेक्ट (Project) प्रारंभ होना

है उस दिन ऑफिस जाने का मन नहीं करता। मन के किसी कोने में कहीं डर है तो इस महत्वपूर्ण अवसर पर हमें विचलित कर देता है।

हमारी बहुत-सी असफलताओं का कारण यह तनाव है। यह तनाव शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक हो सकता है। इस तनाव से हम भाग नहीं सकते। हम कैसे इस तनाव का सामना करते हैं इसी पर हमारी सफलता और असफलता तय होती है।

यह तनाव कार्य का नहीं होता बल्कि उसके परिणाम का होता है। यह तनाव हमारी अपेक्षाओं के कारण होता है। हम परिणाम को नियंत्रित नहीं कर सकते लेकिन हम हर परिस्थितियों में हमारी प्रतिक्रिया को नियंत्रण कर सकते हैं।

परिस्थितियाँ

तो बदले नहीं

मन:स्थिति को बदलो। (हाईकु)

हमें यह भी याद रखना होगा कि समस्याओं से भाग नहीं सकते। जितना हम समस्याओं से दूर भागना चाहेंगे वे उतनी ही तेजी से हमारे पीछे पड़ी रहेंगी।

कृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई चेतावनी हमारे लिए भी उतनी ही सामयिक है। समय रहते हम अपने मन की दुर्बलता पर काबू पाएँ और परिस्थिति का सामना करे। क्या हम इसके लिए तैयार हैं ?

तैयार होने के लिए यह पुस्तक हमारी मदद करेगी।

वैसे तो T. P. एक छोटा सा शब्द है।

□ जिसे पढ़ने में १ सेकंड

□ सोचने में १ मिनट

□ समझने में एक दिन

□ साबित करने में पूरा जीवन और हासिल करने के लिए कई भवों की साधना अर्थात् T. P. मय बनने के लिए एक लंबा सफर तय करना पड़ता है।

जैसे ज्ञान, धन और T. P. एक बार बोले अगर हम जुदा हो गए तो दोबारा कहाँ मिलेंगे।

ज्ञान बोला—मैं मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों आदि में सूफी, संतों और गुरु के पास मिल जाऊँगा।

धन बोला—मैं अमीर, सम्पन्न लोगों के पास मिलूँगा अथवा कोष गृह में बंद मिलूँगा।

तब T. P. उदास होकर, अनमना सा होकर, रुआँसा हो गया तब ज्ञान और धन ने पूछा मित्र क्या बात है। आप इतने दुखी क्यों हो गए ? क्या हम दोनों से कोई अपराध हो गया या हम दोनों के व्यवहार से आपकी भावनाएँ आहत हो गईं। तब T. P. चुपचाप सिसकते हुए बोला अगर मैं एक बार चला जाऊँगा दुबारा लौट कर आना बड़ा मुश्किल होता है। अतएव - अपने T. P. को सम्भाल कर रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

□ □ □

गुरु मंत्र-4

आप जैसे करेंगे विचार वैसा मिलेगा संसार

संसार का परिणमन और कुछ नहीं बल्कि हमारे हमारे अच्छे-बुरे विचारों की प्रतिक्रिया है अर्थात् जो आप विचार करते हैं वही बन जाते हैं क्योंकि विचार सबसे बड़ी चुंबकीय शक्ति है, जो हर वस्तु को अपनी ओर आकर्षित करती है। अगर आप संसार के विचार करते हैं तो संसार अपने में पाते हैं और अगर संसार से मुक्त होने की सफलता का विचार करते हैं तो आप मुक्त हो जाते हैं।

Thought's Power ब्रह्माण्ड का कण-कण कंपित कर सकता है सम्पर्क कर सकता है, करता है क्योंकि वह सर्वशक्ति सम्पन्न है अतः आप जो चाहते हैं उसी का विचार करें। तो ब्रह्माण्ड आपके विचारों को साकार करके आप तक पहुँचा देगा।

हम अपने विचारों के स्वामी होते हैं स्वयं नौकर होते हैं और तो और स्वयं ही उन विचारों की पूर्ति करते हैं मूर्ति होते हैं अर्थात् प्रकृति आपके विचारों का अनुकरण करती है और अनुकरण करने वाला दास कहलाता है तो प्रकृति आपकी T. P. की दासी हुई अर्थात् आप विचार तो करिए प्रकृति आपकी सेवा करने को हाथ जोड़कर तत्पर खड़ी रहेगी।

आज तक जब आप जन्म-मरण रूपी दुःख के संसार में क्यों गोल-गोल भँवरों डूबते-उतराते आ रहे हैं ?

क्यों अनन्त वेदनाओं को सहन कर रहे हैं ?

क्यों सिंचन सम्हार ?

यही तो है हम असार संसार में अपना अमूल्य रत्न खोते चले आ रहे हैं। इन सभी समस्याओं का हमारे हिसाब से एक ही समाधान है कि हमने अपने अंदर अनन्त संसार की वृद्धि वाले विचार किए, जिसके परिणामतः हमें संसार मिला। हमने सोचा था हमें संसार में सब कुछ मिलेगा पर हमें कुछ, कुछ-कुछ और बहुत कुछ तो मिला सब कुछ ना मिला। संसार तो मिला पर मुक्ति का द्वार ना मिला।

काँच का एक विशाल महल था, उसमें कहीं से एक कुत्ता घुस आया। उसने जहाँ-जहाँ नजर डाली उसको हर तरफ हजारों कुत्ते नजर आए, तब उसने सोचा ये सारे कुत्ते मुझे मारकर खाने आए हैं तो उसने अपने बचाव में शान दिखाते हुए जैसे ही भौंकना प्रारंभ किया, तो वे सभी कुत्ते एक साथ भौंकने लगे, जब उसने और तेज भौंका तो उसकी प्रतिध्वनि भी तेज हो गई। जैसे जैसे उसने तेजी दिखाई, प्रतिध्वनि भी तेज होती गई। फिर उसने उन कुत्तों पर जैसे ही झपटा वे सभी एक साथ इस पर झपट पड़े। प्रतिकार में इसने अपनी पूरी दम लगाई और बेहोश होकर, गस्त खाकर, गिर गया और मर गया।

अनन्तर उसी महल में एक कुत्ता और आया, उसे भी हजार कुत्ते दिखाई दिए, पर इसने उन्हें भौंकने के बजाय प्यार से देखा और अपनी दुम हिलाई, तो सभी कुत्तों ने ऐसा ही किया, तो यह कुत्ता इतना सम्मान पाकर उछल पड़ा, नाचने लगा, तो काँच वाले सारे कुत्ते नाचने लगे, वह प्रसन्न होकर बाहर चला गया।

यह दुनियाँ भी एक काँच महल है जिस पर अपने विचारों की छाया पड़ती है।

संसार प्रतिध्वनि है जो दोगे वही पाओगे। अर्थात् आप जैसे करेंगे विचार वैसा मिलेगा संसार।

क्योंकि यह दुनियाँ भले ही आपकी कुछ मान्यता हो पर हमारे अनुसार हमने स्वयं वसाई है तो हमें स्वयं ही इससे पार जाना होगा।

**“दुनियाँ बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई....
तूने काहे को दुनियाँ बनाई....”**

इस पंक्तियों को सुनकर एक बार आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज स्वयं इन पंक्तियों को बोल पड़े-

**“दुनियाँ बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई
तूने काहे को दुनियाँ वसाई...”**

**मनोविलास ही संसार है अर्थात्
विलासी मन ही संसार है और
संन्यासी बन ही मुक्ति का द्वार है।**

मनोविलास मतलब वह भोग-वासना से परिपूर्ण उत्पन्न होने वाले विचार और यही विचार हमें दुःखद संसार देते हैं। हुआ यूँ कि एक नौजवान बेरोजगारी से तंग था और परिवार के ताने सुन कर आत्महत्या हेतु घर त्याग कर जैसे ही जंगल में पहुँचा तो उसने सोचा कि मैं बहुत थका हूँ पहले पेड़ के नीचे थोड़ा सा आराम कर लूँ, फिर आत्महत्या कर लूँगा और जैसे ही वह पेड़ के नीचे पहुँचा उसे निद्रा आ गई। विश्राम के उपरांत जब आँख खुली तो उसके मन में विचार आया कि काश कहीं अच्छा सा भोजन मिल जाता, इतना विचार किया ही था कि भोजन उपस्थित हो गया। भोजन करके उसको विचार आया पुनः विचार आया कि काश कहीं अच्छे वस्त्राभूषण मिल जाते तो मैं अपना शृंगार कर लेता फिर क्या था वस्त्राभूषण उपस्थित हो गए। शृंगारित होकर मन में विचार आया कि अगर एक रथ आ जाता तो दुनियाँ की सैर कर लेता-अहो! रथ उपस्थित हो गया। रथ देखकर उसके मन में विचार आया कि मेरी सारी इच्छाएँ यहाँ पूर्ण कौन कर रहा है, कहीं भूत तो नहीं। फिर क्या था भूत-

व्यंतर उपस्थित हो गए, उसने उन्हें देखकर भागना चाहा और सोचा कि यह मुझे मार ना डाले। आश्चर्य! उसके साथ वही हुआ जो उसने सोचा कि ये मुझे मार न डालें। आश्चर्य! उसके साथ वही हुआ जो उसने सोचा था अर्थात् भूतों ने उसे मार दिया। यही मामला है हम सभी का संसार में रहकर हम जैसे विचार करते हैं वैसा ही संसार अपने अंदर पाते हैं, अतः आप संसार में तो रहे पर अपने विचार में संसार को ना रहने दें। दुनियाँ में रहे पर दुनियाँ को अपने विचारों में न रहने दो। यही Thought's Power संसार से मुक्त करा सकता है और संसार बसा भी सकता है। इसलिए अपने विचारों में भोग-वासना, विलासिता को विराम दीजिएगा और योग-साधना, संन्यास का प्रारंभ कीजिएगा।

विचार चक्र ही संसार चक्र है अर्थात् दुनियाँ गोल है

□ नंगे पाँव चलते हुए इंसान को लगता है कि चप्पल होती तो कितना अच्छा होता।

□ बाद में सोचता है, साइकिल होती तो रास्ता जल्दी कट जाता।

□ उसके बाद, मोटरसाइकिल होती तो थकान नहीं लगती।

□ फिर ऐसा लगता है, कार होती तो धूप नहीं लगती।

□ फिर, हवाई जहाज में बैठता तो आसमान से बातें करता।

□ जब हवाई जहाज में बैठकर नीचे हरे-भरे घास के मैदान देखता है तो सोचता है कि नंगे पाँव घास में चलता तो दिल को कितनी तसल्ली मिलती।

चक्र का कभी अंत नहीं होता, अंत तो मार्ग का होता है, मंजिल के मिलने पर।

कोल्हू बैल की भांति घूम फिर कर वहीं आना है। संसार चक्र हम सबने अपने-अपने चक्र बना रखे हैं न।

लैंप/दीपक या बल्ब जैसे, रोशनी हमारी गोले/व्रत में कैद है, बाहर इंच भर भी नहीं आ सकती इसी तरह, हमने अपने-अपने व्रत बना रखे हैं, उनमें हम सहमे/सिमटे हैं, खुद को सिकोड़ेंगे, पर व्रत ना छोड़ेंगे क्योंकि हममें साहस कहाँ सूरज सा बनने का, संत सा रहने का, आत्मज्ञान सा चमकने का।

चक्रव्यूह तोड़ना तो आसान है, पर विचारव्यूह तोड़ना मुश्किल तो हो

सकते हैं कि नामुमकिन नहीं ! पर प्रथम समझे कि हम भयंकर विचार में, उलझे हैं। तो दुनियाँ की रचना ग्लोब जैसी गोल नहीं बल्कि विचारों से गोल है - जैसे (बुलंदी में)

शिक्षक-होमवर्क किया या नहीं ?

छात्र-लाइट नहीं थी, अतः नहीं कर पाये।

शिक्षक-चिमनी/ लेम्प जलाकर कर लेते ?

छात्र-माचिस नहीं थी

शिक्षक-माचिस उठा लेते।

छात्र-कैसे उठाते वह तो पूजा घर में रखी थी

शिक्षक-तो क्या दिक्कत थी

छात्र-सपरोँ नई थों।

शिक्षक-तो सपर लेते

छात्र-पानी नई थों।

शिक्षक-पानी भर लेते,

छात्र-कैसे भर लेते, मोटर नहीं चल रही थी।

शिक्षक-मोटर चला लेते

छात्र-वई तो कैसे मास्साब लाइट नहीं थी!!

है ना दुनियाँ गोल। अतः दुनियाँ /संसार की कल्पना मात्र करना ही संसार बढ़ाना है। लेकिन जब यही चक्र अच्छी चीजों में चलता है तो प्रायः संसार चक्र टूटने का Thought's Power बन जाता है जैसे-

मंदिर है तो भगवान है,
 भगवान है तो भक्त हैं,
 भक्त है तो श्रद्धा है,
 श्रद्धा है तो विश्वास है,
 विश्वास है तो चमत्कार है,
 चमत्कार है तो नमस्कार है,
 नमस्कार है तो सम्स्कार है,
 सम्स्कार है तो भगवान है,

भगवान है तो मंदिर है।

हुआ न संसार के समापन चक्र।

यह विचार व्यूह ही तो खतरा है, यही कल्पना जन्य संसार है। जो मकड़ी जाल सम हमने खुद बनाया है, जिसमें दूसरा फँसे या न पर हमें जरूर फँसकर मरना है।

**भूल गए राज रंग, भूल गए छकड़ी।
तीन चीजें याद रही, तेल नौन लकड़ी॥
जिसमें हमारी आत्मा ऐसी जकड़ी।
जैसे जाल में जकड़ी हो मकड़ी॥**

अतः—

कल्पना जन्य संसार हमारे विचार ही तो हैं।

दो यात्री रेल के डिब्बे में बैठे यात्रा कर रहे थे। डिब्बा लगभग खाली था। आसपास की बर्थ पर केवल दो ही आदमी थे। सर्दी का समय था। एक आदमी उठा और उसने खिड़की को बंद कर दिया। कुछ देर बाद दूसरा यात्री उठा और खिड़की को फिर से खोल दिया। पहले यात्री के चेहरे पर अप्रसन्नता का भाव आया, किंतु वह कुछ नहीं बोला और थोड़ी देर बाद उसने खिड़की फिर से बंद कर दी। दूसरे यात्री के चेहरे पर भी गुस्से का भाव आया और जब नहीं रहा गया तो उसने जाकर फिर खिड़की खोल दी। आखिर दोनों में वाद-विवाद हो गया। तभी टी. टी. आ गया और उसने विवाद का कारण पूछा तो एक ने कहा— मुझे ठंड लगती है, इसलिए खिड़की बंद रहनी चाहिए। ये श्रीमान जी बार-बार खोल उसे खोल देते हैं।

दूसरे ने कहा— “इतनी ज्यादा ठंड नहीं है। खिड़की बंद कर देने पर मुझे घुटन-सी होने लगती है। इसलिए मैं खिड़की खुली रखना चाहता हूँ।” टी. टी. खिड़की के पास गया और उसे हाथ लगाया तो उसका हाथ खिड़की के बाहर चला गया। उसने कहा— “इसमें शीशा नहीं है। तुम कैसे खोलना और बंद करना चाहते हो ?”

दर-असल उस खिड़की में कोई शीशा नहीं था, वह मात्र खिड़की का फ्रेम था, जिसे दोनों बार-बार खोलते और बंद करते थे। कल्पना का बड़ा विचित्र संसार है। इसमें कल्पना से ही ठंड लगती है और कल्पना से ही गर्मी

लगती है। अति कल्पना आदमी को बिल्कुल निठल्ला बना देती है। वह जीवन में दुख के अतिरिक्त और कुछ हासिल नहीं कर पाता।

अतः मन विचारों से संसार बड़े उनसे बचना ही Thought's Power का सदुपयोग है।

क्योंकि—

□ अकड़न और पकड़न में ही संसार की जकड़न है।

□ संसार एक कीचड़ / कल्पना है जिसमें आप कीड़े या कमल बन सकते हैं।

□ दुनियाँ गोल है केंद्र कहाँ ? गोल का केंद्र हर जगह। कैसी है गोल रोटी/ पापड़ जैसी, फुटबॉल/गेंद जैसी, या रुपया-पैसा जैसी या अन्य प्रकार से। पता नहीं पर है तो गोल अनाहत चक्र। संसरणः इति संसारः॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं,

पुनरपि जननी अथरे शनं।

घूम-फिर कर वही आना, जहाँ जन्म लिया, अब जब वही आना है तो वहाँ से अन्यत्र जाने का विचार क्यों करते हैं हम, वहीं-वहीं कितनी बार। वही-वही कितनी बार, अब की बार इस पर विचार। यही है, Thought's Power का सदुपयोग एवं विचारों का केंद्रीकरण। अन्यथा वहीं के वहीं जैसे—

□ कॉकरोच चूहे से डरता है,

□ चूहा बिल्ली से डरता है,

□ बिल्ली, कुत्ता से डरती है,

□ कुत्ता, आदमी से डरता है,

□ आदमी, स्त्री से डरता है,

□ स्त्री कॉकरोच से डरती है,

हुआ ना वहीं के वहीं। अतः सम्भालो थॉट्स पॉवर को अपने Thought's Power को क्योंकि—

विचारों को गिरा के गिर जाता है आदमी,

विचारों को सम्भाल के सम्भल जाता है आदमी।

अतः सम्भालो अपने विचारों को हमारे मित्रो,

क्योंकि श्रेष्ठ विचारों से मूरत में ढल जाता है आदमी॥

हमारी सलाह से—

विलिप्त हो हर हाल में, अनुकूल या प्रतिकूल हों।

हम यों जिये संसार में, जैसे कमल का फूल हों॥

यह कल्पना जन्य विचार ही हमें, हमारी आत्मा को वेदना पीड़ा घाव देते हैं, फिर उन पर नमक-मसाला छिड़क कर तड़पाते हैं, जैसे एक बंदरों की एक टोली डोली में एक बंदर को किसी निमित्त से शरीर में कहीं एक घाव हो गया। सभी बंदर उसे क्रम-क्रम से देखने आते और उसका हाल-चाल पूछ कर उसके घाव को अपने नाखूनों से कुरेद-कुरेद कर चले जाते हैं। जिससे उसका घाव पहले से और ज्यादा बढ़ा और दर्दिला होता गया। अंत में वह बंदर अपनों के द्वारा दी गई थी पीड़ा से तड़प-तड़प कर मर गया। बस ऐसे ही संसार घाव देता है सहलाने के नाम पर घाव को और बढ़ाता है। अतः संसार के विचारों को जानकर त्यागना ही श्रेयस्कर है।

उनकी अदावत का अंदाज कुछ ऐसा है।

जख्म देकर पूछते हैं अब हाल कैसा है॥

किसी एक से भी हम गिला क्या करें।

सारी दुनियाँ का मिजाज ही कुछ ऐसा है॥

संसार आसक्ति का विस्तार है और आसक्ति तो वह कहलाती है जो आ तो सकती है लेकिन जा नहीं सकती। कर्म करके भी अनासक्त रहना है अध्यात्म है संसार समाप्ति है। संसार आकर्षक का मृग जाल है। संसार मोह का विस्तार है। संसार एक दर्पण है जो आपको वह नहीं दिखाता जो आप देखना चाहते हैं बल्कि आप जो हैं वह दिखाता है। संसार की अगर यात्रा प्रारंभ विचार से है तो अंत भी विचार से ही है।

संसार भ्रम जाल है। भ्रम ही ऐसा जिसे हमने विचारों के द्वारा बनाया लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि यह संसार ईश्वर ने बनाया है कर्ता-धर्ता, स्वामि-भोक्ता सब कुछ ईश्वर ही है। तो हमारा ऐसे लोगों से पूछना है कि आखिर ईश्वर को क्या ऐसी पड़ी थी कि वह संसार की रचना करता। और मन में बार-बार यही विचार आता कि ईश्वर को किसने बनाया ? अतः कहाँ जा सकता है कि संसार एक भ्रम ही है। कुछ लोगों का कहना है कि हम इस भ्रम जाल में बिल्कुल नहीं फँसे। संसार में रहकर संसार से मुक्त होना सुनकर हंसी सी आती है कि एक संसारी कहे कि हम संसारी नहीं हैं कितना बड़ा भ्रम पल

रखा हैं यही विचार, विभ्रम संसार भ्रमण हैं।

भ्रमजाल :

काशी में गंगा के तट पर एक संत का आश्रम था। एक दिन उनके एक शिष्य ने पूछा—“गुरुवर, शिक्षा का निचोड़ क्या है ?” संत ने मुस्कराकर कहा— एक दिन तुम खुद ही जान जाओगे। बात आई-गई हो गई। कुछ समय बाद एक रात संत ने उस शिष्य से कहा, वत्स, इस पुस्तक को मेरे कमरे में तख्त पर रख दो। शिष्य पुस्तक लेकर कमरे में गया, लेकिन तत्काल लौट आया। वह डर से काँप रहा था। संत ने पूछा—क्या हुआ, इतना डरे हुए क्यों हो ? शिष्य ने कहा—गुरुवर! कमरे में साँप है। संत ने कहा—यह तुम्हारा भ्रम होगा। कमरे में साँप कहाँ से आएगा ? तुम फिर जाओ और किसी मंत्र का जाप करना। साँप होगा तो भाग जाएगा।

शिष्य दुबारा कमरे में गया। उसने मंत्र का जाप भी किया, लेकिन साँप उसी स्थान पर था। वह डरकर फिर बाहर आ गया और संत से बोला—साँप वहाँ से जा नहीं रहा है। संत ने कहा—इस बार दीपक लेकर जाओ। साँप होगा तो दीपक के प्रकाश में भाग जाएगा। शिष्य इस बार दीपक लेकर गया तो देखा कि वहाँ साँप नहीं है। साँप की जगह एक रस्सी लटकी हुई थी।

अंधकार के कारण उसे रस्सी का वह टुकड़ा साँप नजर आ रहा था। बाहर आकर शिष्य ने यह बात संत को बताई तो संत ने कहा—वत्स! इसी को भ्रम कहते हैं। संसार गहन भ्रम-जाल में जकड़ा हुआ है। ज्ञान के प्रकाश से ही इस भ्रम जाल को मिटाया जा सकता है क्योंकि अज्ञानता के कारण हम बहुत सारे भ्रम पाल लेते हैं।

भीड़ और भ्रम की कथा

किसी एक जंगल में एक संन्यासी बैठा था अचानक जंगल के जानवरों के भागने से उसका ध्यान टूट गया। उसने देखा शेर भाग रहा है, उसके पीछे हाथी भाग रहा है, उसके पीछे ऊँट भाग रहा है, लोमड़ी, सियार, बिलाव सभी भाग रहे हैं। संन्यासी को बड़ा आश्चर्य हुआ और संन्यासी भी उसके पीछे भागा और जाकर उसने बिलाव से पूछा—क्यों भाग रहे हो ? बिलाव ने कहा—आगे वाले से पूछो। वह भाग रहा तो मैं भी भाग रहा हूँ। संन्यासी ने सियार से पूछा—तुम क्यों भाग रहे हो ? उसने कहा—बड़े अजीब हैं आप, सीधा सा

गणित है मुझसे बड़े भाग रहे हैं तो मैं भी भाग रहा हूँ। संन्यासी ने कहा रुको। तुम क्यों भाग रहे हो ? उसने कहा-यह बात तो शेर से ही पूछ लो, जंगल का राजा भाग रहा है, तो सब भाग रहे हैं।

संन्यासी दौड़ा उसने आगे जाकर शेर से पूछा-तुम क्यों भाग रहे हो ? तो उसने कहा प्रलय आने वाला है। संन्यासी ने पूछा-तुम्हें कैसे पता चला ? तो उसने कहा-रात मैं सोता था तब मेरी माँ ने मुझसे एक बात कही थी कि खड़-खड़ की आवाज हो तो समझना प्रलय आने वाली है। मैंने एक दहाड़ मारी, भागो, प्रलय आने वाली है, इसलिए वन के सब जानवर भाग रहे हैं।

साधु ने कहा-ठहरो! तुम कौन से वृक्ष के नीचे सोए थे ? आम के नीचे सोया था। तो साधु ने देखा वृक्ष के नीचे एक बड़ी डाली टूटी पड़ी है और डाली जब टूट रही होगी, सूखे पत्ते डाली के टूटने से खड़-खड़ की आवाज हुई होगी। चलो, चलकर देखते हैं। दोनों आम के वृक्ष के नीचे गए और देखा डाल टूटी लटक रही थी कुछ नहीं था, वृक्ष भी अपनी मस्ती में खड़ा था, मंद हवाएँ चल रही थीं। शेर को अपनी भूल समझ में आई, उसे काफी पश्चाताप हुआ। जिंदगी में हम भ्रम में जीने के आदी हैं, यही भ्रम हमें यथार्थ से दूर रखकर अंधकार में ले जाता है।

आखिर यह संसार का भ्रम, चूँकि हमारा जब है ही नहीं तो हम पाल क्यों रहे हैं। शायद इसका जवाब यही हो सकता है कि हमने आज तक इस भ्रम जाल को तोड़ने के विचार नहीं किए और करते भी कैसे ? हमें जो भी मिला वह स्वार्थी संसार का थॉट पॉवर ही मिला।

संसार भ्रम है जैसे-छिपकली से लटकी गिरती क्यों नहीं क्योंकि छत गिर जाएगी, बस ऐसे ही संसार हमसे (घर गृहस्थी) जैसे गाड़ी के नीचे कुत्ता का चलना-कुत्ता सोचता, मैं चला रहा हूँ, यही भ्रम/भ्रांति है इसी का नाम संसार है। इसमें कुछ ध्यान ही नहीं रहता।

यह प्रति क्षण चल रहा है-“प्रतिक्षणं गच्छनीति जगत जायते- गत जगत।” एक दूसरे के स्वार्थ में इतनी भ्रम बढ़ रहा है कि ऐसा लगता है जैसे इस सारे संसार का संचालन छत से चिपकी छिपकली की भाँति हम ही कर रहे हो या बैलगाड़ी के नीचे वाले कुत्ते की भाँति संसार हम ही चला रहे हों। और आश्चर्य तो यह है कि संसार के भ्रम के हर व्यक्ति सलाहकार, मददगार

उपदेशक हैं। मतलब खुद की नाक कटी है और संसार की काटने में लगे हैं अहो! असार संसार में एक दूसरे को भ्रमाकर, नाक कटाकर आनंद क्या परमानंद भी पाते हैं।

कथा

एक घमंडी व्यक्ति था जो अपने साथ हमेशा एक तलवार रखता था। एक बार उसके नाक पर बैठे हुई मक्खी को तलवार से भगाया, तलवार के वार से उड़ गई- क्या उड़ गई अरे भाई मक्खी तो उड़ गई पर उसके साथ-साथ नाक भी उड़ गई, सारा गाँव उसे नककटा चिढ़ाता तब उसे एक उपाय सूझा तो वह समुद्र किनारे रेत का ढेर लगाकर ज्यों ही नाचा तो एक दूसरे व्यक्ति ने पूछा कि आपको कौन सी अच्छी वस्तु मिल गई जो आप नाच रहे हो तब नककटे ने कहा मुझे स्वर्ग के नजारे देख रहे हैं। अगर तुम्हें देखना है तो हमारे पास आ जाओ। वह व्यक्ति पास तो गया पर कुछ न दिखा तब नककटा आप वह दिख नहीं सकता जो मुझे दिख रहा है- क्यों ? क्योंकि तुम्हारी नाक नहीं कटी। अगर देखना है तो नाक कटवाओ। उस व्यक्ति ने नाक तो कटवा ली पर फिर भी कुछ न दिखा नककटा बोला कुछ भी नहीं दिखेगा। अब हम और तुम तो दो नककटे हो गए। चिढ़ाने वाले आधे-आधे हो जाएंगे, अब मैं क्या करूँ ? नककटे ने कहा दोनों नककटे मिलकर नककटाओं की भीड़ बढ़ाएँ और इस तरह एक से दो-दो से चार और फिर पूरा संसार नककटा हो गया।

इसी का नाम है स्वार्थी संसार जो अपने विचारों से ही प्रारंभ होता है तो क्यों ना अपना थॉट पॉवर सही दिशा में लगाएँ और संसार से मुक्ति पाएँ।

“तुम पथ के काँटों को कुचलो तो आगे संसार मिलेगा,

संसार के तूफानों में नौका अपने आगे ले जाओ

अगर किनारे लग जाओ तो अमर तुम्हारा नाम रहेगा”

इसलिए मेरे मित्रों जैसे केले के वृक्ष को छीलने पर या प्याज को छीलने पर या रेत को पेलने पर कथंचित् कुछ मिल भी जाए परन्तु संसार से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। ऐसे विचार करना ही यथार्थ संसार दर्शन है।

आसार को प्यार,
सार को फटकार,
परिणाम यह हुआ,

अनन्त संसार ।

आखिर क्या है संसार दर्शन

कितने भी दार्शनिक बन जाओ पर प्रथम संसार दर्शन देना अनिवार्य है। सुख पाने को विषय भोग करना ऐसा ही माना जाएगा जैसे वज्राग्नि से शीतलता माना यह तो वयं चित संभव हो सकते हैं। बंध्या स्त्री के संतान ही संभव हो सकती है, परन्तु हाथरीकरुणता। संसार में किंचित मात्र भी सुख शान्ति नहीं क्योंकि जब हमारे विचार ही अशान्त है तो संसार कैसे शान्त होगा। कल्पना करें, जीव-जंतुओं से भरे वन में एक पथिक के प्रवेश करने पर सामने से एक हाथी यमराज जैसा आता हुआ दिखा तो पथिक अपनी जान बचाने को जैसे ही पीछे भागा को एक कुएँ में गिर गया। गिरते-गिरते उसने एक पेड़ की डाल को पकड़ लिया। उस पर लटके-लटके उसने नीचे देखा तो उसे एक महा भयंकर दृश्य दिखा जिसमें एक महा अजगर और चार कालिया नाग क्रुद्ध होकर लाल-लाल नेत्र करते हुए अपने जिहता लप-लपा रहे थे। उसने जब ऊपर देखा तो जिसके सहारे वह लटक रहा था उस शाखा को एक काला और एक सफेद चूहे कुतर रहा था। इतने में उस क्रुद्ध हाथी ने उस पेड़ को झकझोर दिया। जिससे उस पेड़ पर लगे हुए मधुमक्खियों के झुंड की मधुमक्खियाँ क्रोधित होकर लटकने वाले व्यक्ति के शरीर पर चिपक कर अनन्त पीड़ा देने लगी उसी समय उसके होंठ पर शहद की एक बूँद टपक गई। जिसे चाट कर वह सारी बातें भूल गया और बून्द का इंतजार करने लगा। एक और के चक्कर में वह अपनी ठौर (मंजिल) भूल गया। यही है संसार दर्शन। प्रत्येक संसारी प्राणी संसार में मौत रूपी हाथी से डर कर भाग रहा है। मोह और क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी सर्पों से डँसा जा रहा है। मधुमक्खियाँ रूप आदि, व्याधि, उपाधि प्रतिक्षण पीड़ा दे रही है और आयु रूपी शाखा से लटका है परन्तु भोग विषयों की एक बूँद शहद के चक्कर में ऊपर से आए हुए देवों के विमानों को भी ठुकरा देता है। और दिन-रात या शुक्ल-पक्ष, कृष्ण-पक्ष रूपी चूहों को भी नजर अंदाज कर देता है।

एक बिंदु का बुरा विचार ।

अनन्त सिंधु का संसार ॥

यह संसार-दर्शन विचारों की विषमता का नाम है सपनों का नाम है और

सपने भी ऐसे जो साकार नहीं हो पर हमेशा भ्रमण ही भ्रमण कराते हैं।

ना जी भर के देखा न कुछ बात की,
बड़ी आरजू थी मुलाकात की।
कई साल से कुछ खबर ही नहीं,
कहाँ दिन गुजरा कहाँ रात की॥

कथा

एक महात्माजी को एक सपना आया जिसमें उन्होंने यात्रा के दौरान एक ऐसा व्यापारी मिला, जिसने पाँच गधों पर बड़ी-बड़ी गठरियाँ लाद रखी थी! गठरियाँ बहुत भारी थी। महात्मा ने व्यापारी से पूछा- इन गठरियाँ में ऐसा क्या रखा है, जिन्हें ये विचारे गधे नहीं ढो पा रहे हैं? व्यापारी ने जवाब दिया- इसमें इंसान के इस्तेमाल की चीजें हैं। महात्मा ने पूछा- जरा बताएंगे इसमें ऐसी कौन सी चीजें हैं?

व्यापारी ने कहा पहले गधे पर अत्याचार की गठरी लदी है। महात्मा ने पूछा- भला अत्याचार कौन खरीदेगा? व्यापारी ने कहा- इसके खरीदार हैं राजा-महाराजा और सत्ताधारी लोग। महात्मा ने पूछा- इस दूसरी गठरी में क्या है? व्यापारी बोला- इस गठरी में अहंकार भरा हुआ है, इसके खरीदार हैं ज्ञानी और विद्वान। उसने तीसरे गधे की गठरी के बारे में बताते हुए कहा कि ईर्ष्या की गठरी है, और इसकी खरीदार हैं, वे धनवान लोग, जो एक दूसरे की प्रगति को बर्दाश्त नहीं कर पाते। महात्मा ने पूछा- अच्छा! चौथी गठरी में क्या है भाई? व्यापारी ने कहा- इसमें बेईमानी भरी है और इसे ग्राहक है, वे कारोबारी जो नकली सामान बेचकर लोगों को ठगते हैं। महात्मा ने पूछा- अंतिम गधे पर लदी गठरी में क्या है? व्यापारी ने जवाब दिया- इस गठरी में छल-कपट है, इसकी माँग उन औरतों में बहुत ज्यादा है, जो छल कपट का सहारा लेकर दूसरों की लकीर छोटी कर अपनी लकीर बड़ी करने की कोशिश करती रहती है। तभी महात्मा की नींद खुल गई। इस सपने में उनके कई प्रश्नों के उत्तर मिल गई थे।

अतः अपने विचारों में संसार दर्शन समाप्त कीजिएगा अन्यथा एक बूंद..... यही एक आशा..... अनन्त संसार दर्शन।

कथा

दो गधे पर पहला गधा बोला मेरा मालिक मुझे बहुत परेशान करता है। बहुत काम कराता है तो दूसरा गधा बोला तुम भाग क्यों नहीं जाते भाग क्यों नहीं जाते। तब पहले ने जवाब दिया भागने का मन नहीं करता क्योंकि यहाँ पर फ्यूचर बहुत है।

दूसरा - वो कैसे ?

पहला-अरे! मेरा मालिक अपनी बेटी से गुस्से में कहता है सुधर जा वरना तेरी शादी गधे से कर दूँगा बस इसी उम्मीद से जिए जा रहा हूँ।

बस इन्हीं आशाओं के विचार से हम अपना संसार बढ़ाते चले जा रहे हैं। फिर क्यों करना ऐसे विचार इसलिए बस आप विचार तो बदलो आपका संसार अपने आप बदल जाएगा। यह विचार बदलने का कार्य आपको अकेले ही करना होगा।

बड़े अजीब से आज कल दुनियाँ के मेले हैं।

दिखती तो भीड़ है पर चलते सब अकेले हैं॥

इसलिए अतः इस संसार रूपी चक्रवात में हम अपने आप को इतना मजबूत बनाएँ, वह अपने विचारों को इतना मजबूत करें कि हमारे अंदर गलत विचार आ ही ना पाए। इस बेहोशी के विस्तार में-

कहीं छेड़छाड़ तो कहीं लाड़ प्यार

कहीं खोखी तो कहीं मस्ती

कहीं मादक अंदाज तो कहीं आत्मा की पुकार

अतः आइएगा अपने Thought's Power को परिवर्तित करें जिससे संसार के जोड़ का मोड़ प्राप्त हो क्योंकि एक छोटा सा विचार ही बहुत बड़ा जिंदगी में परिवर्तन ला सकता है।

एक कुम्हार था वह मिट्टी के बर्तन बनाता था। एक बार जब वह दीपक बनाने बैठा तो अचानक उसका विचार बदल गया और उसने दीपक के स्थान पर शराब का प्याला बना दिया। उस प्याले ने पूछा आप तो दीपक बनाने वाले थे प्याला कैसे बना दिया ? तो कुम्हार ने जवाब दिया बस यूँ ही मेरा विचार बदल गया और मैंने बना दिया। तब प्याले ने जवाब दिया कि आपने तो यूँ ही कह कर टाल दिया पर आपके एक अविचार से मेरा तो पूरा संसार ही बदल

गया। कहाँ तो मैं भगवान की भक्ति करके कृत-कृत्य होने वाला बनने वाला था परन्तु आपके विचार परिवर्तन में मुझे व्यसन की बर्बादी के, पतन के या विनाश के रास्ते का संयोगी बना दिया यह सुनकर कुम्हार मौन हो गया।

यह काल्पनिक कथा होकर भी बहुत ही अनुकरणीय कथा है। काश वह कुम्हार प्याला बनाने बैठे और उसका विचार बदल जाए और वह दीपक बना दे। ऐसा ही दीपक बनने का Thought's Power मुक्ति का द्वार है।

अतः ऐसे विचार करो कि हे भगवान इस संसार में मेरे साथी बहुत कुछ मेरे साथ बहुत कुछ घट चुका है। अब कुछ न घटे बल्कि संसार ही घट जाए अतः संसार में मालिक की तरह नहीं बल्कि मेहमान की तरह रहो।

तुलसी जग में यूँ रहो ज्यों रसना मुख माहि।

खाता ही अरु तेल नित फिर भी चिकनी नाहि॥

अतः संसार का सुधार करने वाले को हमारी एक नसीहत है कि संसार के पहले अपना सुधार करना चाहते हैं। वह सबसे पहले अपने विचारों को परिमार्जित करें। अन्यथा कुछ संसारी पद आपको प्राप्त होंगे।

जैसे—

जमीन पर बैठने से -जमींदार

गद्दी पर बैठने से -गद्दार

माइक से चिपकने से -मक्कार

पैरों से व्यर्थ घूमने से -पहरेदार

चेयर की चाह में - चाटुकार

लॉन में लटकने से - लम्बरदार

चटाई पर चहकने से - चक्रधार, आदि पदों की सौगात विचारों

का उपहार होगा।

अतः घर से बाहर अगर सुरक्षित निकलना हो तो,

जीवन-बीमा करा लो-एजेंट मिल जाएंगे।

संसार से बाहर निकलना हो तो

अच्छे-विचारों का (धर्म का) बीमा करा लो

संत मिल जाएंगे॥

Thought's Power का उपकार,

संसार से पार॥

इस व्यंग्यात्मक उपहारों से अगर बचना हो तो संसार को विधिवत् समझना होगा क्योंकि संसार और कुछ नहीं कुछ भी नहीं मात्र विचारधारा या Thought's Power ही है।

संसार विचार वैषम्य है।

मुक्ति विचार साम्य है॥

विचारों से ही संसार नश्वर है।

विचारों से ही संसार अविनश्वर है॥

अगर विचारों में /Thought's Power में अपनी Programing में संसार की नश्वरता की Feeding की है तो आपका संसार नाश को अवश्य ही प्राप्त होगा और अविनश्वर मान रखा है, तो वह कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होगा। अविनश्वरता को प्राप्त करने के लिए पहले हमें स्वयं मजबूत बनना पड़ेगा यह मजबूती सर्वप्रथम Thought's Power से ही प्रारंभ होती है और वैसे भी यह संसार एक व्यायामशाला है जिसमें हम स्वयं को मजबूत बनाने आते हैं और मजबूती सीखने की पाठशाला भी है। अतः अपने Thought's Power को इस तरह से मजबूत बनाएँ कि हम संसार रूपी सागर या नदी से पार हो जाए। Thought's Power की परिपक्वता के अभाव में यह सारा संसार कच्ची माटी के कलश के सामने गलने वाला होता है। और माटी गलकर जैसे जल में विलीन होकर कीचड़ का रूप ले लेती है। उसी तरह Thought's Power की कमजोरी से हम लोग भी संसार सागर में डूब जाते हैं। भगवान उन्हीं का साथ देते हैं जिसका Thought's Power भगवान जैसा मजबूत होता है। अतः संसार रूपी सागर या नदी से पार होने को भले ही प्रतिकूलता हो पर Thought's Power मजबूत रखें।

□ संसार है एक नदिया

एक बार एक सेठ ने अपने फार्म हाउस में पार्टी रखी। काफी मेहमान आए। फार्म हाउस के स्विमिंग पूल में कुछ मगरमच्छ भी थे। सेठ ने स्टेज पर खड़े होकर एक ऐलान किया कि जो भी इस स्विमिंग पूल को तैरकर पार करेगा उसको, एक करोड़ रुपए इनाम दिया जाएगा। सभी लोग एकदम पीछे हट गए। कोई भी पैसों की खातिर अपनी जान नहीं गवाना चाहता था। तभी एक व्यक्ति

उस स्विमिंग पुल में कूद गया है। किसी तरह अपने आप को सम्भाल कर दाएँ बाएँ तैर कर वह दूसरे छोर पर पहुँच गया। सब लोगों ने उसके साहस की बहुत प्रशंसा की और कहा कि वाह! तुम एक करोड़ रुपए जीत गए! उस व्यक्ति ने अपने गीले बाल सुखाते हुए कहा, यह तो ठीक है कि मुझे एक करोड़ रुपए मिलेंगे, लेकिन पहले यह बताओ कि मुझे धक्का किसने दिया था? यही बात हमारे साथ है। हम इस संसार रूपी समुद्र में कैसे आए पता नहीं, परन्तु आ गए तो निकलना जरूर सीखना पड़ेगा। गीता ध्यानम् में एक श्लोक आता है जिसमें कवि ने कहा है अर्थात् इस संसार रूपी नदी, जो मगरमच्छ, शार्क इत्यादि से भरी हुई है, उसकी केवल मात्र, भगवान ही आपको पार करा सकते हैं। समस्या यह है कि हमें समस्या में आना तो आता है परन्तु निकलना नहीं आता।

मात्र यह कहने से कि प्रभु हमें भवसागर से पार करा देंगे, कुछ नहीं होने वाला। सबसे पहले प्रयास करना पड़ेगा। डॉक्टर की दवाई आपको बीमारी से मुक्ति कर देगी, लेकिन पहले आपको डॉक्टर के सामने समर्पण करना होगा। डॉक्टर द्वारा बताए परहेजों को अंगीकार करना होगा। तभी बीमारी रूपी भवसागर पार हो पाओगे। शास्त्रों ने जो बताए हैं उनको समझने का प्रयास करते हैं।

अगर नाव जल में रहे तो कुछ हर्ज नहीं परन्तु नाव में जल नहीं रहना चाहिए। इसी तरह साधक या संसार से पार होने वाला भले ही संसार में रहे लेकिन उसके मन में संसार नहीं रहना चाहिए। अर्थात् सर्वप्रथम थॉट पॉवर हो स्वयं के संसार की कल्पना दूर कीजिएगा और संसार से पार होने का आनंद लीजिएगा।

जैसा कि आप जानते हैं कि संसार एक पाठशाला है परन्तु बुराई सीखने की नहीं, पतन की नहीं बल्कि बुराई त्याग कर उत्थान की पाठशाला है। बल्कि संसार नश्वरता का ज्ञान अगर हो जाए तो हमारा दावा है कि संसार का कोई भी व्यक्ति कभी अन्याय अनीति के पथों पर चलने वाले विचार करेगा ही नहीं। अतः संसार की नश्वरता का Thought's Power अपने अंदर विकसित अवश्य कीजिएगा।

संत की सीख

राजा रंजीत सिम्ह को फूलों का बहुत शौक था। उन्होंने शयनकक्ष के बाहर गमलों में बहुत ही सुंदर, सुगंधित फूल लगा रखे थे। उनकी देखभाल के लिए उन्होंने अलग से ही एक नौकर रखा हुआ था। एक दिन वह पौधों में पानी दे रहा था की एक गमला टूट गया। राजा को जब पता चला तो गुस्से में होने दो महीने बाद में नौकर को फाँसी देने का आदेश दिया। उसी समय उन्होंने नगर में घोषणा भी करवा दी कि जो व्यक्ति गमले को पहले जैसा बना देगा उसे मुँह माँगा इनाम देगा। लोगों ने राजा को बहुत समझाया, लेकिन वे फाँसी के फैसले पर अड़े रहे। गमले की मरम्मत के लिए बहुत से लोग आए लेकिन असफल रहे! एक संत ने घोषणा सुनी तो दरबार में आये और बोले, राजन, टूटे हुए गमले में जोड़ दूँगा। लेकिन उससे पहले तुम्हें समझाना चाहता हूँ कि हमारी देह अगर नहीं है तो मिट्टी का यह गमला कैसे तू मिट्टी का गमला कैसे सही हो सकता था। राजा को संत की बात समझ नहीं आई। वह अपनी बात पर अड़े रहे और संत को वहाँ ले गए जहाँ गमला टूटा पड़ा था। संत ने डंडे से एक-एक करके वहाँ रखे तीस गमले तोड़ दिए। राजा ने संत से कहा—ये क्या किया आपने? संत ने कहा, मैंने ३० लोगों की जान बचाई है क्योंकि कभी ना कभी गमलों को टूटना तो था ही। जिसके हाथ से टूटता उसे फाँसी मिलती, इसलिए मैंने ही तोड़ दिए। राजा बोला—महात्मन्! आपने मेरी आँखें खोल दी! मैं समझ गया कि जगत कि हर चीज नश्वर है। उन्होंने नौकर को फाँसी का आदेश वापस ले लिया।

कुछ लोगों का मानना है कि हम संसार में भले ही हैं पर ऐसे हैं जैसे कि जल में सूर्य या चंद्र बिम्ब प्रतिबिंबित होता है तो क्या बिम्ब जल में फँस सकता है नहीं ना! ऐसा कुतर्क करके आपके Thought's Power को विवश कर देते हैं संसार में उनसे उलझने के लिए तू हमारा सुझाव है कि संसार बंधन वास्तव में बंधन है। इसको प्रतिबिंब ना समझे अन्यथा सुलझने का Thought's Power विकसित ना होने पर नश्वर संसार की कल्पना ही फँस जाएंगे! परन्तु हमें यह Thought's Power बनाना चाहिए कि अगर दुनियाँ इतनी अच्छी होती तो यहाँ कोई रोते हुए नहीं आता और अब इतनी बुरी होती तो कोई रुलाकर नहीं जाता। अतः यह संसार प्रेम लायक नहीं है।

अगर दुनियाँ प्रेम के लायक नहीं है।

तो हमें कथा करना सही है।

दुनियाँ में मैत्री, प्रमोद कारुण्य और माध्यस्थ इन चार प्रकार के से अपने व्यवहार को व्यवस्थित करना होता है।

१. मैत्री-दूसरों को दुःख न हो ऐसी अभिलाषा रखना मैत्री है।

२. प्रमोद-मुख की प्रसन्नता के द्वारा भीतर भक्ति और अनुराग का होना प्रमोद है।

३. कारुण्य-दीनों पर दया भाव रखना कारुण्य भाव है।

४. माध्यस्थ-सुख-दुख में समभाव रखना माध्यस्थ भाव है।

इन चारों प्रकार के T. P. में संसार में माध्यस्थ वाला T. P. प्रयोग करें अर्थात् इस संसार में रहो तो इससे चिपक कर न रहो मात्र जुहार-विहार या हाय हैलो, करते रहे। संसार से चिपके तो दुःख होगा क्योंकि संयोग में जितना सुख नहीं होता उससे कई गुना दुःख होता है। जैसे एक बुढ़िया थी जो बचपन में मर गई थी अर्थात् जैसे ही धर्म का प्रारम्भ किया और मर गई उसके बुढ़ापे में कोई भी न था मात्र एक नाती और वह भी एक दिन बूढ़ी माँ को विलखता छोड़ गया। तो दुःख से दुःखी, वियोग से पीड़ित व बड़ी शीघ्रता से बुद्ध के पास गई। उन्होंने कहा-किसी ऐसे घर के सरसों लाओ जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो, बस आपका नाती जिंदा कर दूँगा। सरसों लाने में असमर्थ रही तो बुद्ध बोले यह संसार है जिसके सौ सगे हैं उसके सौ दुःख हैं। जिसका एक सगा है उसको एक दुःख है। पर जिसका एक भी सगा नहीं है उसको एक भी दुःख नहीं है। अतः संसार में रहो तो पर संसार से चिपको मत। उससे मात्र अपना स्वार्थ सिद्ध कराने तक ही अपना मानो। जैसे मछली कीचड़ में रहकर भी कीचड़ से लिप्त नहीं रहती बल्कि साफ स्वच्छ रहती है उसी प्रकार हमें भी सांसारिक झमेलों में नहीं फँसना चाहिए। अपने T. P. को सदा ही संसार के विकल्पों से जब तक हम रहित नहीं बनाएंगे तब तक हम अनश्वरता को प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

‘सुव्रत’ जग में यूँ रहो, ज्यों घर में मेहमान।

मालिक जैसे ना रहो सभी बड़ों भगवान।

आपके T. P. में मात्र एक ही विचारधारा होनी चाहिए कि मुझे संसार से

मुक्त होना है तो जरूर होंगे अगर आप का ध्येय ही आपकी दुनियाँ है तो उसकी प्राप्ति आपको अवश्य होगी।

आज तक जितने लोग भी महानता को प्राप्त हुए हैं तो उन्होंने मात्र अपने T. P. को सही निर्देश देकर पुरुषार्थ किया है जितने पतित है वे सब मात्र अपने T. P. को गलत निर्देशित करके ही पतित हुए हैं। अतः अपना T. P. बदलो आपका संसार बदल जाएगा क्योंकि दूषित पानी और दूषित अन्न से भी खतरनाक है दूषित दृष्टि और दूषित दृष्टि से भी खतरनाक महाभयंकर है दूषित विचार।

“सोच को बदलो सितारे बदल जाएंगे,
नजर को बदलो नजारे बदल जाएंगे।
कश्तियों बदलने की कोई जरूरत नहीं,
दिशाओं को बदलो किनारे बदल जाएंगे॥”



गुरु मंत्र-5

संसार क्या है सजा या मजा ?

विचारों को बदलो,
संसार बदल जाएगा,
विचारों को सम्भालो,
संसार सम्भल जाएगा।
अपना विचार ही
अपना संसार है मित्रों,
अपने विचारों को सँवारों
संसार संवर जाएगा॥

संसार के विचार में कुछ विचार पिछले पृष्ठों को आपने पड़े हैं और यह भी पढ़ा होगा कि संसार त्याज्य है, हेय है, नश्वर है, भ्रम है, दुख है, अंधकार है, झूठे कसमे वादे हैं इत्यादि इत्यादि। आखिर संसार को इसका प्रतिकूल क्यों स्वीकार किया ? आखिर क्या है यह संसार, जिसमें हम रहना पसंद नहीं करते क्या संसार के सभी लोगों की संसार के प्रति यही मान्यता है या फिर कुछ-कुछ लोगों को ही ऐसा T. P. है। तो आइए अपने T. P. से संसार को समझने T. P. का विकसित करते हैं और समझते

हैं आखिर क्या है संसार ?

1. पर्यटन भूमि
2. इंद्रिय लम्पटता (आशक्ति)
3. खुजली खुजलाना
4. मक्खी का गुड़ से लिपटना जाना
5. कुत्ते का सूखी हड्डी चबाना
6. काँटों का ताज या काँटे की से ?
7. रंगमंच (सिनेमा हॉल)
8. भयंकर तूफान उठता जलीय जीव जंतु सहित

1. पर्यटन भूमि

इस असार संसार में हम सभी यात्री हैं मुसाफिर हैं और दुनियाँ मुसाफिर खाना या यात्री प्रतीक्षालय या दुख दर्द से भरी एक सराय। जब भी हम सभी अपने परिवार के साथ सही पिकनिक या सैर-सपाटे हेतु जाते हैं तो बस थोड़ी सी व्यवस्था के साथ कुछ समय के लिए ही जाते हैं उस यात्रा को स्थाई कभी भी नहीं समझते, तो फिर संसार की यात्रा को स्थाई क्यों समझते हैं ? इसका जवाब शायद यही होगा कि हमने संसार की सराय को स्थाई मान रखा है। यह संसार जो हमें मिला है आखिर क्यों हमारी अनुसार शायद इसलिए—

**“रास्ता मिला तो सफर मंजिल का करो
रास्ते में पड़े रहना कचरे की निशानी है।”**

अगर औसतन देखा जाए तो हम लगभग पाँच सौ (५००) से हजार (१०००) घंटे तक का समय यात्रा में निकाल देते हैं प्रतिवर्ष।

इतना समय यात्रा में देने पर भी कोल्हू के बैल की भांति वही के वही, जहाँ के तहाँ। कंडक्टर की भांति सफर रोड का और जाना कहीं भी नहीं जैसे रेगिस्तान के दिन-रात चलने पर भी ऐसा लगता है कि हम वही के भी हैं पर क्या इसी का नाम संसार है यह तो T. P. का बहिष्कार है यात्रा में जैसे योजना टिकट, आंतरिक व्यवस्था (खान-पान) बाह्य व्यवस्था और मेल मिलाप (आवागमन) आदि की व्यवस्था करके यात्रा प्रारंभ करके मंजिल पर पहुँचते

हैं वैसे ही संसार रूपी पर्यटन भूमि में भी यही प्रक्रिया अपनाने के लिए संसार मिलता है। परन्तु संसार में—

कदमों को रोकने का हुनर नहीं आया ।

सभी मंजिलें निकल गई पर घर नहीं आया॥

ऐसा आखिर क्या हुआ ऐसा आखिर क्या हुआ क्योंकि अगर देखा जाए तो हम पथ पर चले ही नहीं, क्योंकि पथ वही कहलाता है। जो मंजिल तक पहुँचाता है और हमें अभी तक मंजिल नहीं मिली इसका तात्पर्य यह है कि हमने अभी तक पथ पर कदम बढ़ाया ही नहीं, जिन लोगों ने कदम बढ़ाए हैं उन्हें मंजिल का लाभ भी मिला है। हमने तो मात्र आज तक बातें ही की है—

दीपक की भाँति संसार में चलता है कोई-कोई।

वृक्ष की भाँति संसार में फैलता है कोई-कोई॥

सब 'प्रवीण' की आदर्श की बातें करते हैं।

लेकिन आदर्श की राह पर चलता है कोई-कोई॥

अतः संसार रूपी पर्यटन भूमि में न उछलकर मंजिल का संकल्प कर, रास्ता खोज कर चलने के लिए T. P. तैयार करें, बिना T. P. के चलना असंभव है क्योंकि—

“ये पैर क्या चढ़ते

इरादों ने चढ़ाये पहाड़ हैं”

और भी—

“पर्वतों पर पैरों से नहीं,

इरादों से चढ़ा जाता है।

आसमान में पंखों से नहीं,

होंसलों से उड़ा जाता है॥”

यह पर्यटन भूमि उन लोगों के लिए पर्यटन भूमि है जो इसी में अपना जीवन तलाशते हैं। हमें तो इस पर्यटन से बहुत आगे और बहुत ऊँचे जाना है, अतः अपने T. P. से ऐसा T. P. तैयार करना है जो इस पर्यटन भूमि से बाहर दे।

“सीढ़ियाँ उनके लिए बनी हैं

जिन्हें छत पर जाना है।

**आसमाँ पर जिसकी नजर है
उन्हें अपना रास्ता खुद ही बनाना है।”**

अर्थात् इस पर्यटन भूमि में पूरा संसार ही तो उलझा है। क्योंकि हर व्यक्ति संसार की गलत मार्ग पर चल रहा है और अपने आप को सही मानकर औरों को भी उलझा रहा है। लेकिन यही विचार श्रेष्ठ मार्ग को भ्रष्ट करता है और खोजने ही नहीं देता, लेकिन हमारा मानना है कि श्रेष्ठतम मार्ग जब तक नहीं मिलता, तब तक श्रेष्ठ मार्ग खोजने की प्रतीक्षा के बजाय हम गलत रास्ते से बचते रहें और अच्छे रास्ते को अपनाते रहे।

**“वक्त से जंग जारी रखो,
सबसे बनाकर यारी रखो।
यहाँ तक कि अपने दर्दों गम हैं,
खुद अपनी जवाबदारी रखो॥”**

जिसने T. P. अपने का उपयोग इस पर्यटन भूमि से बाहर निकलने के लिए किया वह वास्तव में आदर्श पुरुष ही बन जाएगा।

**“है वही शूरमा इस जग में,
जो अपनी राह खुद बनाता है।
कोई चलता पद चिन्हों पर,
कोई पद चिन्ह बनाता है।
सफल वहीं होता है॥”**

एक बार एक राजा ने ढिंढोरा पिटवाया कि अमुक दिल सायंकाल तक जो मुझसे मिलने आएगा उसे मैं अपने राज्य का एक हिस्सा दे दूंगा। तब उसके प्रधानमंत्री ने कहा-महाराज,आपसे मिलने बहुत से लोग आएंगे और यदि सभी को उनका भाग देंगे, तो राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, ऐसा अविचार पूर्ण काम न करें। राजा ने कहा प्रधानमंत्री जी, आप चिंता ना करें, देखते रहो, क्या होता है ? और निश्चित दिन जब सबसे मिलना था उस दिन राजमहल के बगीचे में राजा ने एक विशाल मेले का आयोजन किया। मेले में नाच-गाना और शराब की महफिल थी और खाने के लिए अधिक स्वादिष्ट पदार्थ थे। मेले में कई खेल भी हो रहे थे। राजा को मिलने वाले कितने ही लोग नाच-गाने में

अटक गए, कितने सुर-सुन्दरी में, कितने ही खाने-पीने में, घूमने फिरने के आनंद में डूब गए। इस तरह समय बीतने लगा, परन्तु इन सभी के बीच एक मनुष्य ऐसा भी था जिसने आकर्षण की तरफ देखा भी नहीं क्योंकि उसके मन में निश्चित ध्येय था की उसे राजा से मिलना है। इसलिए बगीचा पार करके राजमहल के दरवाजे पर पहुँच गया। पर वहाँ नंगी तलवार लेकर दो चौकीदार खड़े थे, उन्होंने उसे रोका। उनके रोकने के अनदेखा करके और चौकीदार को धक्का मारकर वह दौड़कर राजमहल चला गया, क्योंकि वह निश्चित समय में राजा से मिलना चाहता था। जैसे ही वह अंदर पहुँचा, राजा उसे सामने ही मिल गए और उन्होंने कहा-मेरे राज्य में कोई मनुष्य तो ऐसा मिला जो किसी प्रलोभन में फँसे बिना अपने ध्येय तक पहुँच सका। तुम्हें मैं आधा नहीं पूरा राजपाट दूँगा। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे।

अब हमारा T. P. अगर ऐसी भावना बनाता है कि इस पर्यटन भूमि से हमारी यात्रा प्रारम्भ हो मुक्ति के द्वार की। अगर यह यात्रा T. P. से प्रारम्भ होती है तो इस जीवन में भले ही मंजिल न मिले पर कुशल यात्री तो बन ही जाएंगे।

“चलता रहूँ मैं पथ पर
चलने में माहिर बन जाऊँगा।
या तो मंजिल मिल जाएगी
या अच्छा मुसाफिर बन जाऊँगा॥”

अगर अच्छे यात्री बन गए तू मंजिल देर सवेर मिल ही जाएगी लेकिन गफलत में तो वे लोग हैं, जिन्होंने अपना T. P. ही नहीं बनाया है इस पर्यटन भूमि से निकलने का।

आज लोगों ने दुनियाँ में
इमारतें भले ही ऊँची बना लीं
पर दिल छोटा कर लिया
रास्ते चौड़े कर लिए पर
नजरिया तंग कर लिया
दूरियों को कम कर किया
पर फासला बड़ा लिया।

इन सभी चीजों का एक ही समाधान है जो यह है कि T. P. बनाए महान और बने प्रधान, क्योंकि यह दुनियाँ जैसे पर्यटन स्थल है उसी तरह महल नहीं है अपना स्थाई मुकाम नहीं है मात्र एक किराए का घर है सराय है।

महल या सराय

एक महात्मा किसी राजा के महल में दाखिल हुए। उनके व्यक्तित्व कि गरिमा के कारण किसी भी द्वारपाल में उनको रोकने का साहस नहीं हुआ और वे सीधे उस स्थान तक पहुँच गए जहाँ राजा अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था।

राजा ने महात्मा को देखकर पूछा—आप क्या चाहते हैं ?

महात्मा ने कहा—मैं इस तरह से रात गुजारना चाहता हूँ।

राजा ने कहा—लेकिन यह कोई सराय नहीं है यह मेरा महल है।

महात्मा ने प्रश्न किया—क्या आप मुझे बताएंगे कि आप से पहले इस महल का स्वामी कौन था ?

राजा ने कहा—मेरे पिता, उनका निधन हो चुका है।

महात्मा ने पूछा—और उनसे पहले ?

राजा बोला—मेरे दादा, वे भी बहुत पहले दिवंगत हो चुके हैं।

महत्व ने कहा—तो फिर ऐसे स्थान को जहाँ लोग कुछ समय रहकर कहीं और चले जाते हैं, आप सराय नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे ?

राजा के पास कोई जवाब नहीं था।”

बस इसी तरह हम अपने T. P. में ऐसा प्रभाव लाएँ कि संसार अपना नहीं है वरना फिर क्या ? तो अपने T. P. में ऐसा जादू लाइए कि संसार घर ना लगे बल्कि लगे तो धर्मशाला जैसा लगे या रास्ते जैसा लगे, तो न तो रास्ते में कोई स्थाई ठहरता है, ना ही धर्मशाला में, न रास्ते की, धर्मशाला की, न पर्यटन भूमि की हमारी जिम्मेदारी है। बस यही T. P. तैयार करने में जिसने अपनी सारी ताकत झोंक दी समझ लो उसका प्रशंसनीय हो जाता है।

2. इंद्रिय लम्पटता (विषयाशक्ति)

दुनियाँ में जितने भी जीवधारी हैं दुनियाँ में जितने भी जीवधारी हैं वो सभी जीव किसी न किसी शरीर के स्वामी अवश्य होते हैं और शरीर विज्ञान

में क्रमशः शरीर के विकास को इंद्रिय के विकास के रूप में स्वीकारा है और शरीर का अंतिम विकास मन रूपी अनिंद्रिय के रूप में माना है जिस जीव में जो अंतिम इंद्रिय होती है उसका T. P. उन्हीं इंद्रियों के माध्यम से कार्य करता है। और जिन जीवों में मन होता है उन जीवों में जज. क्व. इन्द्रियों के जमीन से कार्य करता है फिर भी मुख्यता मन की ही होती है।

इंद्रिय के अपने-अपने नियत विषय होते हैं। जो मनोज्ञ और अमनोज्ञ या अच्छे और बुरे दोनों क्षेत्रों में कार्य करती हैं। चूँकि शरीर जड़ वस्तु है, और पौद्गलिक है और पाँच तत्त्वों से मिलकर बना हुआ माना जाता है।

1) पृथ्वीतत्त्व—

शरीर (28 %) मिट्टी है अर्थात् हमारामिट्टी से प्रभावित होता है उसी के अनुरूप कार्य करता है और अगर हम मिट्टी को छूना ही नहीं चाहेंगे तो हमाराप्रतिकूल ही जाएगा। आकर्षण विकर्षण गुरुत्वाकर्षण चुंबकीय गुरुत्वाकर्षण थे सब.... ही है हमारा जन्म मिट्टी में होता है और अंत में जलकर मिट्टी की हो जाते हैं जन्म के समय भी लगभग ढाई किलो और हमारी अंतिम राख भी ढाई किलो अर्थात्—

“आने में ढाई किलो

जाने में ढाई किलो

फिर बीच में

क्यों हाय हाय सोच लो”

अर्थात्का समझना एवं सही प्रयोग मिट्टी पर डिपेंड करेगा। मतलबको सम्भालने की मिट्टी को अपनाना एवं उसमें रहना अर्थात् प्रकृति से साधु-संतों जैसे जुड़ना होगा। तभी सही दिशा में प्रयोग करेगा और कुछ नहीं मात्र मिट्टी बायप्रोडक्ट है। जो हमें मिट्टी (दुनियाँ के दलदल) से ऊँचा कि नहीं उठाती बल्कि सुप्रीम पॉवर तक बनाती है। यह कार्य सब पर डिपेंड करेगा मिट्टी को धरती माता कहा है।

2) जल तत्त्व—

शरीर में लगभग 70 % पानी/जल तत्त्व होता है। दुनियाँ में 30% मिट्टी एवं 70 % जल है। ब्रह्माण्ड का या लुक्का या छोटा रूप हमारा शरीर है अर्थात्

का शुद्धिकरण जल पर डिपेंड करता है। अतः हमारे चाहे धार्मिक ग्रंथ हों या वैज्ञानिक ग्रंथ सभी का यही कहना है कि—

**“पानी पियो छान के
मित्र बनाओ जान के”**

यही जल का प्रयोग हमारेको शुद्ध शान्त एवं जीवन बनाता है। जैसे हमारा मोबाइल बिजली से चार्ज होता है। वैसे ही हमाराजल से रिचार्ज होता है। और शुद्ध बनता है। इसी से कई-कई मान्यताओं में जल को देवता कहा जाता है।

**“रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून॥”**

बिना पानी हमारा T. P. भी संसार अवधि में कार्य करने में कठिनाई का अनुभव करेगा। अर्थात् को T. P. को व्यवस्थित करने को जल का महत्व समझेंगे तो ही संभव हो पाएगा अन्यथा नहीं।

3) अग्नि तत्त्व—

प्रत्येक शरीर में अग्नि तत्त्व जब तक रहता है तभी तक जब जीवन है, जब तक जीवन है तभी तक ज्वकक है। अतः भारत जैसे धार्मिक देश में अग्नि को देवता मानकर उपासना की जाती है। परन्तु जब तक लेंस की भाँति सूर्य की किरणों को जब तक एकत्रित नहीं किया जाता तब तक अग्नि उत्पन्न नहीं होती है। संगठन में शक्ति। अतः योग में सूर्य नमस्कार कर सूर्य को देवता मन तथा अग्नि की उपासना की जाती है।

**जब तक अंदर आग रहेगी
जारी भागमभाग रहेगी॥**

अतः T. P. का शुद्धिकरण स्वर्णवत अग्नि उज्ज्वल राख होता है वैसे ही आग का समय प्रयोग T. P. को शुद्ध बनता है।

4) वायु तत्त्व—

जितनी भी यांत्रिकी है वह सब वायु पर आधारित है, हाथों में हिलने वाले पंखे से लेकर हवाई जहाज ये पूरे यंत्र एकमात्र वायु से संचालित होते हैं। और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हमारा शरीर भी वायु का ही यन्त्र

है। इसी वायु से हमारा पूरा शरीर संचालित होता है इसका प्रमाण है कि जब कोई मर जाता है तो दुनियाँ कहती है। इसकी तो फुस्स हो गई (हवा निकल गई), हमारे शरीर में ६४ प्रकार की हवाएँ (वायु वात) और आयुर्वेद में कहा जाता है कि सारे रोग और निरोग एकमात्र वात, पित्त, कफ से ही होते हैं और जब शरीर का वायु तत्त्व संतुलित होता तभी हम स्वस्थ होते हैं।

और जब हम स्वस्थ होते हैं तभी हमारा T. P. भी स्वस्थ होता है और जब हमारा T. P. अस्वस्थ होता है तभी पृथ्वी आदि सभी तत्त्व असंतुलित होते हैं अतः इन चारों तत्त्वों को संतुलित करते ही T. P. भी संतुलित हो जाता है। और T. P. संतुलित होने पर अपने शरीर को वह जैसा भी आदेश निर्देश देता है शरीर वैसा ही काम करता है, अतः वायु प्राण स्वीकारा है।

5) आकाश तत्त्व—

अपने शरीर में रहकर भी अपने T. P. को बिल्कुल भी आकाश जैसा शान्त बना देना का T. P. सुप्रीम पॉवर है जिस पर बाहर का कोलाहल कुछ भी असर नहीं डाल सकता है यही आकाश तत्त्व हमारे T. P. को संतुलित/विकसित करता है इन पाँचों तत्त्वों शरीर/ इन्द्रियों की रचना करते हैं जिससे T. P. संचालित होता है। पर इन्हीं का दुरुपयोग अर्थात् जो पाँच इन्द्रियाँ होती है जो इस प्रकार है—

| क्रम | इंद्रियों के नाम | कार्य | दुरुपयोग |
|------|------------------|---------------------|---------------------------|
| 1 | स्पर्शन (त्वचा) | आठ प्रकार के स्पर्श | प्रतिकूलता में दुःखी होना |
| 2 | रसना (जीभ) | पाँच प्रकार के रस | जहाँ लोलुपी होना |
| 3 | घ्राण (नासिका) | दो प्रकार की गंध | मात्र सुगंध की चाह |
| 4 | चक्षु (आँख) | पाँच प्रकार के वर्ण | सुन्दर दृश्य की चाह |
| 5 | कर्ण (कान) | सात प्रकार के स्वर | अच्छ सुनना बुरा सुनना |

इन इंद्रियों की आसक्ति आज तक हमारा T. P. हमेशा पतन की राह ही चला है पर अगर आसक्ति की परिभाषा अगर समझी हो शायद संभव हो सकता है।

“जो आ तो सकती है पर जा नहीं सकती” वह कहलाती है आसक्ति।

अतः इंद्रियों की लम्पटता T. P. की शत्रु है, क्योंकि इनसे शरीर की हानि,

शरीर की हानि से जिंदगी में परेशानी ही परेशानी, जब कभी आपने देखा हो की इन्द्रियों के गुलामों का क्या होता है।

| क्रम | इन्द्रिय | लम्पटता से हानि |
|------|----------|-----------------|
| 1 | स्पर्शन | हाथी |
| 2 | रसना | मछली |
| 3 | घ्राण | भौरा |
| 4 | चक्षु | पतंगा |
| 5 | कर्ण | हिरन / साँप |

इनसे वशीभूत होने पर जब ये जीव अपना T. P. खो देते तो इस मानव का क्या होता होगा, जो पाँच इंद्रियों के वशीभूत होकर अपने पाँवर या T. P. को खो देता है। अतः शरीर/इंद्रियाँ खराब हों उससे पहले-२ अपना T. P. इतना मजबूत कर लें की संसार से पार होने का रास्ता प्रशस्त हो सके।

आखिर इस शरीर के इंद्रियों की अर्थ क्रिया (प्रयोजन/उद्देश्य) क्या है और हमें इनकी प्राप्ति क्यों हुई कैसे हुई ? ये हमारे साथ कब तक रहेगी ? इन सब बिंदुओं का समीचीन चिन्तन करके सदुपयोग करना ही T. P. है।

अतः कहा जा सकता है कि-

“जलना छोड़ो
जलन के पहले
तू ज्योति जले”

और T. P. को मनुष्य पर्याय में ही सर्वोच्च बनाया जा सकता है क्योंकि-

"Super Power Transmission tower Human order"

कोई व्यसन हो वह T. P. को Powerless करता है। अतः Powerfull बनाने का आसक्त नहीं सशक्त बने, वो भी आंतरिक मजबूती। परोपकार से भरो तो भविष्य में इतना मिलना संभव है क्योंकि किसी चीज का दुरुपयोग उपयोग करने उसका लाइसेंस निरस्त कर दिया जाता है वैसे इंद्रियों का।

अतः—

हृदय को प्रेम से भरो,
मस्तिष्क को ज्ञान से भरो,
तथा शरीर को सेवा में संलग्न रहो!!

इन्द्रियों में रत रहना नहीं बल्कि आत्मा में/ परमात्मा में रत रहना T. P. है।

3. खुजली खुजलाना—

यह भी मात्र हमारी मानसिकता या विचारधारा ही है और यही है संसार खुजली खुजलाना मतलब जैसे दाद, खाज, खुजली, नमक रोग शरीर में होने पर उसे खुजलाने पर आराम/ शान्ति की अनुभूति होती हुई सी लगती है। पर खुजलाने के बाद वह घाव बढ़ने पर बाद में पहले से ज्यादा दर्द होने लगता है, वैसे ही सांसारिक या इन्द्रिय विषयों के प्रयोग में जितना ज्यादा हम आगे बढ़ेंगे उतना ही दुःखदायी होगा! अतः इन विषयों के प्रयोग मात्र आवश्यकता पूर्ति को ही होना चाहिए, क्यों कि आवश्यकताएं तोड़-जोर/भिखारी की भी पूरी हो जाती है परन्तु ख्वाहिशें/इच्छाएँ तो बादशाहों की भी पूरी नहीं हो सकती और आवश्यकताओं की पूर्ति करना सबसे बड़ा T. P. है और यही है संसार से पार होना और आशाओं का अम्बार लगाना ही खुजली का संसार है इसीलिए अपने T. P. में व्यस्त रहे अन्यथा संसार की खुजली!

एक बार एक खुजली को बैठे-२ वेचैनी हुई वह किसान के पास पहुँची किसान दिन-भर व्यस्त रहा इसलिए खुजली का हाल चाल नहीं पूछ पाया शाम को खुजली ने दुःखी होकर किसान से कहा कि आप ने मुझे दिन भर नहीं खुजाया क्या कारण है, किसान बोला हमें समय ही नहीं है खुजलाने का, आप किसी दुकानदार के पास जाए वह दिनभर फुरसत रहता है, उसी के पास जाइये वह आपको खुजलायेगा। खुजली सेठ के पास पहुँची उसे सुकून मिला, अतः तभी से खुजली सेठ साहूकारों के पास रहने लगी है। अर्थात् सुविधाओं से दुविधाएँ उत्पन्न होने का नाम संसार है T. P. का दुरुपयोग है। खुजली एक मानसिक रोग है। इससे बचना ज्जक्कका प्रयोग है। इस खुजली को जितना खुजलाओ उतनी बढ़ती जाती है। अर्थात् संसार के बारे में जितना T. P. का प्रयोग करोगे T. P. उतना ही संसार में उलझता जाएगा और जैसे खुजली को

अगर नहीं खुजलाते हैं तो वह दुख दर्द पैदा नहीं करती है अर्थात् अगर T. P. को सांसारिक विषयों में नहीं उलझाते हैं तो वह संसार से निकल जाता है।

4. मक्खी का गुड़ से लिपटना जाना—

जैसे मक्खी लालच के वंश में गुड़ पर बैठ जाती है तब उसके पैर गुड़ में चिपक जाते हैं वह निकलने का जितना प्रयास करती है उतनी उतनी और चिपकती जाती है और अंत में पछताते हुए तड़प कर मर जाती है।

माखी गुड़ में गाड़ी रहे, पंख रहे लिपटाए।

हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाए॥

संसार के प्रति यह लालच आखिर है क्या, केवल एक मानसिकता अर्थात् मात्र T. P. अगर यह T. P. मक्खी जैसा है तो सचमुच हमारी दशा संसार में मरने जैसी होगी। और अगर यही आदेश निर्देश हमने अपने T. P. को खो दिया तो हमारा T. P. इसी के अनुसार कार्य करेगा मतलब T. P. ही मक्खी जैसा चिपका के मार सकता है और T. P. ही हमारा मुक्ति जैसा पार उतार सकता है। फैसला आपके T. P. पर आधारित है।

5. कुत्ते का सूखी हड्डी चबाना—

जैसे कुत्ता सूखी हड्डी चबाता है तो वह सूखी हड्डी उसके तालू को काट देती है जिससे हड्डी में खून जाता है। और कुत्ता समझता है कि मैं यह हड्डी का खून है। लेकिन थोड़ी देर में जब उसके तालू में दर्द होने लगता है। तो वह कुत्ता हड्डी को खाना पसंद नहीं करता बस यही हाल हर संसारी का प्राणी का है जो सांसारिक विषयों में सुख मानता है, खोजता है परन्तु वास्तविक सुख तो अपने अंदर है। यह सुख मात्र एक T. P. है जिसकी प्राप्ति भी T. P. की दम पर होती है। अन्यथा हमारा T. P. कुत्ते जैसा दुखी बना रहता है।

इसलिए अगर कुत्ते की हड्डी जैसा T. P. है तो अनन्त संसार की व्यवस्थाएँ हैं। अन्यथा अनन्त संसार की समाप्ति की व्यवस्थाएँ हैं यह सारे कार्य मात्र एक T. P. पर होते हैं।

6. काँटों का ताज या कांटे की से ?—

जैसा अत्यन्त स्पष्ट है कि ना तो कोई काँटों का ताज पसंद करता है और ना ही कोई काँटों की सेज। फिर भी T. P. में यही करता है। तो फिर इनसे मुक्ति

कैसे मिलेगी ? मात्र T. P. से अर्थात् आज हमें जो काँटों का ताज सेज मिले हुए हैं वह मात्र T. P. के कारण और फूलों का ताज या सेज जब भी मिलेंगे वह भी मात्र T. P. के दम पर मिलेंगे। अर्थात्

“जिस जिसने जीना सीख लिया है, मरने का अधिकार उसी को।
जो बलिदानों के प्रेमी हैं, सारे जग का प्यार उसी को॥
जो काँटों के पथ पर आया, फूलों का उपहार उसी को।
जिसने प्रभु को पूछ लिया है, आत्म का दीदार उसी को॥”

अर्थात् आज भले ही T. P. का प्रतिकूल समय हो। पर इसी प्रतिकूलता में अनुकूलता के T. P. को विकसित करने पर फूलों का ताज का सेज मिलेगा।

7. रंगमंच (सिनेमा हॉल)–

इसी का दूसरा नाम है माया नगरी अर्थात् संसार और कुछ नहीं एक रंगमंच है या सिनेमा हॉल। जो हम जैसे प्राणियों को नाचने को मजबूर करता है तो हम इस माया नगरी की चमक-दमक में अपने T. P. को उलझा देते हैं। जब हमारा T. P. इस चकाचौंध में अंधा हो जाता है। तो इसको मात्र माया माया ही माया नजर आती है यही T. P. हमें तरह-तरह के अभिनय करने को मजबूर करता है। ऐसा बड़े छोटे सभी जैन आचार्यों का T. P. है और इससे बचने का यही उपाय है कि अपने T. P. में ऐसा नजरिया विकसित करें जैसा रंगमंच का दर्शक। मतलब रंगमंच को जैसे दर्शक मात्र मनोरंजन ही देखता है उसे अपने जीवन में आदर्श नहीं बनाता है। उसके साथ रोना-धोना नहीं करता अगर यही हाल हमारे T. P. में विकसित हो जाए कि हम संसार को मात्र एक मूकदर्शक बना कर देखें उसे अपने अंदर प्रवेश न करने दें। उसको नजरअंदाज करते चलें तो समझो कि हमारा T. P. सबसे जबरदस्त है। जो रंगमंच तो क्या अंगमंच (शरीर) से भी छुटकारा दिला के सर्व सुखी सम्पन्न करा सकता है।

जैसे आया (धाय) एवं बच्चे जैसा हमारा एवं संसार का सम्बंध होना चाहिए। चले गए तो बच्चों का रोना धोना नहीं! अतः आत्मा और संसार का जुड़ाव इससे विकृति के भाव भी श्रेष्ठ T. P. है। इस जब इस रंगमंच (भूमि) में अपना T. P. विकृत हो जाता है। तो यह रंगभूमि, रणभूमि में परिवर्तित हो जाती है। और जब हमारा T. P. व्यवस्थित हो जाता है यही रंगमंच, सिद्धमंच बन जाता है।

8. भयंकर तूफान उठता जलीय जीव जंतु सहित (तूफानी समुद्र)—

वैसे भी समुद्र को अपनी भुजाओं के दम पर पार करना नामुमकिन है और उस पर भी भयंकर जलीय जंतुओं के साथ तूफान वाला समुद्र, क्या कोई कमजोर T. P. से बात कर सकता है। असंभव अर्थात् ऐसा संसार समुद्र एकमात्र T. P. के दम पर ही पार किया जा सकता है। क्योंकि सारे जोखिम के कार्य मात्र T. P. से ही होते हैं। अतः अपने ज्जक्कको मात्र बदलने से ही किनारा नजर आएगा अन्यथा डूब जाना तो पक्का है अतः डूबने वाला T. P. न बनाकर पार होने वाला बनाये।

दुनियाँ दुरंगी

एक व्यक्ति या तो, सम्पन्न घराने का परन्तु साधु संगति के कारण उसका घर गृहस्थी में उसका मन नहीं लगता था। जब उसका वैराग्य गले तक हो गया तुम उसने घर छोड़कर जंगल में रहने प्रारंभ कर किया। वहीं पर एक कुटी बनाकर रहने लगा। रात में कुटी में और दिन में चबूतरा बना लिया एवं उस पर बैठा जाता था। जब वह चबूतरे पर बैठा था उस समय वहाँ से कुछ लोग निकले एवं साधु के चबूतरे पर बैठकर देखकर कहने लगे कि साधु तो बन गए परन्तु कषाय नहीं गई। यह सुनकर साधु ने चबूतरा तोड़ दिया और नीचे बैठ गया। जब भी लोग लौटकर आए तो साधु को नीचे बैठा पाया। तो वे ही लोग कहने लगे कि साधु तो बन गए परन्तु कषाय नहीं गई। चलते चलते लोगों की बातें सुनना साधु को ठीक नहीं। अपने काम में लगे रहना चाहिए अपने T. P. को अगर वहाँ-वहाँ विचलित किया तो और कुछ नहीं होगा। मात्र अपना ही बंटधार होगा। अतः दुनियाँ के स्वभाव से अपने आप का कभी नहीं भटकना ही ज्जक्कका प्रभाव क्योंकि T. P. भी दुरंगी दुनियाँ के समान दुरंगी है। और दुनियाँ का हाल T. P. को विचलित करने का ही होता है क्योंकि—

अंधे के हाथ में टॉर्च,
गूंगे के हाथ में माइक ओर,
बहरे के हाथ में रेडियो तथा,
भिखारी के हाथ में मोबाइल,
वाह क्या है जमाने का स्टाइल।

यह जो जमाने का अंदाज है वह मात्र हमारे T. P. पर ही निर्भर करता है अतः दुनियाँ के अंदाज से अपने को T. P. को प्रभावित कर कमजोर बनाना अपने संसार को बढ़ाना है। और यही पद्धति हमारे अंदर एक स्वप्न का निर्माण करती है अर्थात् अगर हमारा जज्बक अपने लिए स्वप्न जैसा कार्य करना प्रारंभ करें तो यह संसार सपने जैसा हो गया। अतः कहा जा सकता है कि—

“संसार आसार है
फिर क्या उससे घ्यार है ?
अगर उसका परिहार है
तो संसार से बेड़ा पार है।”

“संसार एक सपना।
कोई नहीं अपना॥”

संसार स्वप्न जैसा है, जिसमें वृद्धावस्था का भय एवं जवानी का मोह सताता है अब क्या करें जो पास में है उसे छोड़कर आगे पीछे अर्थात् वर्तमान छोड़कर भूत भविष्य का T. P. ही तो स्वप्न बन संसार है तो रोना किसे।

एक राजा था एक रात जब वह सोया तो उसने सपने में अपने राज्य से सात गुना बड़ा राज्य एवं सात राजकुमार देखें। जो एक भूकंप में नष्ट हो गए। जैसे ही नींद खुली तो यथार्थ का इकलौता राजकुमार मर चुका था पत्नी ने राजा से पूछा— क्या हुआ ? राजा बोला— क्या करें सच्चाई के एक राजकुमार को रोऊँ या स्वप्न के सात को रोऊँ यह और कुछ नहीं मात्र अपना T. P. है।

“आखिर क्या है स्वप्न
और कुछ नहीं मात्र T. P. ”

अगर T. P. ही स्वप्न है तो हम अपने T. P. के दम पर हम स्वप्नों के दम पर स्वप्न रूपी संसार की रचना समाप्त भी कर सकते हैं अर्थात् संसार अपनी सच्चाई नहीं है बल्कि संसार की समाप्ति ही सत्य है। तो हम अपना T. P. करें किस पर केंद्रित करें। सत्य पर कि स्वप्न पर। तो हमारे T. P. का प्रोग्राम यह है कि सत्य पर।

एक बार सत्य और स्वप्न दोनों के विवाद में खुद को श्रेष्ठ करने के लिए स्वप्न आकाश में एक पल में उड़ने लगा ओर यथार्थ अकेला जमीन में पैर

गढ़ा कर खड़ा हो गया। अर्थात् स्वप्न अकेला आकाश में अटक जाता है और अर्थात् भूमि पर भटक जाता है। दोनों के मेल हो जाए तो आकाश की ऊँचाई जमीन छू सकती है। अर्थात् स्वप्न देखना एकांत से बुरा नहीं है। बल्कि संसार के स्वप्न देखना बुरा है और—

जिन्हें स्वप्न देखना अच्छा लगता है,
उन्हें रात में सोना अच्छा लगता है।
जिन्हें स्वप्न साकार करना अच्छा लगता है,
उन्हें दिन रात जागना अच्छा लगता है॥

अर्थात् जिन को मात्र T. P. समझना है। उन्हें सोना (Sleeping) अच्छा लगता है और जिनको T. P. के दम पर सर्वोच्च शिखर प्राप्त करना है। उन्हें दिन में जागना अच्छा लगता है। स्वप्न और कुछ नहीं मात्र T. P. ही है अतः जहाँ कोई सपना नहीं होता वहाँ के लोग अपने T. P. को भ्रष्ट कर लेते हैं। और जो लोग स्वप्न देख कर उन्हें साकार करने का प्रयास करते हैं। अतः सपनों को थामें रखिये, क्योंकि सपने अगर मर गए तो जीवन पंख हीन पक्षी की तरह हो जाएगा। अतः—

“हकीकत से दूर है
ये ख्वाहिश मेरी
फिर भी ख्वाहिश है
एक ख्वाब हकीकत हो।”

सपने पूरे होने की उम्मीद भी व्यक्ति के जीने का कारण होती है यही जीना संसार है। अतः इस बात पर अवश्य विचार करें कि संसार में हर शक्ल में, हर रंग में, हर दुकान पर सपने टंगे होते हैं। हमारा T. P. इन्हीं के इर्द-गिर्द घूमता है अतः सपने देखना बुरा नहीं है बल्कि सपने ही देखते रहना बुरा है, उन्हें पूरा करने का प्रयास करना ही बुरा है।

“भीगते रहते हैं बारिश में अक्सर,
कभी माँगते किसी से पनाह नहीं।
हसरत पूरी न हो तो सही,
पर ख्वाब देखना गुनाह नहीं॥”

सचमुच सपने देखना बिल्कुल भी बुरा नहीं है तो सपने जरूर देखें लेकिन सपने देखने के लिए सोना जरूरी है। अर्थात् सपने उसी को आते हैं जो चैन की नींद सोते हैं।

“जब हम सोएंगे
तब ही स्वप्न में खोएंगे,
तभी उन्हें साकार करने रोयेंगे,
और जब साकार करने रोयेंगे,
तब ही स्वप्न साकार होएंगे।”

अर्थात् फर्क सिर्फ सोच का होता है वरना...

वही सीढ़ियाँ ऊपर भी जाती है और नीचे भी आती है।

“नजर का ऑपरेशन तो संभव है,
पर नजरिए का नहीं।”

“जीत हासिल करनी है तो काबिलियत बढ़ाओ,
शेर खुद अपनी ताकत से राजा कहलाता है।”

जंगल में कभी चुनाव नहीं होते इसी को कहते हैं T. P. और यही T. P. जब स्वप्न में आकर हमारा Power बढ़ाता है, तो स्वप्न साकार होने लगते हैं। लेकिन जब सोएंगे तभी तो स्वप्न आएंगे, अर्थात् स्वप्नों के लिए सोना जरूरी है।

“आलसी का सोना (Sleeping) दरिद्रता है,
पुरुषार्थी का सोना भाग्य है।”

मतलब यह हुआ ही सोना तो आवश्यक है जैसे—हवा, पानी, भोजन। इंसान भोजन के बिना कई हफ्ते गुजार सकता है वरना बिना नींद के १०-११ दिन से ज्यादा स्वस्थ नहीं रह सकता। इसलिए सोना तो जरूरी है पर उतना ही जरूरी होना चाहिए जिसमें हमारा संतुलन बना रहे। अधिक या कम या असमय या दिन में सोना हमारा जीवन असंतुलित करता है। और यही असंतुलन हमारे T. P. को असंतुलित करता है। क्योंकि इससे हमारे शरीर का तापमान असंतुलित होता है अतः निंदा के साथ विद्या संभव नहीं।

“विद्यार्थी कुतो निद्रा ।
निंदरार्थी कुतो विद्या॥”

क्योंकि सोने वाले के लिए शारीरिक ऊर्जा का जो संरक्षण होता है उससे T. P. उसी समय मजबूत होता है जब निद्रा संतुलित हो, सोते हुए व्यक्ति के परमार्थ प्रयोजन विद्या प्रतिभा सुख-समृद्धि आदि सब कुछ नष्ट हो जाते हैं अतः सोये तो पर मात्र श्वान निद्रा जैसे या अश्व निंदा जैसे। और एक सफलतम T. P. वाले व्यक्ति के लिए कभी भी सूरज विस्तर पर सोता हुआ नहीं देख सकता। अतः सूर्योदय के साथ उठ जाना चाहिए। अन्यथा T. P. गन्दा हो जाता है। असंतुलित हो जाता है। यही संसार वर्धन का कारण है।

**कबीरा सोता क्या करें, जागो जपो मुरार ।
इक दिन तो सोना लंबे पाव पसार॥**

अगर आप जिंदगी में मात्र पलक झपकने का समय जोड़ते हैं तो जीवन में लगभग डेढ़ से दो वर्ष का समय अँधेरे में निकल जाता है। तो फिर आठ घंटे की औसत से जीवन का अँधेरे का समय अगर निकाला जाए तो कितना होगा। तो फिर फूलों की शैय्या पर सोना कितना खतरा होता होगा।

एक राजा था प्रतिदिन फूलों की शैय्या पर विश्राम करता था। वह शैय्या एक दासी प्रतिदिन तैयार करती थी। एक दिन उसने उस फूलों की शैय्या पर कुछ समय के लिए जैसे ही सोकर देखा तो उसकी नींद लग गई। इतने में राजा आ गया राजा ने उसे सोता हुआ देखकर सौ हण्टरों की सजा सुनाई, दासी को जैसे ही पहला हंटर पड़ा तो वह हँसने लगी। और जैसे-जैसे उस पर हंटर पढ़ते जाते। वह और तेज-तेज हँसती जाती। इस पर तब राजा ने क्रोधित होकर हँसी का कारण पूछा ? तो दासी बोली कि मैं आपके भविष्य की स्थिति को विचार कर हँस रही हूँ। राजा ने कहा-मेरा क्या होगा भविष्य में ?

तब दासी बोली- कि जब मैं थोड़े से समय के लिए फूलों की शैय्या पर सोई तो मुझे हंटर से पिटना पड़ा, आप प्रतिदिन रातों-रात इस पर विश्राम करते हैं तो आपका क्या होगा ? यह सुनकर राजा सांसारिक भोगों से विरक्त हो गया और आध्यात्मिक की चिर निद्रा में सो गया।

“खुदा एक बार उसे ये एहसास दिला दे,
कितना इंतजार है जरा उसे बता दे,

हर पल देखते हैं रास्ता उसी का,
न इंतजार करना पड़े मुझे ऐसी नींद सुला दे।”

बस! यही है T. P. का सर्वोत्तम नजरिया और जब यह नजरिया स्वप्न से उठकर हकीकत में दौड़ता है तब ही हमें जागने का अवसर मिलता है। ऐसी नींद कि सब कुछ लुट जाता है। जो T. P. को भी सुला दे।

गाड़ी आ गई—

पत्नी और बच्चे ट्रेन से रात को तीन बजे आने थे। तो पति बारह बजे स्टेशन पहुँच गया। ट्रेन आई बच्चों ने पापा को स्टेशन पर ना पाकर रिक्शे से घर पहुँचे। तो घर पर ताला पाया, पड़ोसी बोला वह स्टेशन गए हैं। बच्चा पुनः वहाँ पहुँचा तो पिता प्रतीक्षालय में खरटि लेकर सो रहे थे। बच्चे ने जगाया तो हड़बड़ा कर उठे और बोले ट्रेन आ गई क्या? बच्चा हाँ हम लोग घर भी पहुँच चुके थे, अब घर से आपको लेने आए हैं।

“निद्रा स्वप्नों से तो T. P. खराब होता है पर दिवा स्वप्न से गुलाम होता है। जीवन में सपनों के लिए कभी अपनों से दूर मत होना क्योंकि—

**जीवन में अपनों के
बिना सपनों का कोई
मोल नहीं.....”**

T. P. भी एक सपना है और वह साकार तभी होगा। जब हम देखना शुरू करें और सपना जरूर देखें परंतु अपना नहीं, अपनों का। लेकिन ऐसे T. P. से सावधान रहना जो सिर्फ सपने ही दिखाता हो।

**“सपनों के दाम नहीं,
सपनों के नाम नहीं।
सपनों के घोड़ों पर...
किसी की लगाम नहीं।
सपनों के खोने पर
कोई रोकथाम नहीं।
सपनों के आने का...
कोई टाइम काम नहीं।”**

रात्रि के सपने में तो T. P. Powerless हो जाता है लेकिन असली स्वप्न तो वही है जो रातों की नींद हराम कर दे। ऐसे स्वप्न ही T. P. को बल प्रदान करते हैं रात के सपनों को तो सोना जरूरी है लेकिन T. P. से प्रेरित स्वप्न पूर्ण करने के लिए उठना ही वर्ना जागना जरूरी है। क्योंकि उठने और जागने में उतना ही अंतर है जितना चंद्रमा और सूर्य की रोशनी में।

आँख का खुलना = अपना

दृष्टि का खुलना = जागना

जागने और उठने के बीच के अंतर को समझें—

ईश्वर ने इंसान के रूप में जन्म देकर आप को तोहफा दिया है। जिस तरह से आप अपनी जिंदगी जिएंगे वह आपके द्वारा ईश्वर को दिया गया तोहफा होगी। सवाल यह है कि आप अपनी जिंदगी का सर्वोत्तम कैसे दे सकते हैं? आपका जन्म आपकी इच्छा से नहीं हुआ था और मृत्यु भी आपकी मर्जी से नहीं आएगी। मगर, इन दोनों के बीच का जीवन आपकी मर्जी का है। जीवन से अधिकतम पाने के लिए आपको जागना होगा। जब आप माँ के गर्भ में थे तो सो रहे थे और मृत्यु के बाद भी गहरी नींद में सो जाएंगे। इन दोनों घटनाओं के बीच में आपके पास एक ही जीवन है और एक ही मौका भी। क्या आप अभी भी अपनी जिंदगी सोते हुए गुजारना चाहते हैं? जागो। हर कोई सफल होने का सपना देखता है, लेकिन सफल वही होता है जो जागा है और जिसने उसके लिए काम किया। इसलिए जागो।

हम सभी पहले जागते हैं और फिर उठते हैं। दोनों बातों में अंतर है। आपकी सफलता और हार सिर्फ उस दिन की नहीं है बल्कि यह आपकी जिंदगी की है, जो इस गैप के बीच में है। जागने के बाद, उठने के बजाय आप कुछ देर के लिए फिर से सो जाते हो।

क्या आपने महसूस किया है कि जागने और उठने के बीच में अंतर को सरेंडर करने का कारण आपका दिन हार से शुरू होता है। जो दिन हार के साथ शुरू हुआ है आप उस दिन से और क्या उम्मीद कर सकते हैं। आप दिन के पहले अनुभव को Negative कैसे होने दे सकते हैं? आप उस पूरे दिन

Positive सोच कैसे बनाए रखेंगे जो दिन Negative सोच के साथ शुरू हुआ है।

आपने खुद पर पहली छवि बनाई वह ये है कि आपका खुद पर Control नहीं है। तो आप जिंदगी को Control करने के बारे में क्यों कहते हैं ? वहीं दूसरी ओर यदि आप इस गैप को जीत पाए तो आप जानते हैं कि आपके दिन की शुरूआत जीत के साथ हुई थी।

जो लोग सिर्फ स्वप्न देखते हैं या मात्र सोते हैं या मात्र उठते हैं। उनका जीवन आसान नहीं होता क्योंकि कितने ही स्वप्न देख लो। चिर निद्रा के उपरांत तुम्हारे स्वप्न के संसार पर संसार का कब्जा हो ही जाएगा।

अतः सोते समय निश्चित बने एवं उठते समय निष्पाप। ऐसा करने से T. P. स्वप्न को साकार करने की अवस्था में आ जाता है यह सफलता उन्हीं को मिलती है जो—

**“Early to bed and early to rise
Makes man healthy wealthy and wise”**

अर्थात् अगर T. P. साकार करना चाहते हैं तो सूर्योदय से पूर्व अवश्य उठे ऐसा करने से T. P. इतना Powerfull होता है कि हम दिन भर ऊर्जा से भरे रहते हैं। इसलिए हमारे ऋषि मुनि ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपनी साधना आदि करके क्या करते हैं ? मात्र अपने T. P. को Strong अर्थात् T. P. को Strong करने का सर्वोत्तम समय है। ब्रह्म मुहूर्त (Early Morning) अतः सर्वोत्तम T. P. वाले सुबह ही उठते हैं।

दुनियाँ में सफल होने वाले लोग इसलिए सुबह जल्दी उठते हैं—

स्टारबक्स कॉफी की प्रेसिडेंट मिशेल गास सुबह ४:३० बजे उठती है। उसके बाद वह दौड़ने जाती हैं। “The Happiness Project” के प्रसिद्ध लेखक ग्रेचेन रुबेन सुबह ६:०० बजे उठते हैं। वह परिवार के अन्य सदस्यों के उठने से एक घंटा पहले काम करते हैं। टाइम मैनेजमेंट एक्सपर्ट लॉरा वेंडरकैम ने “What the Most Successful People do before Brackfast” (पोर्टफोलिओ ट्रेड, २०१३) नाम की किताब में सुबह जल्दी उठने के फायदों के बारे में बताया है। उनमें से कुछ ऐसे हैं।

इच्छा शक्ति अधिक होगी—

सुबह के समय व्यक्ति में इच्छाशक्ति अधिक होती है। दिन के समय में आप जटिल लोगों के साथ बात करने, फैसले लेने, ट्रैफिक से जूझने में अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग कर लेते हैं। दिन के खत्म होने तक आप उत्साह और इच्छाशक्ति की कमी महसूस करते हैं।

सकारात्मक सोच बनेगी—

यदि देर से उठने के कारण आपका कोई काम अधूरा रह जाता है तो पूरे दिन मूढ़ खराब बना रहता है। सुबह जल्दी उठने से आप कामों के लिए पर्याप्त समय निकाल सकते हैं। इससे दिन की शुरूआत जीत से के साथ होती है और सकारात्मक विचार पूरे दिन बने रहते हैं।

एक घंटा अधिक मिलेगा—

सोचिये यदि आपको दिन में एक घंटा अतिरिक्त मिले तो आप क्या करेंगे व्यायाम करेंगे ? व्यायाम करेंगे। पूरा अखबार पढ़ेंगे, जबकि समय की कमी के कारण आप सिर्फ हेडलाइन पढ़ कर छोड़ देते हैं। रोज १० मिनट पहले उठना शुरू करें। धीरे धीरे जल्दी उठने की आदत बन जाएगी!

भटकाव नहीं होता—

यदि आप दोपहर या शाम तक व्यायाम या पढ़ने जैसा कुछ अर्थपूर्ण काम करना चाहते हैं, तो संभवतः कई गैर जरूरी कामों में उलझ सकते हैं। इस दौरान कई ऐसे काम भी होंगे जिनके कारण आप अपने निजी कामों के लिए समय नहीं निकाल पाएंगे।

क्योंकि इस समय वातावरण अद्भुत चमत्कारिक शक्ति होती है जो T. P. को परिमार्जित करती है। तो अब कहा जा सकता है कि—

“संसार एक सपना।
कोई नहीं अपना॥

नहीं बल्कि ये कहो कि—

“संसार एक सपना।
मात्र T. P. ही अपना॥”

नींद, स्वप्न, जागना, उठना सोना जागना यह सब संसार है परन्तु इनका

अंतर समझकर, अपने आप को मजबूत बनाना यह मात्र T. P. का आत्मबल है। अतः स्वप्न देखना बुरा नहीं है, बल्कि स्वप्न ही देखते रहना बुरा है, उन्हें पूरे करने का प्रयास न करना बुरा है। यही संसार है, क्योंकि—

“होठों पर मोहब्बत के फँसाने नहीं आते,
साहिल पर समंदर के खजाने नहीं आते।
पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी,
आँखों को, कभी ख्वाब छुपाने नहीं आते॥”

ऐसे ही अगर आपका संसार है तो भी दिखेगा, स्वप्न है तो भी। क्या दिखाना, फैसला आपका है। पर यह सब कुछ है आपका और मात्र आपका T. P. और अपने T. P. को साकार करने का सबसे आसान तरीका है कि नींद से जाग जाना। जो जागेगा वही अपने T. P. को साकार पाएगा।

□ □ □

गुरु मंत्र-6

विचार ही प्रकृति है
विचार ही मुक्ति है

संसार एक प्रकृति है,
इसकी रंग बिरंगी आकृति है।
इसमें उलझना विकृति है,
इसमें कमलवत जीना संस्कृति है॥

और

इससे ऊपर उठ जाना मुक्ति है॥

प्रकृति के प्रांगण में प्रेम एक अनूठा उपहार है जो ज्वक से प्राप्त हो सकता है। क्योंकि प्रकृति की गोद में सब कुछ है। बस पाने वाला चाहिए।

“संसार एक वृक्ष है

जिसमें T. P. अध्यक्ष है”

संसार के वृक्ष में मात्र दो प्रकार के फल लगते हैं तरह-तरह की पत्ते कलियाँ शाखायें, तना ये सब संसार के वृक्ष में होते हैं। इसकी जड़ T. P. पर आधारित होती है अतः यह कहा जा सकता है कि T. P. ही वास्तविक प्रकृति है और अगर सुख शान्ति चाहते हो तो प्रकृति से

अर्थात् अपने T. P. से जुड़ना सीखो और प्रकृति को अपने T. P. में एहसास करने का प्रयास करो।

यह प्रयास एक तरफ हमारे T. P. को बदलेगा तो दूसरी तरफ यह प्रकृति ही प्रकृति को बचा सकती है, क्योंकि आज इस विश्व पर सबसे बड़ा संकट जो मँडरा रहा है वह है प्राकृतिक असंतुलन जिसकी शुरूआत T. P. से होती है क्योंकि जो प्राकृतिक आपदाएँ हैं वे प्रकृति का क्रोध है। अतः-

**“बचाओ पर्यावरण
नहीं तो अकाल मरण”**

प्रकृति को बीमार न करें अगर प्रकृति बीमार हो गई तो हरियाली पर्यावरण और जीवन सब कुछ नष्ट हो जाएगा और जब सब कुछ नष्ट हो जाएगा तो फिर T. P. कैसे सुरक्षित रह पाएगा।

जब प्रकृति ने किसी भी जीत को खराब नहीं किया। घात नहीं पहुँचाया, परेशान नहीं किया तो मनुष्य फिर प्रकृति को तवाह क्यों कर रहा है, इसका कारण एक ही लगता है कि जिसका T. P. तबाह हो चुकता है वहीं प्रकृति को तबाह करने का विचार करता है और जिसका T. P. प्रेम करुणा से भरा रहता है वह प्रकृति को सुरक्षित करने का विचार करता है यही विचार उसी सर्वश्रेष्ठ T. P. देता है इनमें परस्पर सम्बंध है।

**“अगर T. P. अच्छा होगा तो,
प्रकृति का संतुलन अच्छा होगा,
अगर प्रकृति का संतुलन अच्छा होगा तो,
T. P. निश्चित रूप से अच्छा होगा।”**

सचमुच प्रकृति हमें प्रेम सिखाती है अगर हम प्रकृति से प्रेम करना सीख जाएंगे तो स्वाभाविक है कि हम जिससे प्रेम करते हैं उसको सुरक्षित ही रखना चाहेंगे लेकिन प्रकृति को सुरक्षित नहीं रखना चाहते हैं। इसका मतलब यही हुआ कि हमने प्रकृति से प्रेम ही नहीं किया है। तो T. P. से प्रेम हो ही नहीं सकता। अतः -

**“बचाओ (प्रकृति) हरियाली,
नहीं तो
मिट जाएगी खुशहाली॥”**

बड़े आश्चर्य की बात है कि हरियाली खाने वाले जानवरों या वन्य प्राणियों में इतनी हरियाली नहीं उजाड़ी जितनी कि आदमी ने उजाड़ी है और यह बात और आगे जाती है। कि वह हरियाली को तो खा ही रहा है साथ में हरियाली खाने वालों को भी खा रहा है। आखिर T. P. का कितना पतन हो चुका होगा इसका अनुमान लगाना भी T. P. का काम नहीं है। अतः –

“एक सीधी-सादी बात का
सीधा सा जवाब है,
कि हम खुद खराब है,
तो जमाना (प्रकृति) खराब है॥”

अतः T. P. के सुधार को–

“प्रकृति में रहें,
प्रकृति का अध्ययन करें,
प्रकृति से प्रेम करें,
प्रकृति के सान्निध्य में रहें, तो
प्रकृति कभी हताश नहीं करेगी॥”

आपकी सारी जरूरत को पूरा कर देगी पर आपका लालच पूरा नहीं कर सकती है। अतः लालच की पूर्ति को हमने अपना T. P. विकृत कर लिया जिससे प्रकृति नष्ट होने लगी। जिससे हमारा T. P. अब कभी भी नहीं सुधर सकता। काश! हम प्रकृति से प्रेम करते तो उससे हम कभी रूष्ट नहीं होते उससे विद्रोह नहीं करते उसके साथ विश्वासघात नहीं करते तो हमारा मन ही प्रदूषित नहीं होता लेकिन आज सबसे बड़ा प्रदूषण मन का प्रदूषण है, इसी से आज सारा T. P. प्रदूषित हो गया है।

हमने खुद की है
प्रकृति के साथ छेड़छाड़
इसलिए जहाँ में
आज मौसम खराब है।

जल से तन एवं सत्य से मन और ज्ञान से बुद्धि पवित्र होती है, इंसान जल का प्रयोग तो करता है परन्तु सत्य और ज्ञान का नहीं, शरीर तो जल से पवित्र बनाता है पर सत्य एवं ज्ञान से दूर भागता है। इसी से दुनियाँ में तमाम

प्रदूषणों की तुलना में मन एवं बुद्धि का प्रदूषण ज्यादा ही बढ़ गया है।

मन के भीतर मौत और मसान का निर्माण पहले होता है वातावरण एवं पर्यावरण तो बाद में दूषित होते हैं। युद्ध कि रणफेरी से लता वनस्पति आदि में धुआँ उगलती जमीन पर मनुष्य का पाश्विकतापूर्ण व्यवहार, अत्याचार, आचरण एवं परम्पराओं को ध्वांत करता है। अतः –

**“साँसें हो रही है कम,
आओ प्रकृति बचाएँ हम”**

क्योंकि मनुष्य स्वभाव की प्रकृति प्रेमी रहा है जब भी वह उदास होता है तो वह कभी नदी किनारे, कभी समुद्र किनारे, कभी झरनों के पास, कभी पर्वतों पर, कभी बाग बगीचों में अर्थात् हँसते मुस्कराते प्रकृति की गोद में चला जाता है। सचमुच प्रकृति कितनी उदार है सारे भेदभाव भुलाकर सब को गले लगा ही लेती है यह हमारे T. P. के लिए एक बहुत बड़ा Massage है कि जैसे–

**“हम उदार हैं,
अगर ऐसे ही आपके,
विचार (T. P.) हैं तो
बेड़ा पार है।
अन्यथा बंटधार है॥”**

लेकिन हमने अपना T. P. इतना बदल गया है कि हमने अपने जीने के तौर-तरीके भी बदल दिए हैं और जीवन कि अवहेलना प्रारंभ कर दी जिस प्रकृति ने हमारे ऊपर बहुत बड़ा एहसान करके हमें ऋणी बनाकर इस दुनियाँ में भेजा था शायद इसलिए कि हम प्रकृति में सुधार करें और अपना ऋण चुकाएँ। लेकिन हमने अप्राकृतिक बनकर कर्जा और चढ़ा लिया ऐसे T. P. से प्रकृति और रुष्ट हो गई। और अपने ढंग से हमारे अपराध की सजा हमें दे रही हैं। जब की प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है। तो उसका कण कण शिक्षा पूर्ण पाठ है, फिर भी वह अपने ढंग से सजा देती है। अगर आपका T. P. बिगड़ जाता है आप सब कुछ तहस नहस कर देते हैं फिर भी वह हम और दुनियाँ वाले सहन कर लेते हैं लेकिन जब प्रकृति का T. P. बिगड़ जाए तो सोचो..... विचार करो..... क्या होगा ?

इस प्राकृतिक माहौल में मौत का मरघट भी है और मंदिर का मंजर भी है, परन्तु यह सब आपके T. P. पर निर्धारित है। जब हम प्रकृति का दोहन, भू-खनन, पेड़-काटना आदि अनाचार /अत्याचार अपनी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति से करते हैं। तो या तो उसमें घन पिपासा, धनोन्माद या सतृष्णा का T. P. ही झलकता है। संतों के T. P. मात्र आत्मा तक ही नहीं रहते हैं बल्कि प्रकृति के कण कण में विभक्त भावी परमात्मा तक के होते हैं। आज विकृत T. P. के बहारों की प्रकृति ने दीवारों की विकृति खड़ी कर दी है।

दीवारों का जंगल जिसका आबादी है नाम।

बाहर से चुप- चुप है लगता अंदर है कोहराम॥

दीवारों के इस जंगल में भटक रहे इंसान।

अपने-अपने उलझे दामन इंसान झटक रहे इंसान॥

अपनी विपदा छोड़कर आए कौन किसी के काम।

बाहर.....॥

सीने खाली, आँखें सूनी चेहरों पर हैरानी।

जितने घने हंगामे इसमें उतनी घनी विरागी॥

रातें काली, सुबह मुजरिम. मुल्जिम है हर शाम।

बाहर.....॥

कुछ वैज्ञानिक तथ्य

१. एक जवान पेड़ एक दिन में ३७८ लीटर तक पानी ? मीन से सोखकर वातावरण में छोड़ देता है।

२. एक पेड़ ८ से १२% तक बिजली खर्च काम कर सकता है। प्रतिवर्ष क्योंकि घर के चारों तरफ पेड़ होने से ३०% AC की आवश्यकता कम हो सकती है।

३. एक वर्ष में एक पेड़ इतनी CO² सोख लेता है जितनी (२६००) २६ हजार मील चलने के बाद एक कार (Car) से निकलती हैं।

४. एक व्यक्ति द्वारा जीवन भर में फैलाये गये प्रदूषण को खत्म करने के लिए ३०० पेड़ों की जरूरत पड़ती है।

५. एक-एक जंगल १८ लोगों को सालभर स्वस्थ O² (ऑक्सीजन) देता है।

६. एक पेड़ दो लोगों को जिंदगी देता है अगर एक पेड़ लगाते हैं तो दो जिंदगी सुधर सकती हैं।

प्रकृति का इतना वैभव देखकर हिंदू संस्कृति ने पेड़, पर्वत, नदियों की पूजा की है नमस्कार किया है।

“मूलतो ब्रह्मरूपाय, मह्यतो विष्णुरूपिणे।

अग्रतः शिवरूपाय, वृक्षराजाय ते नमः॥”

अर्थात् वृक्षराज की जड़ में ब्रह्मा मध्य में विष्णु एक मस्तक में शिव का रूप है अतः वृक्ष को नमस्कार है और इसका महत्व सोमंती अमावस्या को विशेष रूप से माना जाता है। अगर एक पेड़ का नाश (घात) करते हैं तो ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों का घात होता है, तो फिर अपना T. P. कैसे निर्दोष हो पायेगा अतः T. P. में ब्रह्मा-विष्णु-महेश का दर्शन करना हो तो अपना T. P. ऐसा बनाइये जिससे पर्यावरण प्रदूषित न हो।

“देश कूप सभी वापी देश वापी समो हृदय।

दश हृद समो युत्रः दर्शयुत्र समो द्रम॥”

अर्थात् एक वापी दस कूप के बराबर होती है। दस वापियाँ एक बड़े सरोवर के बराबर होती है। दस हृदय अर्थात् झील एक पुत्र के बराबर और दस पुत्र एक दुभ अर्थात् वृक्ष के बराबर होते हैं। इस प्रकार वृक्ष जीवन में सबसे अधिक महत्वशाली है। जैनाचार्यों ने वनस्पति के महत्व पर जोर देते हुए कहा है कि एक वृक्ष को नष्ट करने पर जो पाप लगता है। वह दस पुत्रों की हत्या के सामान है। इतने सब व्याख्यान से इतना तो स्पष्ट हो ही चुका है कि प्रकृति जैसा धैर्य अगर हमारे T. P. में आ जाए तो हम दुनियाँ के सबसे सफलतम इंसान होंगे, लेकिन...

“तोड़ रहा तू डाल से, फूलों को हर बार।

फिर भी कहता जा रहा, है फूलों से प्यार॥”

यह अपने T. P.को धोखा देना है, मानसिक प्रदूषण है।

जो हमारे विकास का प्रदूषण है और यही आचरण का प्रदूषण भी है जो

सबसे बड़ा सांस्कृतिक प्रदूषण है। लेकिन जैसे प्रकृति कभी रुकना नहीं चाहती बल्कि निरंतर अपने विकास के लिए गतिशील रहती है। अगर हम वैसे ही अपने T. P. के विकास के लिए निरंतर गतिशील रहे तो हमारा T. P. निश्चित रूप से सारे प्रदूषण को खत्म कर हमारा आभूषण बन जाएगा और इसी के लिए हम प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में प्रकृति से जुड़ने का पूरा प्रयास करते हैं। ताकि प्रकृति से हम अपने T. P. का सुधार कर सकें और ऐसा होता भी है कि धार्मिक अनुष्ठानों से हमारा T. P. भी Strong होता है इसी कारण हमारे संत लोग प्रकृति में अधिक समय व्यतीत करते हैं। और सभी संतों में प्रकृति से अधिक निकट रहने वाले कोई संत हैं तो वे हैं दिगंबर संत अतः दिगम्बर संतों का T. P. सबसे ज्यादा Strong होता है और यह T. P. ऋद्धि-सिद्धि तक में साधक हो जाता है। अतः अगर दिगम्बर साधक जैसा T. P. नहीं बना सकते तो कम से कम...

“संसार से मुड़े रहें।

प्रकृति से जुड़े रहें।”

अपने T. P. को मजबूत पेड़ के जैसे बनाना लेकिन भूलकर भी छुई-मुई जैसा T. P. कभी मत बनने देना! क्यों कि प्रकृति जैसे परिणाम रोमांचक होते हैं। वही परिणाम T. P. का भी। अतः अपना T. P. प्रकृति से अवश्य जोड़ें। जब आप अपने T. P. को महत्व देंगे तो आपका T. P. अपेक्षाकृत कार्य ज्यादा करेगा। छोटा सा भी T. P. अगर महत्व पा जाए तो वह बड़ा T. P. बन जाता है।

प्रकृति कि गोद में खुशहाली—

प्रकृति ने हर ओर खूबसूरती कि छटा बिखेर रखी है। हर मौसम का अपना आनंद होता है। जिसके साथ हमें जुड़ना चाहिए। विशेषज्ञ भी मानते हैं कुदरत के करीब रहने से आपकी शारीरिक ओर मानसिक सेहत दुरुस्त रहती है।

सूरज कि पहली किरण से दोस्ती कीजिये। सरसराती खुशनुमा हवा को अपने भीतर समेटिये। फूल पत्तियों के रंग-रूप को निहारिये। पक्षियों की चहक सुनिए। पेड़ों पर लदे फलों को ध्यान से देखिये और जानिए कि देने का भाव कितनी विनम्रता ले आता है व्यवहार में? कुल मिलकर कहने का मतलब यह

है कि कुदरत से जुड़िए। प्रकृति के करीब जाइये और जिंदगी खुशहाल बनाइए। यह एक कड़वी हकीकत है कि जब से हमने प्रकृति के साथ जीना छोड़ा है। बीमारियाँ भी हमसे जुड़ गई हैं। प्रकृति ने हर ओर खूबसूरती की छटा बिखेर रखी है। हर मौसम का अपना आनन्द होता है। जिसके साथ हमें जुड़ाव रखना चाहिए। विशेषज्ञ भी मानते हैं कुदरत के करीब रहने से आपकी शारीरिक और मानसिक सेहत दुरुस्त रहती है। यही वजह है कि जो लोग प्राकृतिक वातावरण में रहते हैं, वे ज्यादा खुश रहते हैं।

खुद से जुड़ने का भाव—

मौजूदा दौर की भागमभाग भरी जीवनशैली में आया हर बदलाव हमें प्रकृति से दूर ही कर रहा है। भौतिक सुख सुविधाओं से लबरेज जो दुनियाँ हमने बसा ली है उसमें धरती से जुड़ाव का भाव ही नदारद है। इसी का नतीजा है कि हमारा खुद अपने जीवन से जुड़ाव कम ही हुआ है। हालांकि हर बदलते मौसम की आहट अब भी हमें आवाज देती है पर हम जिस जिद्दोजहद में गुम हैं उसमें प्रकृति की कोई जगह ही नहीं दिखती। हम भूल ही गए हैं प्रकृति सही मायनों में इंसान की सच्ची साथी है। तभी तो हमारे साथ जब कोई नहीं होता तो हम प्रकृति के साथ हो लेते हैं। यही वो समय होता है जब हम खुद के भी साथ होते हैं जो की आज की व्यस्त दिनचर्या में कम ही मिलता है। प्रकृति हमें धरती पर जीवन जीने के लिए ईश्वर के बहुमूल्य और कीमती उपहार के रूप में मिली है। जिसे बिसराने के खमियाजे हम भोग ही रहें हैं। प्रकृति का साथ दिमाग, शरीर और आत्मा को ऊर्जावान बनाये रखने का स्रोत है। इस ऊर्जा की जरूरत आज हर उम्र वर्ग के लोगों को है क्योंकि अवसाद और तनाव भरी जीवनशैली में किसी के पास स्वयं से जुड़ने का वक्त ही नहीं है। हमें हमेशा यह याद रखना होगा कि कुदरत हमें सकारात्मकता और प्रसन्नता के माहौल से भी जोड़ती है। तभी तो प्रकृति का मौन भी हमें बड़े-बड़े पथ पढ़ा देता है। इस सीख का पहला पढ़ाव अपने आप से जुड़ने का है। इसके लिए बस थोड़ी-सी कोशिश कीजिये फिर देखिये बदलाव आपको खुद ही महसूस होगा।

अपनों से जुड़ाव कि राह—

प्रकृति के जिस अनूठे सौंदर्य को देखकर हमें खुशी मिलती है वही हमें जीवन से जुड़ी सबसे सुन्दर सीख भी देता है। सीख, आभार जताने कि क्योंकि कुदरत से मिलने वाली हर निर्जीव या सजीव चीज हमारे जीवन को सँवारती है हमारी जरूरतें पूरी करती है। फिर भी प्रकृति कोई दिखावा नहीं करती। बस, सहज भाव से देते रहना प्रकृति का स्वभाव है। यही कारण है कि हमारे यहाँ तो कई व्रत-त्यौहार भी प्रकृति के पूजन से ही जुड़े हैं। यह आभार जताने का ही तरीका है। यही बात हमें अपनों से जोड़ती है। हमें समझती है कि हमारे दिल में कृतज्ञता की सोच सदैव बनी रहनी चाहिए क्यों कि आभार जताने कि सोच हमें सकारात्मकता से भी जोड़ती है। मनोवैज्ञानिकों और समाज-वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि कठिनाई में सबसे अधिक सहयोग और सहानुभूति मित्रों और परिवार से ही मिलती है। उनके प्रति कृतज्ञ होना हमारा नैतिक दायित्व है।

गुणवत्तापूर्ण जीवन का आधार—

प्रकृति के साथ के बिना हमारा जीवन गुणवत्तापूर्ण नहीं हो सकता। क्योंकि कुदरत का हर रंग हमें स्वयं से जोड़ता है। जिस तरह मौसम में, प्रकृति में बदलाव होता है, उसी तरह हमारे शरीर और मन मस्तिष्क में भी बदलाव होते हैं। इसलिए जैसे कुदरत के बदलावों को जीने के लिए कुछ पल ठहरकर आनंद लेना होता है उसी तरह अपने भीतर आ रहे बदलावों को समझने के लिए भी खुद के भीतर झाँकने की दरकार होती है। प्रकृति के साथ हमें यह बखूबी समझाता और सिखाता है। प्रकृति हर परिस्थिति के लिए खुद को तैयार करने का संदेश देती है। एच. जी. वेल्स के मुताबिक अनुकूल बने या नष्ट हो जाए, यही प्रकृति की अनिवार्यता है। इसलिए कहा जाता है कि प्रकृति को गहराई से देखिए और जानिए, आप हर एक चीज बेहतर ढंग से समझ सकेंगे। ऐसे विचार हमारे जीवन को स्तरीय बनाते हैं। उन गुणों को सहेजते हैं जो सुखी, स्वस्थ और गुणवत्ता भरे जीवन का आधार है।

और यही विचार जब अपना T. P. बन जाता है। तो आत्मकल्याण का एवं सफलता का रास्ता प्रशस्त है। चूँकि T. P. और कुछ नहीं आत्मा की प्रकृति

है। अतः बाहरी प्रकृति से आत्मा की प्रकृति या T. P. को सम्भारा जा सकता है। अतः प्रकृति से इसलिए जुड़े ताकि T. P. मजबूत बन सके।

आखिर आपको प्रकृति ने मनुष्य क्यों बनाया ?—

प्रकृति चाहती है कि आप अपने विचार साकार करें अतः प्रकृति ने आपको पृथ्वी पर भेजा है। आप विचारों से जो देते वही पाते हैं। प्रकृति ने सन्देश यह दिया है कि जैसे प्याज /केले के पेड़ देखकर संसार असार नजर आता है तो वही सागौन, आम आदि सरदार हैं। इस प्रकार ने विपरीतता प्रकट शायद इसलिए कि प्रकृति का संतुलन एवं शिक्षा मिलता रहे। हमारी आत्मा शरीर आदि प्राकृतिक चीजें विपरीतता से परिपूर्ण है। अतः T. P. भी इसका पालन करता है। परन्तु हम T. P. से विपरीतता को सही दिशा देकर अपनी जीवन या कार्य सफल या सार्थक बनाया जा सकता है। प्रकृति सब देती या सिखाती है बस अपना T. P. का एंटीना। एरियल खोलकर रखना होगा।

किसी के गुजर जाने से

संसार का गुजारा नहीं रुक सकता।

किसी के आ जाने से

संसार का भार नहीं बढ़ता॥

जब ऐसे T. P. के निर्माण होने लगते हैं तो उस समय अपने T. P. में एक विशेष प्रकार कि शक्ति /ऊर्जा का संचार होता है जो अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह तो करता है परन्तु उसमें उपेक्षा रखता हुआ संसार में रहता है। अगर यह मान लिया जाए कि यह संसार हमारे बिना चल ही नहीं सकता तो इससे T. P. वास्तव में दुर्गतियों का पात्र बनाकर छोड़ता है। लेकिन संसार में रहकर संसार को छोड़ने का T. P. बनाया जा सकता है। अर्थात् संसार से मुक्त होने में जैसे T. P. का महत्व है वैसे ही, संसार का भी।

आखिर ऐसा क्या है संसार में।

जो, रहना नहीं चाहता कोई संसार में॥

इतना जानने समझने के बाद, बढ़ने के बाद कि संसार सर्वथा त्याज्य है तो आखिर क्यों हम अपने T. P. में ऐसा असर लाना चाहते हैं, जो संसार त्यागे...!

“कर्मों का व्यापार
है अपना संसार।”

जब हमारी आत्मा चाहे वह चेतन रूप हो अथवा अब चेतन रूप हो या किसी भी अवस्था रूप हो वह हमेशा ही अपने T. P. से कुछ न कुछ विचार अवश्य करती है। यही विचार हमारे मन वाणी एवं शरीर के कर्म / व्यापार बन जाते हैं। और यही व्यापार / कर्म अनन्त संसार का निर्माण करते हैं।

और अगर अपने T. P. को मजबूत बना लिया जाए तो यही कर्म अनन्त संसार से मुक्ति का रास्ता भी प्रशस्त कर सकते हैं। क्योंकि जैसे—

जिस खदान से, कचरा मिलता है
उसी से सोना भी।

जिस खदान से कोयला मिलता है
उसी से हीरा भी॥

जिस पानी से प्यास बुझती है / प्राण मिलते हैं
उसी पानी से (बाड़ में) प्राण निकलते हैं, घर उजड़ते हैं।

जिस अग्नि से भोजन पचता है
उसी अग्नि से संसार जलता है॥

अर्थात् जिन कर्मों कि शुरूआत होती है T. P. से तो उनका अंत भी T. P. से ही किया जा सकता है।

कर्मों का भार सबसे खतरनाक होता है,
जिसे हर संसारी प्राणी बेबस ढोता है,
लेकिन जिसका T. P. मजबूत होता है,
उससे कर्मों का पहाड़ भी रोता है,
और वह शान्ति से सफलता में सोता है॥

ये कर्म कुछ करते हैं,
कुछ को करना पड़ते हैं, और
कुछ करने से डरते हैं।

तथा
कुछ कर्मों को नष्ट करते हैं

जब ये कर्म ही संसार है तो T. P. से कैसे इन्हें दूर किया जा सकता है। क्योंकि हमारे T. P. का प्रभाव बाहर तो पड़ता ही है। साथ में सबसे ज्यादा खुद पर भी पड़ता है। हमारे विचार T. P. के अनुरूप ही सामने वाला भी अपने T. P. कि माला बनाने लगता है। पेड़ पौधे फूलने फलने लगते हैं, विपरीत T. P. के साथ अगर दूध दही से भी वृक्षों का सिंचन किया जाए तो भी हरा भरा वृक्ष सूख जाता है। अतः T. P. में विशाल पवित्रता अपनाये अन्यथा संसार बढ़ेगा जो कर्म रूप होता है। क्यों कि कर्मों का परिमन अपने T. P. कि दम पर होता है। और सफल मनुष्य वही है जो अपने कर्म या संसार अपने T. P. से नियंत्रित कर लेता है। तथा खुद को दोषी ठहराता हुआ अपना T. P. उदार बना कर कर्म नाश करने कि प्रक्रिया में अग्रणी होता है। विचार T. P. के बीज आचरण और संगति के खाद पानी से अंकुरित होते हैं। अतः T. P. को सुगंध से सबको महकाएँ जिसके लिए हम मुक्ति तुल्य T. P. अगर नहीं बना सकते हैं तो कम से कम कुविचार या विपरीत T. P. से तो बचना ही चाहिए। क्योंकि T. P. ही कर्म का कारण है।

पहले T. P. बनता है।

फिर T. P. से कर्म बनता है॥

फिर कर्म से जीवन बनता है।

फिर जीवन से संसार बनता है॥

अर्थात्

अपना T. P. ही कर्मों का व्यापार है।

कर्मों का व्यापार ही अपना संसार है॥

जैसे रंगमंच (Stage) पर चित्र दिखते हैं दिखता कोई और बस यही हाल संसार का है कर्म का है, दिखता कुछ और करने वाला कोई और।

तो आइए एक प्रोग्राम बनाते हैं, और समझते हैं कर्म सिद्धांत। जो हमारे T. P. को सर्वोत्कृष्ट करने में मदद करेगा।

As you show , so shall you reap

जैसा बोड़ये, वैसा काटिये।

दरअसल यहाँ T. P. में कर्म का अर्थ पुरुषार्थ। Hardworking नहीं है

क्योंकि “कर्म ही पूजा है” यह कथन तो पुरुषार्थ का प्रतीक है। परन्तु यहाँ पर यह अर्थ नहीं लेना है बल्कि मन, वाणी और शरीर के द्वारा जो अच्छे बुरे कर्म हमारी आत्मा के साथ जुड़ते हैं। यहाँ पर वही कर्म प्रशान्त प्रारंभिक हैं। जो हमारे ज्वक्कको अपने असली रूप में आने से रोकते हैं। अगर T. P. के द्वारा मन, वाणी और शरीर को आत्मा से पृथक कर दिया जाए तो हमारा ज्वक्कखुद सबसे ज्यादा शक्ति सम्पन्न हो जाएगा।

कर्म कैसे T. P. पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं।

जो T. P. को भी जगह-जगह से जोड़ते हैं।

कहते हैं सबसे ऊँची आवाज कर्मों की है अर्थात् “जैसी करनी वैसी भरनी” या फिर कहा जा सकता है कि हम जैसे कर्म करते हैं हमें वैसा ही फल भोगना पड़ता है। और यही कर्म हमारे T. P. को भी प्रभावित करते हैं। अगर T. P. अच्छा बनाना चाहते हो तो कर्म अच्छे करने होंगे क्योंकि—

“जो जैसी करनी करें वो वैसा फल पाये।

बोये बीज बबूल का, आम कहाँ से खायें॥”

एक जुल्मी राजा था जो सारे राज्य में अत्याचार (आतंकवाद) करने को प्रसिद्ध था। उसमें अचानक परिवर्तन देखकर जनता यह जानना चाहती थी आखिर राजा में परिवर्तन आया तो आया कैसे ? तब राजा ने बताया कि जब मैं शिकार को गया तो मैंने देखा कि एक कुत्ते ने रन पर बार किया हिरण पर वार किया किंतु वह अपनी जान बचाकर भागा फिर भी घायल हो ही गया था, जब लौटकर आया तो उसी कुत्ते ने एक पहलवान को भौंखा होगा जिससे पहलवान ने क्रोधित होकर उस कुत्ते को एक पत्थर मार दिया जिससे कुत्ते की टांग टूट गई। जिसे एक घोड़े ने लात मार दी जिससे कुत्ते के घुटने टूट गया और कुत्ता मरणासन्न हो गया। कुत्ते को मारकर घोड़ा भागा और वह गड्ढे में गिर गया, जिससे घोड़े की भी टांग टूट गई। तात्पर्य यह हुआ कर्मों का फल सबको भोगना ही पड़ता है। बस इसी से मैं परिवर्तित हो गया।

“अवश्यमेव भोक्तयं कर्म शुभाशुभम्”

अर्थात् अच्छे/बुरे कर्म तो अवश्य ही भोगना पड़ते हैं। जो T. P. पर असर डालते हैं। यही असर हमारा जीवन निर्धारित करता है। जब ये कर्म / T. P. को निर्धारित करते हैं। तो इन्हीं कर्मों के सिद्धांत को समझ कर व्यवस्थित करना सबसे बड़ा T. P. माना जाएगा।

“बातें ऐसी करो कि इतिहास बन जाए ,
चलो ऐसे गवाह चांद तारे बन जाए।
किस्मत के भरोसे जिंदगी न डगमगाना,
कर्म ऐसे करो कि किस्मत बन जाए॥”

अर्थात् कर्म जब हम स्वयं करते हैं तो उनको नष्ट भी हमें स्वयं करने होंगे। कर्मों का सूक्ष्म विज्ञान समझ के अपने T. P. को इस बात के लिए तैयार करना है कि आपकी ही दम पर कर्म नष्ट होने वाले हैं और जब नष्ट कर्म नष्ट हो जाएंगे तो उस समय सबसे ज्यादा T. P. सम्पन्न हो जाएगा और अविनाशी भी बन जाएगा कर्मों का नाश करें।

“कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करहि तस फल चाखा।”

अर्थात् संसार में भेद भिन्नता की जिम्मेदारी हमारी स्वयं की है, जैसी कर्म हम करेंगे वैसा ही फल हमें मिलेगा।

यह सारा कार्य हमारे स्वयं के T. P. से होता है। मन, वचन और शरीर द्वारा ये कर्म हमारे T. P. से जुड़ जाते हैं और उन्हीं के फल हमें भोगने पड़ते हैं।

एक राज्य में बूढ़े हो चले मिस्त्री को राजा ने सेवानिवृत्त करते हुए उसे उपहार में वह मकान दिया जिसको उसने सबसे अंत में बनाया था जैसे ही मिस्त्री के पास उस मकान की चाबी आई जैसे ही वह दुखी होने लगा, और राजा ने जानना चाहा तो वह बोला कि अगर मुझे पता होता कि यह मकान मुझे उपहार में मिलने वाला है तो मैं इसे खूब मन लगाकर बनाता और मुझे बहुत अच्छा मकान मिलता इस बेमन से बने मकान को पाकर मैं दुखी हूँ।

बस यही हाल हर संसारी प्राणी का है जो बुरे कर्म को खूब मन लगाकर करता है और बुरे फलों को बेमन से भोगता होता है तथा अच्छे कार्य बेमन से करता है और अच्छे फलों को भोगने की बहुत चाहत रखता है इसी से ज्वकक विकृत होता है।

“जब हम कर्मों को करते हैं तो उनके कर्ता हुए,
जब हम कर्म रखते हैं तो उनके स्वामी हुए।
जब हम कर्मों का फल भोगते हैं तो उनके भोगता हुए
अतः अच्छे कर्म करें तो T. P. अच्छा होगा॥”

जैसे को तैसा - (कर्म फल)

नकली नोट

महाविद्यालय के मुख्य द्वार के सामने एक छोटी सी दुकान पर चार पाँच छात्रों का झुंड बैठा था। जो विद्यालय तो आता परन्तु पढ़ने के लिए नहीं, आवारागर्दी के लिए।

एक दिन उन्होंने गेट के सामने सड़क पर ५०० के दो नकली नोट डाल रखे थे। कोई राहगीर नोट पड़े देखता तो उठा लेता परन्तु जैसे ही पता चलता की ये नोट नकली हैं तो उसे छोड़ देता। इस पर उस की खिल्ली उड़ाते और जोर जोर से हँसते थे। कुछ देर बाद गाँव का एक किसान उस रास्ते से गुजरा। उसने नोटों को उठा लिया, परन्तु कोई छात्र चूँ तक नहीं बोला क्योंकि उस झुण्ड का नेता उसी किसान का पुत्र था। उसने सभी साथियों का मुंह बंद करवा दिया किसान ने नोटों को रखा और चला गया। कुछ दिनों बाद जब उस छात्र ने उस किसान से उसकी फीस हेतु पैसे मांगे तो उसने वही नकली नोट पकड़ा दिए। छात्र यह भली भाँति जान गया कि पिताजी नोट क्यों दे रहे हैं। वह चिंतित हो गया कि अब फीस कैसे जमा करूँगा और उसके पास इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह अपने पिता से यह कह सके 'यह नोट नकली हैं'।

इसलिए कहा जाता है—

जो बोएगा वही पाएगा, तेरा किया आगे आएगा।

सुख-दुख है क्या फल कर्मों का जैसी करनी वैसी भरनी - २

१. सबसे बड़ी पूजा है, मात- पिता की सेवा - २

किस्मत वालों को ही, मिलता है ये मौका

मौके को यूँ खो मत देना, मौका ये खिदमत

जन्नत का दर खुल जाएगा, तेरा किया आगे आएगा।

२. चाहे न पूजे मूरत, चाहे न तीरथ जाए- २

मात-पिता के तन में सारे देव समाये

तू इनका दिल खुश रखे तो ईश्वर खुश हो जाए

भगवान तुझको मिल जाएगा तेरा किया आगे आएगा....

सुख-दुख है क्या.... जैसी करनी वैसी भरनी.....

जैसे

स्वयं बनाओ हथकड़ी,
स्वयं तोड़ो हथकड़ी।

एक लोहार था जो अपने राजा के लिए कार्य करता था जिसमें वह हथकड़ी भी बना कर देता था लेकिन उस राजा पर एक विदेशी राजा का आक्रमण होने से उस लोहार को भी जेल हो गई जेल में वह लोहार हथकड़ी देखकर दुखी हो कर रोने लगा लेकिन उसे तुरंत से यह ज्ञात हुआ कि यह हथकड़ी तो मेरी बनाई हुई है और इन्हें मैं तोड़ भी सकता हूँ तो उसके प्रयास से हथकड़ी टूट गई और वह बंधन मुक्त हो गया बस इसी तरह ये कर्म हमने अपने T. P. के द्वारा तैयार किए हैं तो इनको नष्ट करने के लिए भी तैयार करना होगा। अतः अपने T. P. को जेल मत बनाओ।

“परिवार जैसा, संस्कार वैसा,
परिश्रम जैसा, फल वैसा,
देश जैसा, भेष वैसा,
बीज जैसा, अनाज वैसा,
कर्म जैसा, T. P. वैसा और
T. P. जैसा, कर्म वैसा,
कर्म नहीं, T. P. सही,
T. P. सही कर्म नहीं।”

अर्थात् जैसे हम बहुत सारे कार्य मात्र प्रदर्शन के लिए ही करते हैं जैसे अच्छे कपड़े पहनना, आभूषण पहनना, शृंगार करना और गाड़ी मकान आदि आवश्यकता से अधिक रखना यह सब मात्र प्रदर्शन है जब हम इनमें अपनी पूरी शक्ति एनर्जी भी झोंक देते हैं।

तो क्या हम T. P. को अच्छा बनाने के लिए थोड़ा बहुत परिश्रम नहीं कर सकते जैसे हम दूसरों को पत्र लिखते हैं या फोन/ मोबाइल/ मैसेज करके समाचार संचार करते हैं क्या कभी किसी ने खुद से खुद को खुद ही समाचार दिया है शायद नहीं, अगर दिया होता तो शायद आज T. P. की ऐसी अवस्था नहीं होती।

आखिर ये कर्म है क्या ? अगर T. P. सम्भाला जाए तो ?

जो देते हैं सभी को सजा ।

यही कर्म बन जाते हैं मजा॥

कर्म और कुछ नहीं बल्कि T. P. द्वारा दिया गया ऑर्डर जो कर्म बनकर वापिस/Return आया हुआ T. P. है । जैसे-

अगर किसी दीवार पर पत्थर फेंका जाए तो

पत्थर वापस आएगा,

अगर कचरा फेंका जाए तो

कचरा ही वापस आएगा,

अगर काँटे फेंके जाएँ तो

काँटे ही वापस आएंगे,

अगर फूल फेंके जाएँ तो

फूल ही वापस आएंगे ।

अर्थात् जो दिया जाएगा वहीं वापस आएगा । बस यही फार्मूला/सूत्र सिद्धांत है T. P. का, अर्थात् हमने जो भी ऑर्डर अपने T. P. को दिया होगा वही आर्डर वापस हमारे T. P. को मिलेगा तो यह कहा जा सकता है कि हमने पिछले समयों में अपने T. P. को एक ऐसा ऑर्डर दिया जिससे हमें आज दुखी या परेशान किया आज हम दुखी और परेशान हैं यह उसी का परिणाम है अगर हम सुखी और प्रसन्न रहना चाहते हैं तो अपने T. P. को ऐसा आर्डर देकर ऐसा काम किया जा सकता है और यही इशारा अथवा संकेत हमारे T. P. के साथ कर्म बनकर जुड़ जाते हैं, तो कहने में आता है कि कर्मों में सुखी दुखी किया, पर वास्तव में सुखी दुखी करने वाला हमारा स्वयं T. P. है ।

सर्वोत्कृष्ट T. P. = सफलता का मेला

जनतंत्र T. P. = बुराइयों का झमेला

अगर अपने T. P. से सारे बुरे विचार अलग कर दिए जाएँ तो यही T. P. पाँवर कर्मों से मुक्ति देकर अनन्त सुखी बनाएगा अन्यथा अनन्त दुखी । तो प्रयास करना है अपने T. P. से सारी विकृति को दूर करने का ।

एक गुरु थे जो अपने पास लोहे की एक डिब्बी रखते थे उनके एक शिष्य ने यह जानना चाहा की डिब्बी के अंदर क्या है। तो गुरु ने बताया कि डिब्बी के अंदर एक कागज में पारसमणि लिपटी हुई रखी है। तब शिष्य ने कहा कि अगर यह कागज अलग कर दिया जाए तो यह डिब्बी भी सोने की बन सकती है फिर आप दोनों को अलग अलग क्यों रखे हो ? तब गुरु ने कहा कि इसमें एक बहुत बड़ी शिक्षा है वह यह कि हमारे T. P. को कर्मों के कारण ऐसा संयोग नहीं मिल पा रहा है जो स्वर्ण जैसा बन सके हमारा T. P. सोने में उसी समय परिपाक होगा जब उसे पारसमणि रूपी एक अन्य T. P. का संयोग मिलेगा।

हमारे T. P. की योग्यता कर्मों ने कुंठित कर रखी है कुंठा आई भी T. P. से है जाएगी भी T. P. से और जिस दिन वह कुंठा चली गई उसी दिन हमारा T. P. सर्वोत्कृष्ट होकर माथा के योग बन जाएगा जैसे अपराधी जेल में रहता है। फिर भी उसके पास बाहर घूमने की योग्यता रहती है लेकिन यह योग्यता जेल के बाहर ही प्रकट हो पाती है अंदर नहीं अतः जेल के अंदर रोना आता है परन्तु बाहर सोना ही सोना बस इसी तरह हमारा T. P. भी जब कर्मों के जेल से बाहर आएगा तो मुक्ति का सोना सोना हो जाएगा।

**चाँदनी छिड़कने को पूनम की रात चाहिए,
कर्म करने को निर्जरा की बात चाहिए।
कर्म जो जग के कारण हैं इनसे बचने के लिए,
अपने सबसे अच्छे T. P. का साथ चाहिए॥**

कर्म अच्छा करें ताकि T. P. अच्छा रहे T. P. का महानतम उपयोग इसी में है। की हम उसका प्रयोग अच्छे कार्य में करें जो हमारे ना लेने पर भी याद किया जाए यद्यपि हमारा ज्वकक यदि स्वतंत्र है फिर भी बाहरी कारणों से प्रभावित होता है जो कर्म करने में T. P. स्वतंत्र हो जाता है परन्तु कर्मों के उदय में सबसे बड़ा बेबस (मजबूर) सा नजर आता है अगर यह मजबूर T. P. तीव्र कर्म उदय में मजबूत बना रहे तो विश्व की कोई भी ताकत सर्वोच्च शिखर पर उसे जाने से रोक नहीं सकती अतः—

**T. P. को मजबूत करने का संकल्प
जो दूर कर दे हमारे सभी संकल्प-विकल्प।**

जिससे भले ही मिले आज सुख अल्प ।

लेकिन अंत में करवा देगा हमारा काया कल्प॥

अतः प्रयास करें अच्छे T. P. के साथ अच्छा कार्य करने का ।

चोर का संकल्प

राजपुर की सीमा पर एक कुटिया में एक संत रहते थे । उनके पास एक चोर लगभग रोज ही आता था और प्रभु से साक्षात्कार का उपाय पूछा करता था और संत उसे कह कर टाल देते थे कि फिर कभी बताएंगे ! एक दिन तो वह संत के पास जिद करके ही बैठ गया । वह बोला—आज तो उपाय जाने बिना यहाँ से नहीं जाऊँगा । संत ने उसे दूसरे दिन सुबह आने को कहा । चोर सही समय पर संत के पास पहुँच गया । संत ने उसे कुछ पत्थर दिखाते हुए कहा—तुम्हें इन पत्थरों को सिर पर रख कर पहाड़ी चढ़ना होगा । वही तुम्हें ईश्वर से साक्षात्कार का उपाय बताया जाएगा । संत ने चोर के सिर पर पाँच पत्थर लाद दिए और उसे पीछे आने को कहा । चोर संत के पीछे पीछे पहाड़ी पर चढ़ने लगा । थोड़ी देर बाद भी चोर की गर्दन दुखने लगी । उसने संत से कहा तो उन्होंने एक पत्थर फिकवा दिया । थोड़ी दूर चलने पर चोर को फिर कष्ट होने लगा उन्होंने दूसरा पत्थर भी फिकवा दिया । जैसे-जैसे चढ़ाई बढ़ती जा रही थी चोर का शेष पत्थरों को लेकर चढ़ना मुश्किल होता जा रहा था । वह संत से कहता और वे पत्थर फिकवा देते थे । धीरे-धीरे चोर के सिर से सारे पत्थर समाप्त हो गए । अब वह सुगमता से चढ़ता हुआ शिखर पर पहुँच गया । संत ने फिर चोर से कहा—जब तक तुम्हारे सिर पर बोझ था, पहाड़ी पर चलना मुश्किल हो रहा था और जैसे ही सिर से पूरा बोझ हटा तुम सरलता से चढ़ने लगे । मेरे कहने का आशय यही है कि पापों का बोझ सिर पर लेकर व्यक्ति ईश्वर से साक्षात्कार नहीं कर सकता । चोर ने संत से कहा—महाराज आप ठीक कह रहे हैं । मैं ईश्वर को पाना चाहता था लेकिन अपने बुरे कर्मों को नहीं छोड़ पा रहा था । आपने मुझे राह दिखा दी । अब मैं संकल्प करता हूँ कि अब से चोरी नहीं करूँगा । चोर लौटने के बाद परोपकार और अच्छे कार्य करने में लग गया ।

मृत्यु के उपरांत हमारे साथ जाता क्या है ?

मात्र वही जो T. P. से कर्मों का भार बढ़ाया है ।

हर व्यक्ति अगर कहीं भी जाए तो वह पूरी तैयारी के साथ जाता है। चाहे वह यात्रा को विषय हो, चाहे वह शादी-विवाह का विषय हो या चाहे वह शिक्षा का विषय हो। इन सभी विषयों में वह तैयारी करता है परन्तु यह उसका कमजोर T. P. है क्योंकि वह इन विषयों में जैसे तैयारी करता है वैसे क्या उसे मरने के उपरांत कहाँ जाना है। इसकी तैयारी क्यों नहीं करता। जो मजबूत T. P. का होता है। वहीं परलोक की तैयारी करता है क्योंकि वह जानता है कि हमारे साथ T. P. से और मन, वाणी और शरीर से अर्जित कर्म ही साथ जाएंगे। अर्थात् परलोक में हमारे शुभाशुभ कर्म ही जाते हैं इसलिए कहा जाता है।

“कितने जोड़ के रख लो हीरा,
कितने जोड़ के रख लो मोती।
पर इतना जरूर याद रखना,
कि कफन में जेब नहीं होती॥”

बस अपने किए हुए कर्म के साथ ही साथ देते हैं। अगर आपने कर्म करके यह माना है कि इनका फल हमें यही नहीं भोगना पड़ता है। वह आपकी गलत धारणा है जैसे खेत में बोया गया धान २ से ४ माह में फल दे ही देता है गेहूँ, बाजरा आदि। नौकरी करने पर महीने भर में फल मिल जाता है। मजदूरी करने पर दिन भर में फल मिल जाता है। हथियारों से वार होने पर तुरंत फल मिल जाता है ऐसे ही देर सवेर शुभाशुभ कर्म फल देते ही हैं।

शुभाशुभ कर्म—

राजा भोज परमदानी और धर्मालु प्रवृत्ति के थे। उनकी उदारता की अनेक कथाएँ उनके राज्य से लेकर अन्य राज्य तक प्रचलित थी। और इसी कारण वे बहुसंख्यक लोगों की श्रद्धा के केंद्र थे। राजा भोज एक बार अस्वस्थ हुए और चिकित्सकों ने भी लगभग हार मान ली, तब राजा भोज के दिमाग में एक विचार आया। उन्होंने तत्क्षण अपने दीवान को बुलवाया और उससे कहा— संभवतः मैं अधिक समय तक जीवित नहीं रहूंगा। मैं अपनी अंतिम इच्छा तुम्हें बताना चाहता हूँ। दीवान ने विनम्रतापूर्वक उनकी इच्छा के प्रति जिज्ञासा प्रकट की, तो वे बोले—जब मेरी अर्धी महल से श्मशान स्थल पर ले जाओ, तो मेरा एक हाथ सफेद और दूसरा काला कर देना। फिर दोनों हाथों को अर्धी से बाहर सबको दिखाते हुए ले जाना। राजा भोज की अंतिम इच्छा दीवान को बड़ी

विचित्र लगी। उसने पूछा—राजन। ऐसा करने को क्यों कह रहे हो ? तब राजा भोज ने कहा—इसलिए कि खाली हाथ देखकर सभी को ज्ञात हो जाए कि राजा हो या रंक, कोई भी अपने साथ किसी प्रकार की धन दौलत नहीं ले जाता। सभी खाली हाथ इस संसार से जाते हैं। सफेद और काले रंग के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूँ। किस व्यक्ति के साथ यदि कुछ जाता है तो अच्छे और बुरे कर्म ही जाते हैं। दीवान ने राजा भोज की बात के मर्म को जान श्रद्धापूर्वक उन्हें नमन किया। सार यह है कि व्यक्ति संसार में खाली हाथ ही आता और जाता है, इसलिए जन्म से लेकर मृत्यु तक सत्कर्म और सदाचरण को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनाना चाहिए, ताकि मृत्यु के बाद हमारा यश काया के रूप में सम्मानपूर्वक जीवित रहे।

कुल मिलकर यह कहा जा सकता है कि कर्मों का सूक्ष्म सिद्धांत संसार में कण कण में दृष्टिगोचर होता है। किंतु हमारा T. P. इतना कमजोर है कि इसको समझ नहीं पाता क्योंकि कर्म तुम किसी दूसरी अवस्था में किए थे और फल कोई दूसरी अवस्था में मिलता है। अतः हमारा T. P. इस बात से सहमत हो ही नहीं पाता है कि जो फल हम लोग भोग रहे हैं हमारा ही किया हुआ होगा। लेकिन 'रात गई, बात गई' वाली युक्ति से वह सब भूल जाता है और दूसरों पर दोषारोपण करता है यही T. P. अनन्त संसार का पथ देता है और इसी से भाग (प्रारब्ध) बनता है। तो यह कहा जा सकता है कि विगत समय में किए T. P. का पुरुषार्थ (क्रिया) का संगीन रूप ही भाग्य या दुर्भाग्य है अतः अपने सौभाग्य के निर्माण के लिए अच्छे कार्य करें क्योंकि कोई भी कर्म बिना फल दिए नष्ट नहीं होते।

अच्छे कार्य (T. P.) का अच्छा नतीजा।

बुरे कार्य (T. P.) का बुरा नतीजा॥

अतः अच्छे कार्य करें।

कर्म का फल

विकासनगर में तारा नाम की एक महिला अकेली ही रहती थी। उसका पुत्र परदेश कमाने के लिए गया हुआ था। वह जब भी रोटी बनाती तो एक रोटी भिक्षा में देने के लिए भी बना देती थी। उसके दरवाजे पर एक भिखारी रोज धीमे स्वर में "कर्म करते जाओ, ईश्वर तुम्हें फल अवश्य देगा" बोलता हुआ आता

और तारा से रोटी ले जाता। तारा को भिखारी के बोलने पर आश्चर्य होता था। तारा पुत्र के लौटने की ईश्वर से प्रार्थना करती रहती थी। एक दिन दुखी होकर उसने अपनी जीवन लीला समाप्त करने की सोची! उसने खुद के खाने लिए आटा में विष डालकर रोटियां बनाई। आदत के अनुसार उसने भिखारी के लिए भी बना दी। जब भिखारी को रोटी देने लगी और तब उसे ध्यान आया की वह विष वाली रोटी भिखारी को भी दे रही है। उसके हाथ काँप गए। उसने सोचा, यह मैं क्या कर रही हूँ अपने साथ इस निर्दोष की भी जान ले रही हूँ। उसने भिखारी से क्षमा माँगते हुए उसे रोकने को कहा। तारा ने तुरंत गरम रोटी बनाकर भिखारी को दे दी। भिखारी ने उसे कहा—“बेटी! ईश्वर पर भरोसा करो और अपना कर्म करते जाओ।” इसके बाद तारा ने भी वे रोटियाँ नहीं खाईं। एक दिन उसका पुत्र वापस आ गया। वह बहुत दुबला और फटेहाल था। तारा को यह देख दुख हुआ। उसने कहा—पुत्र! तुम तो परदेश कमाने गए थे। फिर तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ? इतने सालों बाद तुम्हें मेरी फिक्र कैसे हुई? मैंने तो सोचा, तुम मुझे भूल ही गए। पुत्र ने कहा—नहीं माँ! ऐसी बात नहीं है। जब मैं परदेश गया तो मैंने वहाँ काफी धन कमाया। जब मैं घर वापस आने लगा तो रास्ते में लुटेरों के एक दल ने कुछ व्यापारियों के साथ मुझे भी पकड़ लिया। माँ ने कहा—उन्होंने तुम्हें कैसे छोड़ दिया? पुत्र ने कहा—सभी व्यापारियों को मार डाला। जब वे मुझे मारने लगे तभी वहाँ एक दिव्य रोशनी आई उसके बाद में बेहोश हो गया। जब होश आया तो मैं अपने घर के बाहर खड़ा था। तारा ने इसे भगवान का चमत्कार ही समझा। उसे तुरंत इस भिखारी की बातें याद आ गईं। उसने दूसरे दिन हमेशा की तरह उसका इंतजार किया लेकिन वह फिर नहीं आया। तारा समझ गई थी कि वह भिखारी कोई और नहीं ईश्वर का दूत था। जिसमें उसके बेटे की मदद की थी तारा अब सभी की मदद करने को तैयार रहती थी।

क्या फव्वारे में गटर का पानी डालोगे तो गंगा जल निकल सकता है? बस यही तरीका है कर्म फल का अगर अच्छा चाहते हो तो अच्छा करें। यही T. P. को प्रभावी बनाने का ढंग वार्ना सब ढोंग है।

हड़िया / कुकर में डाला जाएगा वही बनकर बाहर आएगा और चम्मच चमचे में भी वही आएगा। क्योंकि ईश्वर (कर्म) की चक्की चलती तो बहुत

धीरे-धीरे है परन्तु पीसती बहुत बारीक है। जब कर्मों का तीव्र उदय चल रहा हो तो उस समय अपने T. P. को सम्भालना बड़ा मुश्किल होता है, लेकिन तब अपने T. P. को ऐसे सम्भाला जा सकता है।

कर्मों के उदय में विवेक नहीं खोना।
हर किसी के सामने बैठकर नहीं रोना।
धर्म और धैर्य को संबल कर जियो।
आखिर होगा वही जो होना होगा।

कर्म एक ऐसा रेस्टोरेंट है
जहाँ हमें ऑर्डर देने की जरूरत नहीं
हमें वही मिलता है जो हमने पकाया है।

हम इतना समझ चुके हैं कि हम जो करते हैं वही पाते हैं इसी को स्पष्ट करने कुछ तथ्य हमने समझे और आगे भी समझेंगे। और निर्णय यही करना होगा कि अपना T. P. कर्मों से बदलता है और T. P. से कर्म भी बदलते हैं।
अतः

“यदि आप वही करते हैं जो हमेशा करते आए हैं तो आपको वही मिलेगा जो आपको हमेशा से मिलता आया है।”

अतः अच्छा करने का T. P. बनाया क्योंकि विश्व की सारी तकनीकी (यंत्र-तंत्र) मशीनरी भले ही बेकार हो जाए यह कार्य करना बंद कर दें लेकिन कर्मों का कम्प्यूटर कभी फेल नहीं हो सकता है वह स्वयं संचालित होता रहता है कभी रुकता-थकता नहीं और कभी भी गलत निर्णय नहीं करता। इसका जजमेंट सारे संसार को मानना ही पड़ता है।

कर्म हमने T. P. की मदद से बाँधे इतना तो अत्यन्त स्पष्ट हो चुका है। किंतु जब हमारा T. P. कर्मों का करता हो चुका है तो स्वामी भी वही होगा ऐसी प्रकृति में भी देखने में आता है। जैसे जिस खेत में फसल बोई जाएगी वही खेत फल भी देगा, जो व्यक्ति नौकरी करेगा वेतन उसे ही मिलेगी, जिसने प्यार किया होगा लाभ हानि भी उसे भी देंगे जो मजदूरी करेगा मेहनताना उसे ही मिलेगा उसे ही मिलेगा, जो भोजन करेगा पेट उसी का भरेगा। अतः निष्कर्ष यह कहा जा सकता है जो कर्म करेगा वह ही उसका स्वामी होगा और भोगना भी उसे ही पड़ेगा।

**“हम ही बाँधें
हम ही भोगें।”**

जैसे रेशम का कीड़ा पत्तियों को खाकर जब पूर्ण व्यस्त होता है तो वह अपने मुँह से लार निकाल कर एक जाल का निर्माण करता है और एक आवरण का निर्माण करता करता है उसी के अंदर बंधन में फँसकर अपनी जान गँवा देता है जाल उसी ने बना था और उसी को जान से हाथ धोना पड़े। अर्थात् जिस T. P. ने कर्मों को बाँधा है। उसी को भोगने पड़ते हैं।

**“हम ही बाँधें
हम ही भोगें
हम ही काटें”**

अभिमन्यु मैं गर्भ में रहकर चक्रव्यूह में प्रवेश करना सीख लिया। परन्तु बाहर निकलना नहीं सीखा था अतः उसे रेशम के कीड़े की तरह उसी चक्रव्यूह में फँस कर वे मौत मरना पड़ा, अतः जब कर्म बाँधना अपने T. P. को इष्ट है, तो फिर कर्म काटना भी इष्ट होना चाहिए।

जैसे हमें फसल प्राप्त होती है तो उसे हम निश्चित समय तक अगर रखना चाहें तो अपने पास रख सकते हैं। ऐसे ही वेतन, मजदूरी को भी हम अपने पास रख सकते हैं। बस यही सिद्धांत T. P. से अर्जित कर्मों का भी हैं। कर्म T. P. के साथ एक निश्चित समय पर ही रह सकता है, जैसे- घर में मेहमान। जब घर में मेहमान आते हैं तो हम विशेष सावधानी रखते हैं, ऐसे ही T. P. को कर्मोदय में सँभालना पड़ता है।

अक्ल और हुनर को कभी बाँटा नहीं जाता।

छाया को तलवार से काटा नहीं जाता॥

स्वयं के कर्म स्वयं को भोगना है प्राणी।

पुण्य पाप को आपस में बाँटा नहीं जाता॥

कर्म जब हमें ही बाँधते हैं और हम भी उनके स्वामी हैं तो उन्हें भोगना भी हमें ही पड़ेगा। लेकिन हम इस तथ्य को प्रायः भुला ही देते हैं। कि विचार व्यवहार और वाणी से प्रति कर्म आते जाते रहते हैं। और हमें अपनी योग्यता फल देकर सुखी-दुखी करते रहते हैं।

**कर्मों का अद्भुत समीकरण ।
बंधु ही बनते हैं बांध के कारण॥**

काया, कथन और कल्पनाओं से कर्म तो आते ही हैं। परन्तु इनके आने में हमारा T. P. इसलिए मजबूर हो जाता है क्योंकि ये प्रायः अपने या अपने वालों के कारण आते हैं कर्म सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण कारण है बंधु बने बँध के कारण ।

आसपास दिखने वाली दुनियाँ में यह स्पष्ट देखने में आता है कि बंधु ही बंध के कारण बनते हैं इसी से अपना T. P. भी प्रभावित होकर सुख दुःख का कारण बनता है ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो यह स्पष्ट करते हैं , कि पाप, अत्याचार और आतंकवाद इत्यादि प्रायः सभी बुराइयों के गर्त में धकेलने वाले और कोई नहीं बल्कि अपने ही होते हैं ।

जैसे—

- १) राम को वनवास भेजने वाली माँ (केकई) = रामायण
- २) मामा भांजे की कपट पूर्ण मैत्री = महाभारत
- ३) शुकमाल, ईशु को फाँसी पर लटकाना
- ४) पार्श्व-कमठ बंधु थे ।
- ५) कृष्ण-कंस बंधु थे ।
- ६) परिवार में बंधु ही बंध के कारण होते हैं ।

तो यह कहा जा सकता है कि आप कितना वस्तुओं का विस्तार कर ले, कितना ही पदार्थ विज्ञान का अध्ययन कर ले । कितना ही परिवार का विकास कर ले और कितना ही शरीर को हृष्ट पुष्ट कर ले । इनसे मात्र कर्म बंध कि प्रक्रिया ही पुष्ट होने वाली है और अंत में—

शरीर श्मशान का हो जाएगा ।

सम्पत्ति / धन-वैभव संसार का हो जाएगा॥

बेटा बहू का हो जाएगा ।

दामाद बिटिया को ले जाएगा॥

जिंदगी मौत हो जाएगी ।

अपनी करनी आपके पास रह जाएगी॥

अर्थात् आपके पास तो मात्र अच्छे बुरे कर्म ही शेष रह जाते हैं। और यही कर्म अपना T. P. बनकर मृत्यु के उपरांत भी अपने साथ चला जाता है। अतः अगर अपने T. P. को अच्छा बनाकर अपने साथ ले जाना चाहते हैं तो अच्छे कर्म करके अपने T. P. पर एक अच्छी तस्वीर अंकित करें और यह याद रखे कि-

“आपके पास T. P. के अलावा सब कुछ पराई अमानत है जो समझ गया उसकी दुनियाँ से हो गई जमानत है।”

अब इतना तो स्पष्ट हो चुका है कि हम जो हम कर्म करते हैं वे ही हमारा T. P. निर्धारित करते हैं इन कर्मों को हमें ही रखना पड़ता है हमें ही भोगना पड़ता है अर्थात् कर्म के हम ही कर्ता भोगता स्वामी सिद्ध हुए हैं। अन्य सभी बातें इष्ट मानना अपने T. P. को गलत निर्देशित करना है।

**“अच्छे कर्म खुद,
बुरे कर्म खुदा के।”**

प्रायः देखने में आता है हम अपना ऐसा T. P. निर्मित करते हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि अच्छे कर्म का जिम्मेदार तो हम खुद को ठहराते हैं और बुरे कार्यों की जिम्मेदारी सारे संसार पर थोप देते हैं या भगवान पर। बस यही T. P. हमारे लिए सबसे ज्यादा खतरा है क्योंकि यही T. P. ईश्वर कर्तव्य वाद का समर्थन करता है जिसमें देखने में आता है कि अपने आप करता अपनी करें और उनके भरता ईश्वर कर्तव्य वाद का समर्थन करता है। जिसमें प्रायः यह देखने में आता है कि-

**“अपनी करनी आप करे,
सर औरन के धर्ता।”**

ईश्वर कर्तव्यवाद में सारी सृष्टि की रचना का श्रेय ईश्वर को जाता है अर्थात् जो कुछ दृश्य जगत है वह सब भगवान ने बनाया है। इस भेद-भिन्नता के रचयिता भगवान हैं। अर्थात् किसी को सुखी, किसी को दुखी बनाना यह कार्य किसी और का या अपना नहीं बल्कि भगवान का है। बस सुखी-दुखी, कुरूप-गोरा-काला, सुन्दर, अमीर-गरीब, लम्बा -बोना, स्त्री-पुरुष, ज्ञानी-अज्ञानी (मूर्ख), मोटा-पतला, स्वस्थ- बीमार, पेड़-पौधे, नदी-नाले, धरती-

आकाश, नर- नारकी, देव दानव, शैतान-हैवान, पशु-परमेश्वर, कंकर-शंकर, शून्य-शिखर, अणु-विराट, बिंदु-सिंधु, तीतर-तीर्थकर आदि आदि भेद भिन्नताओं के रचयिता भगवान है। दया-हिंसा, प्रेम - नफरत, कमजोर-बलवान।

ये सब विचित्रताएँ आखिर अगर भगवान बनाते हैं तो क्या उनका जजक दोनों प्रकार से काम करता होगा या उन पर इस प्रकार का आस्तिक-नास्तिक का कहना क्यों ?

भगवान् को मानने या नहीं माने से आस्तिकता या नास्तिकता पर फर्क नहीं पड़ता है बल्कि भगवान के कर्तापने या अकर्तापने मानने या न मानने से फर्क पड़ता है। लेकिन अगर जब हम भगवान को संसार कर्ता मानते हैं तो ढेर सारे प्रश्न खड़े होते हैं। जो ईश्वर कर्तव्यवाद को संदेह के कटघरे में खड़ा करते हैं। जैसे-अगर संसार को भगवान ने बनाया है तो-

- १) उसने जीवों को सुखी-दुखी, गरीब-अमीर, सुंदर-कुरूप, गोरा-काला, ऊँचा-नीचा, कठोर-नरम इत्यादि तरह-तरह का क्यों बनाया।
- २) उसको ऐसा क्यों करना पड़ा कि वह संसार की रचना करें।
- ३) उसने संसार की संरचना कब और कैसे की।
- ४) अभी वह करता क्या है और रहता कहाँ है।
- ५) जब दुखी परेशान लोग पुकार करते हैं तो वह उनकी तुरंत मदद क्यों नहीं करता।
- ६) वह सब की क्यों नहीं सुनता कुछ गिने-चुने चुनिंदा लोगों की ही क्यों सुनता है।
- ७) मृत्यु होने पर किसी को स्वर्ग मोक्ष तथा किसी को नरक निगोद आदि स्थानों पर क्यों भेजता है।
- ८) क्या वह हम लोगों की भावनाओं से प्रतिकूल चलता है या हम उसके प्रतिकूल चलते हैं।

अगर भगवान को संसार का कर्ता धर्ता मानते हैं तो अनवस्था दोष आ जाएगा तथा उसके लिए कुछ गलत आरोपों में ये भी फंसना होगा लेकिन ऐसा देखने में कभी भी नहीं आता तो यह कहा जा सकता है कि “ईश्वर संसार को बनाता नहीं होगा बल्कि बताता होगा”

अतः कहा जाता है कि—

किन्हु न करयो न धरें को, षट्द्रव्यमयी न हरे को ।

सो लोक माहि बिन समता, दुख सहे जीवनि भ्रमता॥

अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि भगवान जब कुछ करता नहीं तो भगवान की आवश्यकता ही क्या है। तो इसका T. P. यही है कि अगर हमें अपने T. P. को सर्वोत्कृष्ट बनाना चाहते हैं तो उसका तरीका एक ही है कि भगवान को सर्व शक्तिमान स्वीकारा जाए और अगर कर्ता माना जाए तो उस समय हमारे T. P. में एक सिद्धांत बार-बार दबाव बनाता है जब एक घर की व्यवस्था करने में संसारी प्राणियों को इतना हर्ष विषाद करना पड़ता है अथवा होता है। तो पूरे संसार की व्यवस्था करने में भगवान को कितना करना होता होगा और भगवान इन हर्ष विवादों से दूर होते हैं। अगर हर्ष विषाद करने वाले हैं तो भगवान कैसे ? अगर भगवान है तो हर्ष विषाद करने वाले कैसे ?

हमारी दृष्टि में ऐसा लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति ने अपने T. P. में यह धारणा बना रखी है कि इस संसार में जो कुछ भी अच्छा होता है बस संसारी प्राणी स्वयं करता है तथा वह स्वयं बुरे कार्य का श्रेय किसको दे ? भगवान पर थोप देता है क्योंकि भगवान तो कुछ बोलते नहीं है अतः यह कहा जा सकता है कि—

जब परमात्मा स्वयं उद्देश्य है तो वह इस दृश्य संसार को बना कैसे सकता है ?

जैसे गर्भ के अंदर बच्चे का निर्माण किसने किया ?

खेत में बीज से वृक्ष की रचना कैसे हुई ?

मरने के उपरांत अन्य स्थान पर कैसे पहुँचे ?

हवा पानी भू गगन पत्थर आदि किसने बनाये ?

रंग प्राकृतिक भेद भिन्नता आदि कैसे बने ?

जन्म मृत्यु जवानी बुढ़ापा आदि कौन बनाता है ?

स्वर्ग नरक मोक्ष आदि कौन बनाता है....आदि ढेर सारे तर्कों का जब मनुष्य समाधान नहीं कर पाया तो सारी समस्याओं का समाधान उसने माना एक भगवान।

जैसे जब घर में कोई वृद्ध की मृत्यु हो जाती है तो छोटे-छोटे बच्चे पूछते हैं कि दादा जी को क्या हो गया है तो घर के बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि उनका मरण हो गया है।

बच्चा- ये मरण क्या होता है ?

पालक- अब दादाजी भगवान के घर चले गए हैं

बच्चा- अब क्या होगा ?

पालक- अब इन्हें जलाया जाएगा

बच्चा- अब दादा जी कब लौट कर आएंगे।

पालक- बेटा एक बार जो भगवान के घर जाता है वह लौटकर कभी नहीं आता है।

बच्चा- भगवान इतने खराब हैं हमारे दादा जी को छीन लिया है। हमें भगवान का पता बताओ हम उनसे मिलने जाएंगे और पूछेंगे कि ऐसा क्यों करते हैं ? बताओ भगवान कहाँ रहते हैं ?

पालक- ऊपर की तरफ इशारा करते हुए कहता है कि भगवान ऊपर रहते हैं।

इस प्रकार से एक बालक के छोटे से T. P. में यह बचपन में ही तस्वीर अंकित हो जाती है। कि हमारा कर्ता धर्ता है और वह अपने सारे कार्य भगवान भरोसे छोड़ देता है। विशेष रूप से अपने सारे बुरे कार्य भगवान के माथे मड़ देता है और अच्छे कार्यों का श्रेय खुद ले लेता है। और ऐसा करने में हमें शान्ति भी मिलती है यही दोहरा हिसाब किताब संसार का परिचायक है जैसे हम बुरे कार्य का श्रेय दूसरे को देते हैं तो कुछ समस्याओं का समाधान हो सकता है और पुरुषार्थी बनकर सम्यक पुरुषार्थ किया जा सकता है।

कर्तव्य

नदी किनारे एक साधु कुटिया बनाकर रहता था। वह बड़ा कर्मशील था। उसी भिक्षा व्रती पसंद नहीं थी। आजीविका के लिए वह गाँव के बच्चों को पढ़ाया करता था। एक दिन जब वह आत्मचिन्तन कर रहा था, तो उसे विचार आया कि जब भगवान सभी का कर्ता है, तो आदमी को कर्म क्यों करना चाहिए ? कर्म करने से उसके मन में कर्तापन का अहंकार आ जाता है और अहंकार

से उसका पतन होता है। यह विचार आते ही साधु ने अपने दोनों हाथों की मुट्टियाँ बंद कर लीं और प्रभु स्मरण में लीन हो गया। इसी प्रकार कुछ दिन बीत गए। ग्रामीणों में देखा कि साधु ने इतने दिनों से न कुछ खाया है, न पिया है, तो वे उसके लिए भोजन ले आये, किंतु साधु खाता कैसे, उसकी तो मुट्टियाँ बँधी थी। कुछ लोगों ने उसे अपने हाथों से खाना खिला दिया। कुछ देर बाद साधु को प्यास लगी। वह नदी के पास गया। मुट्टियाँ बंद होने की वजह से जानवरों की तरह पानी पीने के लिए वह झुका। लेकिन उसका संतुलन बिगड़ गया और वह पानी में जा गिरा। पानी के तेज बहाव में साधु बहने लगा, किंतु मुट्टियाँ उसने तब भी नहीं खोली। पत्थरों से टकरा-टकराकर वह लहलुहान हो गया! अंततः वह बेहोश हो गया। होश आने में घंटों लगे। आँख खोलने पर साधु ने पाया कि वह बहुत घायल व कमजोर अवस्था में पहुँच गया है। उसे घेर कर खड़ी भीड़ में से एक बुजुर्ग ने उसे समझाया— ईश्वर को नियंता मानकर कर्म से मुंह मोड़ना तुम्हारी सबसे बड़ी अज्ञानता है। यदि ईश्वर आदमी को अकर्मण्य रखना चाहता, तो उसे दो हाथ क्यों देता ? यह सुनकर साधु को अपनी भूल का अहसास हुआ। उसने तत्काल अपनी मुट्टियाँ खोली और पूर्व वत कर्म मय जीवन में लौट आया। इसलिए सदैव कर्मशील बनी रहे।

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि आप अपने दम पर T. P. को परिवर्तित कर मनचाही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। वैसे भी जिन शासन में या जैन धर्म में इन कर्मों के समूह को कर्मठ शरीर कहा गया है। जो आठ कर्मों का समूह है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है—

१) **ज्ञानावरणीय कर्म**—यह कर्म आत्मा के ज्ञान गुण पर पर्दा की तरह अवतरित होकर उसे प्रकट नहीं होने देता है। जब यह नष्ट होता है तब आत्मा में अनन्तज्ञान प्रकट हो जाता है जो सकल चराचर, लोकालोक, तीनकाल आदि को साक्षात् जानता है। यही ज्ञान केवलज्ञान कहलाता है जिसके स्वामी अरहंत भगवंत होते हैं।

२) **दर्शनावरणीय कर्म**—यह धर्म आत्मा के दर्शनगुण को द्वारपाल की तरह रोकता है इसके नष्ट होने पर आत्मा ज्ञान की तरह अनंतदर्शन वाली हो जाती है।

३) **वेदनीय कर्म**—यह कर्म शहद लिपटी तलवार की तरह आत्मा के अव्याबाधत्व / सुख / अक्षय / अनन्तसुख को घातता है। जैसे शहर लिपटी तलवार को चाटने से शहद का एक तरफ आनंद आता है तो दूसरी तरफ जीभ कटने का दुख होता है ऐसी भी यह कर्म सांसारिक सुख दुख देकर आत्मिक / अनन्त इंद्रिय सुख से वंचित रखता है। इस कर्म का अभाव होने पर सीधा मोक्ष प्राप्त होता है।

४) **मोहनीय कर्म**—यह कर्म आत्मा को गाफिल करता है जैसे बंदर को मधु पिला दिया जाए! यह कर्म अनन्त क्षायिकसम्यक्त्व रूप श्रद्धा गुण को बताता है। जैसे नशा पीकर हाल होता है वैसे ही आत्मा में यथार्थ रूप के ज्ञान का साक्षात्कार नहीं होने देता।

५) **आयु कर्म**—यह कर्म साँकल जैसा जीव को बाँधता है। बंधन दुख है अतः अवगाहनत्व का घात करता है।

६) **नाम कर्म**—यह कर्म चित्रकार जैसा तरह-तरह का रंग-बिरंगा शरीर को रूप देता है इसके कारण सूक्ष्मत्व गुण नष्ट होता है अतः मोक्ष में बाधक है।

७) **गोत्र कर्म**—जैसे कुंभकार छोटे बड़े बर्तन बनाता है वैसे ही यह कर्म तरह-तरह के आकार प्रकार जीवात्मा को प्रदान करता है यह कर्म अगुरुलघुत्व गुण का घातक है अतः मुक्ति में बाधक है।

८) **अंतराय कर्म**—यह मुनीम की भांति आप की शक्ति को पूर्ण रूप से प्रकट नहीं होने देता है। जब तक यह कर्म रहता है तब तक शक्ति, शक्तिरूप में रहती है उसका अभिव्यक्तिकरण नहीं हो पाता।

इस तरह ये कर्म संसार का चक्र निर्मित करते हैं इनका समापन ही मुक्ति है और यह तभी संभव है जब वाणी, व्यवहार एवं विचारों में एकता आ जाए। फिर क्रमशः वाणी व्यवहार की समाप्ति पर मात्र विचार शेष रहते हैं। यही T. P. कहलाता है जो संसार चक्र नष्ट करता है।

अब करना क्या है ?

और कुछ नहीं करना है। मात्र अगर संसार चक्र का समापन चाहते हैं। तो कर्म का समापन मूल है। और यह धारणा बनाये कि कर्म हम खत्म कर

सकते हैं तो कर सकते हैं। यही T. P. है जो सफलता देगा! हमें करना है अतः कर सकते हैं।

कर्मों के उदय में विवेक नहीं खोना।
हर किसी के सामने बैठकर नहीं रोना॥
धर्म को धैर्य को सम्बल बनाकर जियो मित्रों!
आखिर होगा वही जो होगा होना॥

संसार की विविधता ही कर्म की विविधता है। इसे देखकर विचलित नहीं होना क्योंकि हर व्यक्ति जब कर्म करने को स्वतंत्र है तो भोगने को भी। अतः अपना T. P. लक्ष्य के अनुरूप तैयार कर विचलित न हो।

कबीरा तेरी झोपड़ी, गलकटियाँ के पास।
जो करेगा सो भरेगा, तू क्यों होय उदास॥

अगर कर्मों की आंधी में आपका ज्वकक विचलित न हो अतः कर्म विविधता पर अवशेष न करके T. P. को मजबूती दे ताकि कर्मों की आंधियों का T. P. पर भी प्रभाव तक न पड़े। क्योंकि—

अपने अपने कर्म का, फल भोगे संसार।
इक खस टटियाँ सींचता, इक ले रहा बहार॥

ऐसे T. P. में मजबूती बनाकर अपना लक्ष्य निर्धारित किया हुआ हासिल करें। और अंततोगत्वा अपना ही T. P. सम्भालना संसार से मुक्ति का कारण है। और कुछ भी हो जाए पर अपना T. P. विकृत न होने दें! क्योंकि—

हर उपसर्ग सहन जो करते।
कह कर कर्म विचित्रता॥
तन तजते ते, किंतु न तजते।
अपनी ध्यान पवित्रता॥

कर्मों के खेल निराले हैं

कर्मों का विचित्रता के कारण ही हमारा T. P. अव्यवस्थित हो जाता है लेकिन कर्मों की विचित्रता के कारण क्या हमारे दैनिक कर्तव्य विचलित होते

हैं नहीं न। तो फिर T. P. क्यों करते हैं नहीं करना चाहिए न। क्योंकि कर्मों में खेल तो विचित्र होते ही हैं, पर हम उनकी विचित्रता में विचित्र क्यों बनें ?

भजन

कर्मों के खेल निराले मेरे भैया ।

कर्मों का लिखा कौन टाले मेरे भैया...॥

तो तैयार रहें अपने T. P. से कर्म नष्ट करने को ।

जैसे सबसे नीचे नमक का घड़ा रखा हो और उसके ऊपर अन्य मसालों के सात घड़े हो गए और रखे हो । अगर आपको नमक चाहिए, तो नीचे का मटका फोड़ दीजिए अन्य ऊपर के सात मटके अपने आप फूट जाएंगे । बस इसी तरह से अपने T. P. से कर्म का चक्र मिटा दीजिए जिससे सत्य रूप आत्मतत्त्व की प्राप्ति हो जाएगी । और कर्म चक्र के संसार से हास-परिहास समाप्त हो जाएगा ।

जब तुम आये जगत में,

जगत हँसे तू रोए ।

ऐसी करनी कर चलो

आधे हँसी न होय॥

यह कार्य मात्र T. P. से ही संभव है अतः आइए T. P. समर्थ बनाएँ । जिनका T. P. का स्तर कम रहता है वे ही लोग संसारचक्र या कर्मचक्र में उलझते हैं । यह T. P. का स्तर कम होना ही गर्त में जाना है । जिनका T. P. का स्तर अच्छा है वही लोग भरोसे लायक या विश्वासमंद के साथ-साथ आदर्श होते हैं ।

जब आप संसारी से मिलते हैं या कर्म चक्र ने उलझे व्यक्ति से मिलते हैं तो आपमें वही T. P. संचालित होने लगता है अतः इनसे बचें । फिर करें क्या? या तो अपना T. P. मजबूत करें या फिर जिनका मजबूत है उनके संपर्क/समागम में निरंतर रहें । यही समागम की निरंतरता आपके T. P. पर उनकी छाप छोड़ेगा जो उस रूप आपको बना देगा । क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है कि हम जो चीज पाने की इच्छा करते हैं, उसकी छाप हमें अपनी व्यक्ति परक या अवचेतन मन पर छोड़नी चाहिए ।

दरअसल जब तक हम अपना तप परिवर्तित नहीं करेंगे तब तक हमें वही मिलेगा जो हमेशा से मिलता आया है। क्योंकि हमने अपना तप हमेशा वाला ही हमने प्रयोग किया है। अतः भले ही आप भोजन पानी के बिना जीवन यापन कर ले लेकिन बिना T. P. के कभी जीने का विचार भी न करें जिस तरह व्यायाम आपको स्वस्थ बनाता है उससे कहीं ज्यादा स्वस्थ बनाता है हमें हमारा T. P.।



दार्शनिकों की दृष्टि में संसार का T. P. :

१.

काऊ घर पुत्र जायो, काऊ के वियोग आयो ।
 काऊ राग रंग काऊ रोआ रोड़ करी है॥
 जहाँ बहन उगल उछाह गीत गान देखे ।
 साँझ समे तहँ थान है परी है॥
 ऐसी जागरीति को विलोक कै न भीति होये ।
 हा हा नर मूढ़ तेरी कौन मति हरी है॥
 मानुष जनम पाय सोवत विहाय जाय ।
 खोवत करो राण की एक एक घरी है॥

यह प्रत्येक संसारी व्यक्ति का T. P. है कि उसी संसार में सब कुछ उपलब्ध है तो क्या आप स्वीकार करना चाहेंगे। क्योंकि संसार की रीति कुछ अटपटी सी होती है जिस समय में किसी के यहाँ पुत्र रतन की प्राप्ति हो रही है उसी समय में किसी दूसरे के यहाँ अथवा अपने ही यहाँ वियोग के क्षण उपस्थित हो जाते जाते हैं। जहाँ एक तरफ जनम उत्सव चलता रहता है, वही दूसरी तरफ मौत का मातम छा जाता है। एक तरफ पूर्णिमा का चाँद है तो दूसरी तरफ अमावस्या की काली रात, एक तरफ महल का महोत्सव तो दूसरी तरफ मरघट का शोक और एक तरफ शादी की शहनाई तो दूसरी तरफ वियोग की अंगड़ाई। ऐसी अवस्थाओं में अपना T. P. कैसे सँभालता होगा और जिसने सँभाल लिया वही संसार का विजेता बन जाता है।

जहाँ सुबह और शाम में इतना अंतर हो यह उसी प्रकार का अंतर है, जो सुबह, शाम की लाली में होता है। और यही अंतर हमारे T. P. में भी पलता है लेकिन इसी प्रतिकूल जग की रीति में हर व्यक्ति का T. P. उलझ जाता है। लेकिन इसी उलझन से सुलझने का रास्ता T. P. ही देता है और यही सबसे महत्वपूर्ण Gold/Diamond है और जिस समय यह उत्पन्न होता है वह समय Golden/Chance सुनहरा अवसर होता है और कला भी है।

“विषयी का बस विषय राग ही भव दुःख वह का कारण है।
 भविक जनों का धरम राग ही शिवकारण दुःख वारण है॥

संध्या में भी लाली होती प्रभात में भी लाली है।

एक सुलाती एक जगाती कितने अंतर वाली है॥”

यह अंतर अवस्था T. P. से जनम लेती है और यही अंतर संसार का कारण बनती है अर्थात्

“न पहले था न सब कुछ अब गलत है।

बस हमारे सोचने का ढंग गलत है॥”

इसी कारण से हमारे T. P. में संसार विकसित होता रहा है लेकिन संसार को ह्रास करने वाला T. P. भी संसार में ही मिलेगा क्योंकि जितने भी रास्ते हैं उन सब का उद्गम स्थान मात्र संसार ही है और यह निर्भर करता है हमारे T. P. पर।

२. पंडित दौलतराम जी की दृष्टि में संसार का T. P. :

चहुँगति दुःख जीव भरे हैं।

परिवर्तन पंच करे हैं।

सब विधि संसार असार,

यामे सुख नाही लगारा॥

(छहढाला)

अर्थात् संसार का स्वरूप चार गति रूप है। इन चारों गतियों में जितने भी जीव रहते हैं, वे सब दुःखी हैं और द्रव्य क्षेत्र काल भाव तथा भव रूप पंच परावर्तन में भ्रमित हैं। अतः कहा जा सकता है कि यह दुःख रूप संसार असार ही है अर्थात् इसमें कुछ भी सारभूत वस्तु नहीं हैं। इसलिए ऐसा T. P. तैयार करो कि जब संसार में सुख नहीं है तो इसमें आसक्त होना सबसे बड़ी नादानी है। ऐसा T. P. तैयार होते ही अपने आप संसार से विरक्ति आ जाएगी और आपका T. P. ही आपको मुक्ति के द्वार तक ले जाकर छोड़ देगा। अर्थात्—

“संसार को बदलने में

फायदा नहीं है।

अतः खुद का T. P. बदलने से

बड़ा कोई कायदा नहीं है।”

३. पंडित भूधरदास जी की दृष्टि में संसार का T. P. :

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
कहूं न सब संसार में, सब जग देख्यो छान॥

(बारहभावना)

अर्थात् संसार में जो T. P. है वह कितना भेद भिन्नता वाला है। की देखो कोई गरीब है तो वह धन प्राप्ति को प्रयासरत है और धन के अभाव में निरंतर दुखी रहता है। और अगर कोई अमीर है तो तृष्णा के कारण वह धनवान और धनी बनना चाहता है इसलिए हर कोई दुखी है। इसी कारण संसार में कहीं भी कण भर भी सुख नहीं है। अगर सारा संसार छत्री से छाना जाए तो भी दुखी ही मिलेगा सुख नहीं। यह T. P. संसार से उत्पन्न हुआ क्या T. P. संसार ने दिया या हमने स्वयं अपने T. P. को ऐसा आदेशित किया। ये असंतुष्टि/अभाव / तृष्णा ये सब मात्र T. P. ही है। अगर संसार से बचकर सुख प्राप्त करना होता है। इस प्रकार के T. P. से बचा संसार से अपने आप बच जाओगे।

कोई धन दुखी, कोई मन दुखी, कोई तन दुखी दिखे।
या संसार में कोई जन सुखी न दीखे॥

तृष्णा और अभाव दोनों अपना दुष्प्रभाव T. P. पर छोड़ते हैं। अतः T. P. को किटप्लाई जैसा बनाओ जिस पर खोलता हुआ पानी भी बेअसर रहता है। (जैसा आपने Add TV में देखा होगा)

अन्यथा

जो दस बीस पचास भये, शत लक्ष करोड़ की चाह जगेगी।
अरब खरबतों द्रव्य भयो तो, धरापति होने की आश लगेगी॥
उदय अस्त तक राज्य भयो पर, तृष्णा और ही और बढ़ेगी।
सुन्दर एक संतोष बिना नर, तेरी तो भूख कबहूँ न मिटेगी॥
ऐसा संतोष / संतुष्टि का आर्डर अगर हम T. P. दे तो ठीक अन्यथा संसार।

४. पंडित मंगतराय जी की दृष्टि में संसार का T. P. :

जनम मरण अरु जरा रोग से, सदा सुखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु कल भाव भव परिवर्तन सहना॥

राग उदय से दुःख सुर गति में, कहाँ सुखी रहना।
 भोगी पुण्य फल हो इक इंद्री क्या इसमें लाली॥
 कोतवाली दिनचर वही फिर , खुरपा अरु जाली।
 मानुष जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
 पंचम गति सुख मिले शुभा शुभ को मेटो लेखा॥

अर्थात् जनम मरण रूपी संसार में द्रव्य क्षेत्र, काल भाव और भव रूप पाँच परावर्तन में जीव छेदन-भेदन, वध-बंधन आदि के नरक गति में दुःख सहन करता है। आसक्ति की अधिकता में देव गति में दुखी रहता है वहाँ से निकल कर इक इंद्रिय में आकर दुखी हो जाता है तथा मनुष्य गति में अनेक संकटों का सामना करता है। कोल्हू के बैल की भांति अपना T. P. वही के वही रखकर दुःख ही दुःख भोगता रहता है। लेकिन अगर अपने T. P. को यह प्राणी ऐसा आदेश दे दे कि अब इस दुःख से हमें दुखी नहीं होना तो ऐसा आदेश पाकर अपना T. P. पंचम सिद्ध गति के लिए तैयार हो जाएगा। यह सुख ही सम्पत्ति मात्र T. P. पर ही निर्भर करती है। जिन लोगों ने ऐसा T. P. त्यागा है उन्हीं लोगों के पीछे ये सारा संसार भागा है। तो आइए अपने T. P. को सुख का आर्डर दें और सुखी बनें।

५. पूजन-देवशास्त्र गुरु की जयमाला की पंक्तियों में प्रदर्शित T. P. :

संसार महा दुःख सागर के, प्रभु! दुखमय सुख आभासों में।
 मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन कामिनी प्रासादों में॥

अर्थात् संसार रूपी महा समुद्र में सबसे ज्यादा अगर कोई वस्तु है तो वह दुःख का संसार। ऐसे दुःख के समुद्र में सुख तो कभी मिलता नहीं है बल्कि सुखाभास होता है और मिलता सुख है, संसार के कंचन (सोना) कामिनी (स्त्री) आदि सुखी लगने वाले पदार्थों में हमें सुख क्षण भर भी नहीं मिला जबकि हमने पल पल में पल्योपम और समय समय में सागरोपम आयु गुजार दी परन्तु आज तक हमारे T. P. में मात्र सुख भोगने की भावना तो बनी रही परन्तु सुख पाने के लिए अपना T. P. कभी भी तैयार नहीं किया। और जो सुख जैसा लगा रहा था उसी को पाने में लगे रहे, परिणाम यह हुआ की हमें सुख तो न मिला परन्तु दुःख के सागर में डूबता रहे मरते रहे अगर हम अपने T. P. में।

६. आचार्य जिनसेन महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

(आदिपुराण)

यह संसारी प्राणी अपने T. P. को अंधबनाकर शरीर, संसार और भोगों की असारता को नहीं देखता। अपवित्र (राज वीर्य) वस्तुओं के उपादानों से बना हुआ यह शरीर सबको दुःख देने वाला खोटी खोटी चेष्टाओं का घर है। नौ मल द्वारों से सदा मल मूत्र बहता रहता है और इसे छोड़कर मुक्त हो जाता है, संसार की भेद भिन्नताएँ जैसे सुख दुःख, अमीरी-गरीबी, इष्ट-अनिष्ट इत्यादि यह सब संसार के चक्र हैं। अपने T. P. में ऐसा दृष्टि कोण बनाकर जो भगवन् की वाणी का अनुशरण करता है और T. P. को शुद्ध बनाने का प्रयास करता है वहीं संसार से पार होता है। जब तक हम अपना T. P. इस प्रकार से मजबूत नहीं बनाते तब तक न तो हम संसार तब तक न तो हमें संसार की असारता का ज्ञान हो पाता है न ही T. P. की महानता का, और न ही मोक्ष की विशालता का ज्ञान हो पायेगा। लेकिन जैसे ही अपने T. P. से इन चीजों का ज्ञान होगा, चिन्तन होगा, मंथन होगा वैसे ही संसार शरीर और भोगों से हमारा T. P. विरक्त हो जाएगा और यही विरक्त आत्मा की मुक्ति होगी।

संसार के पदार्थ क्षणभंगुर हैं एवं धोखा देने वाले हैं अतः भाररूप हैं और भाररूप आभरणों से जैसे क्या प्रयोजन होता है अगर अंदर का T. P. सुन्दर नहीं है। और अगर T. P. सुंदर है तो आभरणों से क्या ? इसी T. P. से आंतरिक सुंदरता की प्राप्ति हेतु इन सांसारिक अलंकारों को धिक्कार है। इन चंचलता को धिक्कार है। बस इसी से आत्मा और अपना T. P. विरक्त हो जाता है। फिर सारा संसार T. P. में शून्य प्रतिभाषित हो जाता है और तप की उत्कृष्ट दशा है।

७. आचार्य कुंदकुंद भगवन की दृष्टि में संसार का T. P. :

(वारसानुवेकखा)

जो अपने T. P. को प्रभुओं के बताय हुए उपदेश के अनुसार व्यवस्थित नहीं करता। वह अनादिकाल से जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु, रोग और भय से व्याप्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव, रूप पंचपरावर्तन के संसार में संसरण करता है और ऐसा T. P. में ऐसा चिन्तन करते हैं कि संसार का T. P. अनुचित है।

और संसार के दुखों से आक्रांत T. P. छोड़ने योग्य है तो जैसा कि हम जानते हैं की जैसे हम विचार करते हैं वैसे हम बन जाते हैं।

८. आचार्य उमास्वामी / आचार्य पूज्यपाद / आचार्य अकलंकदेव / आचार्य विद्यानन्दि एवं आचार्य श्रुतसागर सूरी महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

जगतकाय स्वभावौ वा सम्बेग वैराग्यार्थ (त.सू.)

अर्थात् संसार का एवं शरीर का स्वभाव/स्वरूप का यथार्थ T. P. आपको संसार शरीर एवं भोगों से विरक्त करके आपके T. P. को परम शुद्ध बनाएगा। यद्यपि हमने T. P. को जाना समझा तो—

पर जाना अयथार्थ

अतः मिला संसार का स्वार्थ

और

छूट गया परमार्थ।

लेकिन इन्हीं का सही T. P. इन्हीं से मुक्ति देगा अन्यथा इन्हीं की बार बार प्राप्ति। मुक्ति के बीज T. P. में बोये जाते हैं जो फलते फूलते हैं। मुक्ति में/मोक्ष में अतः कहा जा सकता है कि—

T. P. ही संसार

T. P. ही मुक्ति द्वार

जैसे संसार की दशा क्या है ? जल बूँद सम जीवन है। इंद्र धनुष जैसी सांसारिक भोग सम्पदाएँ और शरीर भी अशुचि निःसार, दुःख का कारण, ऐसा T. P. ही संसार से बचाता है। अतः जाग्रत करो अपना T. P. अन्यथा भ्रमित हो जाएगा T. P.

९. स्वामी कुमार महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

(कार्तिकेयानुप्रेक्षा)

अनेक दुखों की उत्पत्ति के कारण पाँच प्रकार के संसार में जीव मिथ्यात्वरूपी (गलत T. P.)कमी / दोष के कारण अनादिकाल से आज तक

भ्रमण करता आ रहा है। यह मिथ्यात्व आखिर क्या है ? मात्र T. P. जो की उल्टा हो चुका है अगर इसको सुलटा (सीधा) कर दिया जाए तो यही मिथ्यात्व का T. P. जब सम्यक्त्व रूप परिवर्तित होगा तभी यही T. P. व्रत / संयम/ संकल्प/ चारित्र/ ध्यान / तप आदि को स्वीकारेगा तो यही T. P. मोह / (गलत / Negative T. P.) को त्याग देगा तथा शुद्ध होकर, ज्ञान रूप होकर, संसार से पार होने का रास्ता प्रशस्त करेगा।

अगर देखा जाए तो मिथ्यात्व और सम्यक्त्व और कुछ नहीं बल्कि मात्र T. P. ही है , अर्थात् हमारा T. P. ही मिथ्यात्व / गलत धारणा रूप संसार है और हमारा T. P. ही सम्यक्त्व रूप मुक्ति का द्वार है।

१०. आचार्य गुणभद्र महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

(आत्मानुशासन)

हे भ्रात। संसार का चित्र एवं चरित्र क्षणिक है। जो पर्याय धारण की जाती है वह नाश को प्राप्त हो जाती है, जैसे दिन में प्रभात फिर दोपहर फिर सूर्यास्त। काल रूप प्रचंड पवन से सारा संसार चंचल है, वृद्ध बालक सब तो जानते हैं फिर तुझे क्या भाई नहीं देता ? इस असार संसार में क्यों आशावान है ? क्यों भ्रमण करता है ? भ्रम को त्यागकर सत्यार्थ के T. P. में लीन क्यों नहीं होता। विनाशीक की कामना क्यों करते हो ? अगर व्याधियाँ से पीड़ित है तो इस संसार को प्रत्यक्ष आँखों से देखता हुआ भी अंधा क्या बना है, वैराग्य का T. P. क्यों नहीं बनता है। अब विषयों की आसक्ति को त्याग दे तथा आत्मकल्याण / सर्वकल्याण का T. P. तैयार कर।

घर शरण रहित है, वहाँ तुझे बचाने वाला कोई नहीं, 'बंधवो बन्धमूलं' बंधु-बंधु के कारण है, पत्नी आपदा स्वरूप है, पुत्र तरे शत्रु है, सारा परिवार दुःख का कारण है, ऐसा T. P. तैयार करे! अगर नहीं किया तो बार बार यही संसार / कर लिया तो संसार से पार।

संसार शरीर और भोग यतीनों कृतघ्न हैं। इनको कितना भी समर्पित हो जाओ, ये आपका साथ कभी नहीं देंगे। और हम इनका साथ सदा देते आएँ हैं पर अब अपने T. P. में इनका साथ नहीं देने वाला साहस पैदा करो तो पार होना होगा।

११. श्री वीरनन्दी महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

(चंद्रप्रभु चरितम्)

दौलत जो की अंधी मानी जाती है, वह तो पूरी वैश्या का स्वरूप है। जो क्षण भर में राजा को रंक, रंक को राजा बना देती है। ओह धिक्कार है, जिसके कारण हम अपना T. P. विकृत कर लेते हैं, तथा उसका नौकर यह संसारी प्राणी अपने आप को राजा मानता है तथा राजा मानकर बहुत प्रकार के अनर्थ कर डालता है। यह आत्म घात और कुछ नहीं अपने T. P. का संसारी बना डालता है। और अपना आत्मघात कर डालता है। यह आत्म घात और कुछ नहीं अपने T. P. की बुरी/ विकृत संरचना का परिणाम है जो हमने स्वयं अपने T. P. द्वारा बनायीं है। तथा हमें स्वयं ही अपने T. P. द्वारा तोड़नी है। यह T. P. ही सबसे बड़ा विष है, शत्रु है, उग है, ऐसा विचार ही T. P. को अमृत तुल्य है। जो संसार से बचाता है।

१२. श्री मद योगिन्दु देव की दृष्टि में संसार का T. P. : (परमात्म प्रकाश)

जो जीव अपने (परमात्म प्रकाश) में संसार शरीर एवं भोग से वीरमत्ता का भाव / विचार बनाता है। उसकी संसार की संसृति नष्ट हो जाती है। तथा उसे वैराग्य भाव उत्पन्न हो जाता है। तथा संसार से मुक्त हो जाता है। तथा अपने T. P. के कारण देह को देवालय में बदल लेता है। यह T. P. का निज को प्रेम ही पवित्र बनाता है।

प्रेम जब अनन्त हुआ
रोम रोम संत हुआ
देह तो बन गया देवालय
आत्मा तो भगवंत हुआ।

निःसंदेह T. P. भी देह में है पर देह से भिन्न है। देह को छूता तक नहीं परन्तु फिर भी देह दान में अहम् भूमिका निभाता है। अर्थात् हम देह दिलाकर दर-दर भटकता अवश्य है तथा देह का पूर्ण रूप से त्याग अर्थात् विदेह बनाता है।

१३. श्री परिमल्ल जी को दृष्टि में संसार का T. P. :

(श्री कोटिभट श्रीपाल)

जैसे बादल और बिजली चमककर क्षणभर में विलुप्त हो जाती है। वैसे ही इस संसार में रहने वाला धन वैभव भोग सब कुछ क्षणिक विनाशीक है। जब ऐसा T. P. प्रभावी होता है तो “भ-कुरुधं-वैभव-यौवन-गर्व” फिर अपना T. P. एक ऐसी तस्वीर अपने अंदर बनाता है जो वास्तविक T. P. को जन्म देता है अतः अपने T. P. से कहो कि—

तुम अच्छे तुम्हारी तस्वीर अच्छी।

तुम सुधर जाओ तो हमारी तकदीर अच्छी॥

इस T. P. के सुधार को ही दुनियाँ का परिग्रह त्यागा जाता है। क्योंकि यह बाह्य संयोग हमारा T. P. विकृत करता है, क्यों कि—

परिग्रह से विचार

विचार से संस्कार

संस्कार से आचार

आचार से विवेक नष्ट होता है। विवेक नष्ट होना ही T. P. का नष्ट / विकृत होना है। जो पतन की राह खोलता है अतः T. P. सम्भालो तो जो चाहो सो पालो।

१४. सकलकीर्ति महाराज की दृष्टि में संसार का T. P. :

(श्री महावीर पुराण)

यह संसार अनादि अनन्त है इसमें अभव्यों को तो सुख ही सुख दिखता है परन्तु ज्ञानी जीव इसे दुःख रूप ही मानते हैं। अभव्यों का T. P. सांसारिक भोग को ही सुख मानता है किन्तु ज्ञानी का T. P. दुर्गति के कारणभूत दुःख स्वरूप ही मानता है। दुःख से घिरे इस संसार में रत्नत्रय रूपी धन के बिना भटकते रहते हैं और भटकते रहेंगे। अतः अच्छे T. P. वाले लोगों को धर्म के आवरण स्वरूप अपना T. P. तैयार करना चाहिए।

इस धरा का, इस धरा पर

सब धरा रह जाएगा

यादगारी के लिए T. P. अमर हो जाएगा।

चाँद कुओं में फँस नहीं सकता ।
 इंसान सदा दुनियाँ में बस नहीं सकता ।
 बिना T. P. के इंसान कभी हँस नहीं सकता ।

T. P. By SMS

- अदृश्य विचार, वाणी या व्यवहार से ही जाने जाते हैं।
- T. P. का सर्वोत्तम समय आज है अतः यह आज से प्रकट की जा सकती है।
- अतीत में वचन एवं शरीर की शक्ति होने के बावजूद भी गर्त में इसलिए गिरे क्यों कि इनका T. P. कमजोर था।

विदेशी T. P.

एक तरफ अगर संसार दर्शन पर भारतीय विचारकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। तो दूसरी तरफ अन्य विदेशी विचारकों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं विचार वाणी और व्यवहार से ही प्रस्तुत होते हैं।

१. रान्द्र बर्न:

इस दुनियाँ की हर चीज विचार से प्रारम्भ होती है। बड़ी चीजें ज्यादा बड़ी हो जाती हैं क्यों कि उनके प्रकट होने के बाद ज्यादा लोग इनमें अपने विचारों का योगदान देते हैं। फिर वे विचार और भव इस घटना का अस्तित्व में रखते हैं। और ज्यादा बड़ा बनाते हैं।

क्या आप उस जबरदस्त शक्ति को समझ रहे हैं जो इस दुनियाँ में अपने पास है। आप जो चाहें उसमें विचार करें, तो वे प्रकट हो जाएगी। अगर आप नकारात्मकता के विचार करते हैं तो वही प्राप्त होता है संसार या कर्म। अगर सकारात्मकता के विचार करते हैं तो वही T. P. प्राप्त करवा देता है। कोई चीज सीमित नहीं न तो समाधान, न ही कुछ और।

यह सिर्फ इंसान के मस्तिष्क में ही सीमित है। जब हम अपने मस्तिष्क के द्वार असीमित रचनात्मक शक्ति की ओर खोलेंगे तो हम प्रचुरता उत्पन्न कर लेंगे ओर एक बिल्कुल नए संसार को देखेंगे तथा अनुभव करेंगे।

आप इस सुन्दर धरती पर हैं और आपको अपना जीवन गढ़ने की अद्भुत शक्ति का वरदान मिला है। आप अपने लिए जो बना सकते हैं। उसकी कोई सीमा नहीं है। क्योंकि सोचने की अपनी क्षमता की कोई सीमा नहीं है।

दुनियाँ बहुत भव्य है। जो हर व्यक्ति को हर वस्तु देने को तैयार है आपके पास चुनाव की क्षमता क्या है। चुनाव आपको करना है। क्यों की इसकी क्षमता मात्र आपके पास हैं। ब्रह्माण्ड में कोई भेदभाव नहीं हैं। वहाँ हर चीज प्रचुर एवं असीमित है।

तारीफ करने एवं आशीर्वाद देने से सारी सकारात्मकता समाप्त हो जाती है। अतः दुश्मनों की प्रशंसा करें एवं आशीर्वाद दे, आप अगर शाप देंगे तो वही वापिस आएगा। ओर प्रशंसा करेंगे, आशीष देंगे तो वही पाएंगे। तथा सारी नकारात्मकता समाप्त करके सर्वोच्च बनेंगे।

इन विचारों आप समझ गए होंगे की रन्द्र बर्न यह कहना चाहती है कि संसार या संसार से मुक्ति मात्र अपनी विचारशक्ति पर Depend करता है यही हम T. P. के नाम से प्रस्तुत करते हैं।

२. राबर्ट कालियर :

अगर आपके पास आज कुछ कमी है तो इसका कारण आपका अपनी शक्ति (थॉट्स पॉवर) T. P. यकीन नहीं था उसे आपने समझा ही नहीं। ब्रह्माण्ड तो सबको सब देता मगर भेदभाव नहीं।

३. लीसा निकोलस :

आप जो चाहते हैं वह खुशी, प्रेम, समृद्धि, आनंद..... आदि सब आपकी मुट्टी में आने को तैयार (आतुर) है। बस आपको मात्र आपकी इच्छा जगानी होगी, इरादा करना होगा।

४.

सीमा के किसी विचार को अपने मस्तिष्क में दाखिल होने की इजाजत न दे। और प्रचुरता में यकीन करना चाहिए। यही विचार आपका अनन्त अक्षय बनाते हैं।

५. माइकल बर्नार्ड बेकविथ :

जहाँ विचार होते हैं वही ऊर्जा प्रवाहित होने लगती हैं।

६. जैक कैनफील्ड :

आप जिन चीजों पर अपने विचार केंद्रित करते हैं, वही प्राप्त होता है। अनचाही तो अनचाही, मनचाही तो मनचाही। जिसे ऊर्जा दे वही बढ़ेगा संसार तो संसार बढ़ेगा, अभाव तो घटेगा।

७. ब्रायन ट्रेसी :

सभी धर्मों सभी दर्शनों, मेटाफिजिक्स, मनोविज्ञान और सफलता का महान सर यह है, आप जिसके बारे में ज्यादातर वक्त सोचते हैं वही बन जाते हैं। आपका बाहरी जगत अंततः आपके आंतरिक जगत का प्रतिबिम्ब बन जाता है। आपको वही प्रतिबिम्ब दिखता है, जिसके बारे में भी ज्यादातर वक्त सोचते हैं। आप जिसके बारे में भी सोचते हैं, वह लगातार आपकी जिंदगी में प्रकट होता है।

कई हजार सफल लोगों से पूछा गया कि वे ज्यादातर समय किस चीज के बारे में सोचते हैं। सफल लोगों का सबसे आम जबाब यह था कि वे ज्यादातर वक्त अपनी मनचाही चीज को पाने के बारे में सोचते हैं।

असफल और दुखी लोग ज्यादातर वक्त अनचाही चीजों के बारे में सोचते और बातें करते रहते हैं। वे अपनी समस्याओं और चिंताओं के बारे में बातचीत करते हैं तथा ज्यादातर समय दूसरों को दोष देते रहते हैं। लेकिन सफल लोग अपने विचारों और बातों को अपने सबसे इच्छित लक्ष्यों पर केंद्रित रखते हैं। वे ज्यादातर वक्त उस चीज के बारे में सोचते और बातें करते हैं। जिसे वे पाना चाहते हैं।

जब आपके विचार दर और ईर्ष्या कुढ़न, नफरत और विरोध आदि बुरे विचारों के स्थान पर अगर प्रेम, शान्ति, उत्साह, खुशी आदि के विचार आ जाते हैं। तो आपका जीवन बहुत ही बेहतर हो जाता है कई बार यह परिवर्तन चंद दिनों में काम दिखाई देने लगता है और कई बार यह परिवर्तन चंद मिनटों या सेकंडों में भी दिखाई देने लगता है।

खुद को सीमित करने वाले विश्वास वाले विचार करने में यह परिणाम होता है कि आप खुद को सस्ते में बैच देते हैं। खुद को कमतर आँकने से लक्ष्य की प्राप्ति कभी भी नहीं हो सकती अतः आप विचार करे की आप एक जादुई स्लेट है उस पर आप जो चाहे वो लिख सकते हैं। आप अतीत की घटना को मिटा सकते हैं और भविष्य की मनचाही तस्वीर बना सकते हैं अगर आप चाहें तो पूरी स्लेट साफ करके द्वारा उस पर फिर से लिख सकते हैं। जो लोग अपनी जिंदगी में ऊँचे काम करते हैं। वे कर्म केंद्रित होते हैं। अर्थात् उन्हें जो भी विचार आता है वे उस पर फौरन कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। अगर वे अच्छे विचारों के साथ बहाना साइंटिस्ट (बहाने बाजी) करते हैं तो कार्य न करने से असफलता पाते हैं। क्योंकि—

नर्क की राह अच्छे इरादों से भरी हुई है जहाँ अच्छे विचार नहीं होते वहाँ के लोग मर जाते हैं।

अगर आपने हवा में महल बना लिया है तो बहुत अच्छा है उसे नीचे लेकर नींव भी बना दें।

जीभ और कलम के माध्यम से विचारों को साकार किया जा सकता है। विचार ही जिंदगी कि कुंजी है जहाँ आपका विचार जाता है वही आपकी जिंदगी चली जाती है अगर अपना T. P. का स्तर बढ़ा लिया जाए तो सफलता शीघ्रता से मिलने लगती है विचार वास्तविक तत्त्व का निर्माण करते हैं।

सोच बदलो संसार बदलो

इंसान का दिमाग जो सोच सकता है उसे दिल सार्थक कर सकता है—
: नेपोलियन

८. चार्ल्स गारफील्ड :

इन्होंने शिखर पर प्रदर्शन करने वालों का अध्ययन किया जिसमें एक दिलचस्प खोज करके पाया कि उड़ान के बिंदु पर उनमें से हर एक ने नीले आसमान कि सोच (Blue Sky Thinking) का प्रयोग किया था अर्थात् जैसे आसमान कि कोई सीमा नहीं है इसी प्रकार आपकी कोई सीमा नहीं है बस यही एक विचार आपका आदर्श जीवन गढ़ सकते हैं।

□ □ □

उपसंहार

**T. P. का अंत में यह कहना है।
कि अगर संसार में रहना है।
तो T. P. को समझना है।
और
संसार को तजना है।**

संसार का विश्लेषण जो T. P. से गया है उससे यह समझा जा सका होगा
कि-

**“विचार ही संसार है।
विचार ही मुक्ति का द्वार है॥”**

तो फिर विचार परम्परा में संसार का निर्माण क्यों करें, निर्वाह की परम्परा में शामिल होकर निर्माण की धरा में शामिल हों। इसके लिए संसार से भागना नहीं। बल्कि-

**“न घर भूलों, न जग छोड़ो,
कर्म करो जिंदगानी में।
संसार में ऐसे रहो जैसे,
कमल रहता है पानी में॥”**

कचरे को प्राप्त करने के लिए सागर में डुबकी लगाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। जबकि, डुबकी लगाये बिना सागर के तल में छिपे मोती दिखाई तक नहीं देते तो उन्हें प्राप्त करने का तो सवाल ही कहाँ पैदा होता है? जीवन में और जगत में घटित होने वाले भाँति-भाँति के प्रसंगों की गहराई में गए बिना उन प्रसंगों में छिपी महानता, अधमता, तुच्छता।

अतः कहा जा सकता है कि संसार में रहे बिना संयम से मुक्ति संभव नहीं पर अगर मुक्ति कि माँग है तो संसार से ही उसका रास्ता जाता है। जिसकी शुरूआत T. P. से होती है।

□ □ □